हमारी पोथी

भाग – 6

प्रस्तुति

पाठ्य पुस्तक – लेखन एवं सम्पादन – समिति

लेखन एवं सम्पादन

सनाउल्लाह सुमन

मुहम्मद इलियास हुसैन

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
अल्लाह के नाम से जो बेइंतिहा मेहरबान और रहम फ़रमानेवाला है।

दो शब्द

मर्कज़ी दर्सगाह रामपुर के भूतपूर्व नाज़िम (व्यवस्थापक) जनाब अफ़ज़ल हुसैन साहब ने लगभग ाधी शताब्दी पहले भारतीय मुसलमानों की नई पीढ़ी की आरम्भिक कक्षाओं के लिए पाठ्य पुस्तकों एक अत्यन्त उपयोगी शृंखला तैयार की थी जिसमें बच्चों के मनोविज्ञान, मानसिक स्तर, उम्र, रुचि र सामाजिक अपेक्षाओं का पूरा-पूरा ख़याल रखा गया था। अल्लाह की मेहरबानी से ये पुस्तकें पूरे देश लोकप्रिय हुईं और इन पुस्तकों ने छात्र-छात्राओं के मन-मस्तिष्क और विचारों को इस्लामी रंग में रंगने अत्यन्त उल्लेखनीय कार्य किया। वर्तमान शृंखला में उनके द्वारा निर्दिष्ट पथ पर चलने का पूरा-पूरा ास किया गया है। अल्लाह तआला मरहूम अफ़ज़ल हुसैन साहब की सेवा को स्वीकार करके उनपर नी अपार कृपा-वर्षा करे। आमीन!

पाठ्य पुस्तकों का पुनरीक्षण, संशोधन और नवीनीकरण एक लाभदायक, अनिवार्य और सतत् ्या है। हमने भी अपनी सभी पाठ्य पुस्तकों को और अधिक उपयोगी और समयानुकूल बनाने के लिए नए सिरे से तैयार करने की योजना बनाई है। 'हमारी पोथी, भाग-6' इसी सिलसिले की एक कड़ी

भाषा बच्चों के व्यक्तित्व के विकास का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। भाषा एवं साहित्य की पाठ्य ाक की तैयारी के दौरान हमने इस बात का विशेष ध्यान रखा है कि भाषा-बोध के लिए ऐसी पाठ्य ाग्री उपलब्ध कराई जाए जिससे बच्चों में भाषा की सभी आधारभूत कुशलताएँ – सुनने, बोलने, पढ़ने, ने, चिन्तन-मनन और अध्ययन की सभी क्षमताएँ – विकसित हो जाएँ तथा उनके अन्दर अतिरिक्त ययन के प्रति रुचि का विकास हो। हमने प्रयास किया है कि जीवन के अनुकूल पाठ्य सामग्री प्रस्तुत जाए, जिससे छात्र-छात्राओं के अन्दर वांछित जीवन-मूल्यों और मानवीय सद्गुणों के बीज अंकुरित, ावित, पुष्पित और फलित हों और उनका सर्वांगीण विकास हो।

पाठ्य पुस्तकों की तैयारी के समय हमने विशेष रूप से बच्चों की उम्र, अभिरुचि, मनोविज्ञान, की अपेक्षा, आवश्यकता और बौद्धिक क्षमता का पूरा-पूरा ख़याल रखा है।

अपनी पाठ्य पुस्तकों में हमने ऐसी सामग्री प्रस्तुत करने की कोशिश की है कि इन्हें पढ़कर बच्चे ने परिवेश और वातावरण के प्रति जागरूक और सचेत हों और उनके अन्दर इससे सम्बन्धित ज्ञान

प्राप्त करने के प्रति अभिरुचि उत्पन्न हो तथा उनके कार्य-कलापों में यथोचित, सकारात्मक उ
जीवनोपयोगी परिवर्तन हो। साथ ही, ये चीज़ें उन्हें जीवन के विविध क्षेत्रों को जानने-समझने में सहाय
सिद्ध हों और उनके विषय में और अधिक ज्ञान प्राप्त करने के प्रति अभिरुचि और उत्सुकता उनमें उत्प
हो।

प्रत्येक पाठ के अन्त में पर्याप्त अभ्यास दिए गए हैं, जो छात्र-छात्राओं में न केवल भाषा-बो
लेखन, पाठ्य सामग्री को समझने और याद रखने में सहायक होंगे, बल्कि उनमें चिन्तन-मनन की क्षम
और व्यक्तिगत रूप से अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न करेंगे। ये अभ्यास बच्चों के ज्ञान में उत्तरोत्तर वृ
और विकास के साधन तो सिद्ध होंगे ही, उनकी मानसिक और शैक्षणिक क्षमता के विकास में भी सहाय
होंगे।

जीवन के आरम्भिक कुछ महीनों को छोड़कर मनुष्य को अपनी जीवन-यात्रा में एक-दूसरे
वार्त्तालाप, सम्पर्क आदि के लिए शब्दों की पूँजी की क़दम-क़दम पर आवश्यकता पड़ती है। जिसके प
शब्दों का जितना बड़ा भण्डार होता है और जो उन शब्दों का जितनी अधिक कुशलता के साथ उपय
कर पाता है, वह भाषा के क्षेत्र में उतनी ही अधिक सफलता प्राप्त करता है। अतः शब्दों की इस उपयोगि
को ध्यान में रखकर हमने इस पुस्तक के अन्त में शब्दों का ख़ज़ाना — शब्दकोश — प्रस्तुत किया

हम अपने उन सभी मित्रों और महानुभावों के आभारी हैं, जिन्होंने पुस्तक की तैयारी के क्रम
विभिन्न प्रकार से सहयोग दिया है। हम उन सज्जनों के भी आभारी हैं, जिनकी कविताएँ, कहानियाँ, लेख
ज्यों-की-त्यों या आंशिक परिवर्तन के साथ इस पुस्तक में सम्मिलित हैं। अल्लाह तआला की कृपा-छ
सदैव उन महानुभावों को सुख-शान्ति प्रदान करती रहे।

हमने इस पुस्तक को यथासम्भव अधिक-से-अधिक उपयोगी और लाभदायक बनाकर सुन्दर ः
आकर्षक रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हम अपने प्रयास में किस हद तक सफल हो सके
इसका वास्तविक मूल्यांकन तो शिक्षकगण, अभिभावक और पढ़ने-पढ़ाने में रुचि रखनेवाले ज्ञानीजनों
बहुमूल्य सुझावों, विचारों और टिप्पणियों से ही हो सकेगा । हम आपके सुझावों, विचारों और टिप्पणि
का सहर्ष स्वागत करेंगे और प्रस्तुत पुस्तक के आगामी संस्करण में तदनुसार सुधार करके इसे और अधि
उपयोगी तथा समयानुकूल बनाने का प्रयास करेंगे।

10-10-2008
दिल्ली

मुहम्मद अशफ़ाक़ अह
(निरीक्षक)

विषय-सूची

ईश्वर

है पवित्र क़ुरआन में, ईश्वर का सन्देश।
मैं हूँ स्वामी जगत् का, मेरे ही सब देश।।

जिसने यह निर्मित किया, जगत् विचित्र ललाम ।
केवल वही उपास्य है, उसको करें प्रणाम।।

जिसने हमको है किया, जगती में उत्पन्न ।
दे सकता केवल वही, हमें वस्त्र-धन-अन्न।।

हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश, सम्मान ।
सब कुछ उसके हाथ में, निश्चयपूर्वक मान।।

है जिस प्रभु के हाथ में, अन्तिम दिन का न्याय ।
जीवन-यापन का वही, देता है सदुपाय।।

— वृहस्पति

शब्दार्थ और टिप्पणी

स्वामी	=	मालिक
निर्मित	=	बनाया हुआ
ललाम	=	सुन्दर
यश	=	नेकनामी, ख्याति
जीवन-यापन	=	ज़िन्दगी गुज़ारना
जगत्/जगती	=	दुनिया, संसार
विचित्र	=	अद्‌भुत, अनोखा
उपास्य	=	माबूद, पूज्य, उपासना के यो
अपयश	=	बदनामी, कुख्याति
सदुपाय	=	अच्छा उपाय, सीधा रास्ता

अभ्यास

विषय-बोध

(क) मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. पवित्र क़ुरआन में किसका सन्देश है?
2. जगत् का स्वामी कौन है?
3. संसार को 'विचित्र ललाम' क्यों कहा गया है?
4. 'अन्तिम दिन का न्याय' का क्या मतलब है?

(ख) लिखित

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीज़िए :

1. जगत् का निर्माण किसने किया?
2. केवल ईश्वर ही उपास्य क्यों है?
3. ईश्वर ने मनुष्य पर क्या-क्या उपकार किए हैं?
4. इस कविता में ईश्वर के किन गुणों का वर्णन किया गया है?

5. ईश्वर ही जीवन-यापन का सदुपाय बताता है। कैसे?

) रिक्त स्थानों की पूर्त्ति कीजिए :

1. जिसने हमको है किया, जगती में उत्पन्न।
   दे सकता केवल वही, हमें ....।।
2. हानि-लाभ, जीवन-मरण,.........................।
   सब कुछ उसके हाथ में, निश्चयपूर्वक मान।।

छ और काम

1. ईश्वर के गुणगान से सम्बन्धित कुछ और कविताएँ एकत्र कीजिए और उन्हें कंठाग्र कीजिए।

पाठ-2

शिष्टाचार

शिष्टाचार मानवता का आभूषण है। यह शब्द दो शब्दों के मेल से बना है शिष्ट + आचार = शिष्टाचार अर्थात् अच्छा आचरण। अच्छा आचरण वह है जिर व्यक्ति और समाज दोनों का हित होता है।

शिष्टाचार के महान प्रवर्त्तक हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने कहा, "जिसका आच अच्छा नहीं उसका दीन में कुछ हिस्सा नहीं।" और "क़ियामत के दिन न्याय-तुला उत्तम आचरण सारे सत्कर्मों से भारी होगा।"

जीवन में शिष्टाचार का बहुत महत्त्व है। प्रत्येक व्यक्ति के साथ प्रेमपूर्ण व्यव करना और उसे मान-सम्मान देना और किसी को अकारण कष्ट न पहुँचाना शिष्टाच है। शिष्ट व्यवहार, मधुर भाषण, विनम्रता, शालीनता, अनुशासन, अतिथि-सत्कार, ब का मान-सम्मान और छोटों से प्रेम इत्यादि शिष्टाचार के आवश्यक अंग हैं।

किसी सभा में शोर मचाना, किसी वक्ता को अपनी बात कहने का अवसर देना, बैठे हुए व्यक्ति को उठाकर बैठना, ज़हाँ सब लोग बैठे हों वहाँ लेट जाना, फैलाकर बैठना, विकलांग या निर्बल लोगों का मज़ाक़ उड़ाना या उन्हें छेड़ना, निध और असहायों को झिड़कना या हेय समझना, बड़ों के सम्मुख पान चबाकर या खुले ब आना, ढीले-ढाले या सुस्त खड़े होना, दो आदमियों की बात काटकर बीच में बोल प

पूछे गए प्रश्नों का उत्तर न देना, अपनी पसन्द के विरुद्ध बात आने पर ग़ुस्सा या हठध करना, किसी के घर या दफ़्तर जाने पर अनुमति के बिना वहाँ की चीज़ों को छूना, टना-पलटना या इधर-उधर रखना शिष्टाचार के विरुद्ध है। शिष्ट व्यक्ति इन सब तों से बचता है।

शिष्ट व्यक्ति अपने बोल एवं व्यवहार से लोगों का मन मोह लेता है और उनका र पात्र बन जाता है। किसी व्यक्ति की विद्या-बुद्धि और योग्यता का अनुमान उसकी तचीत से लग जाता है। जीवन की सफलता और असफलता बहुत हद तक बातचीत ढंग पर निर्भर करती है। लोग मृदुभाषी व्यक्ति से प्रेम और कटुभाषी से घृणा करने ते हैं। अतः शिष्ट व्यक्ति बातचीत करते समय सावधानी बरतता है और ष्टाचार-सम्बन्धी छोटी-छोटी बातों पर भी ध्यान देता है ।

शिष्ट व्यक्ति की पहचान क्या है? मानवता उपकारक हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने सम्बन्ध में कहा है–

> "तुममें सबसे अच्छा व्यक्ति वह है, जिसका आचरण सबसे अच्छा है।"

आप (सल्ल०) ने यह भी कहा –

> "मैं तुम्हारे बीच उत्तम आचरण की परिपूर्णता के लिए भेजा गया हूँ।"

शिष्ट व्यक्ति की सबसे बड़ी पहचान उसका आचार-व्यवहार है जो वह अपने -बड़ों, साथी-संगियों, नौकरों, अधीनस्थों, परिजनों, सगे-सम्बन्धियों, पड़ोसियों, दीन-दुखियों ादि के साथ करता है। विनम्रता और अनुशासन शिष्टाचार का सबसे महत्त्वपूर्ण गुण शिष्ट व्यक्ति की वाणी और उसके व्यवहार में विनम्रता, अनुशासन तथा शालीनता और मिसरी की भाँति घुली-मिली होती है। वह अपने-पराए, छोटे-बड़े, धनी-निर्धन,

सबके साथ विनम्रता और शिष्टाचार का रवैया अपनाता है। उसकी वाणी में मिठ
होती है, न कि कटुता और कर्कशता। इससे उसके मान-सम्मान में वृद्धि होती है।

शिष्ट व्यक्ति बातचीत करते समय शब्दों के समुचित प्रयोग पर भी ध्यान देता
बातचीत करते समय वह सिर्फ़ अपनी बातों की झड़ी नहीं लगाता, बल्कि दूसरों को
बोलने का अवसर देता है। वह किसी की निजी बातों में हस्तक्षेप नहीं करता। कि
प्रश्न का उत्तर देते समय केवल 'हाँ' या 'नहीं' नहीं कहता है, बल्कि 'जी हाँ' या '
नहीं' कहता है। यदि किसी व्यक्ति का नाम पूछना हो तो वह 'आपका शुभ नाम' अ
वाक्यांशों का प्रयोग करता है और किसी का नाम लिखते समय यथोचित सम्मान-सूच
शब्द अवश्य लिखता है। यदि कोई व्यक्ति कुछ लिख रहा हो तो वह झाँक-झाँककर
पढ़ने की चेष्टा नहीं करता है।

किसी के घर या दफ़्तर जाने पर शिष्ट व्यक्ति अनुमति लेकर अन्दर जाता
वहाँ उपस्थित लोगों को सलाम करता है और फिर लौटते समय भी सलाम अवश्य क
है। वह सलाम में पहल करता है।

शिष्टाचार एक ऐसा सम्मोहक और अनोखा व्यवहार है जिससे मनुष्य के व्यक्ति
में अनुपम सुन्दरता और शालीनता उत्पन्न हो जाती है। शिष्ट व्यक्ति समाज के ि
उपयोगी बन जाता है। शिष्टाचार सोने में सुगन्ध पैदा कर देता है।

जो व्यक्ति शिष्ट होता है, वह अनुकूल-प्रतिकूल प्रत्येक परिस्थिति में शिष्टा
की रस्सी को मज़बूती से थामे रहता है। उसके यहाँ जब कोई आता है तो
प्रसन्नतापूर्वक उसका आदर-सत्कार करता है।

किसी के साथ खाना खाते समय शिष्ट व्यक्ति विशेष सावधानी बरतता है।
भोजन करने में अधीरता नहीं दिखाता है। वह ऐसा कभी नहीं करता कि खाने

च्छी-अच्छी चीज़ें स्वयं चट कर जाए और उसके साथवाले उन चीज़ों को खाने से वंचित जाएँ।

यदि कोई कुछ कष्ट झेलकर या असुविधा उठाकर उसके लिए कोई काम कर दे यात्रा करते समय बस अथवा रेलगाड़ी में कोई उसे बैठने के लिए अपनी जगह दे दे, उसे 'शुक्रिया' या 'धन्यवाद' अवश्य कहता है। वह अपने सहयात्रियों का ख़याल ता है। बीमार, बूढ़े, बच्चे और स्त्रियों का तो विशेष ध्यान रखता है।

एक शिष्ट व्यक्ति इस बात को ख़ूब अच्छी तरह जानता है कि शिष्टाचार नव-जीवन का एक आवश्यक अंग है। यह एक ऐसा नैतिक कर्त्तव्य है जो व्यक्ति और ाज के सम्बन्ध को प्रगाढ़, प्रेममय और सद्‌भावपूर्ण बनाता है । शिष्ट व्यक्ति अपने चों को शिष्टाचार के नियमों से अवगत कराता है, क्योंकि शिष्ट बच्चे ही किसी समाज भविष्य होते हैं और वे ही आगे चलकर सभ्य और आदर्श नागरिक बनते हैं।

इसी लिए अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा है, " किसी पिता ने नी सन्तान को शिष्टाचार से उत्तम कोई उपहार नहीं दिया।"

शिष्टाचार के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए एक शायर ने भी क्या ख़ूब कहा है :

अदब ही से इनसान, इनसान है
अदब जो न सीखे वो हैवान है।

ब्दार्थ और टिप्पणी

आभूषण	=	ज़ेवर, गहना	शिष्ट	=	सज्जन, भला
शालीनता	=	नम्रता, सदाचार	विकलांग	=	अपाहिज, अपंग
सम्मुख	=	सामने	मृदुभाषी	=	मीठे बोल बोलनेवाला

अधीनस्थ	=	मातहत, आश्रित, जो किसी के अधीन हो	अधीरता	=	बेसब्री, उतावलाप
हस्तक्षेप	=	दख़लअन्दाज़ी	कर्कशता	=	कठोरता
सम्मोहक	=	मोहित करनेवाला	यथोचित	=	मुनासिब, ठीक, जै उचित हो वैसा

अभ्यास

विषय-बोध

(क) मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. शिष्टाचार का क्या अर्थ है?
2. शिष्टाचार का सबसे महत्त्वपूर्ण गुण क्या है?
3. किस चीज़ से मनुष्य के व्यक्तित्व में सुन्दरता और शालीनता उत्पन्न हो सकती है?
4. बातचीत करते समय किन चीज़ों का ख़याल रखना चाहिए?
5. सभ्य और आदर्श नागरिक कैसे बना जा सकता है?

(ख) लिखित

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. शिष्टाचार के आवश्यक अंग कौन-कौन-से हैं?
2. कौन-कौन-सी बातें शिष्टाचार के विरुद्ध हैं?
3. शिष्ट व्यक्ति लोगों का प्रिय पात्र क्यों बन जाता है?
4. शिष्ट व्यक्ति की पहचान क्या है?
5. सोने में सुगंध पैदा होने का क्या अर्थ है?

6. एक साथ खाना खाते समय किन बातों का ख़याल रखना चाहिए?

7. शिष्टाचार व्यक्ति और समाज के सम्बन्ध को कैसा बनाता है?

) निम्नलिखित शब्द-समूहों में 'शिष्टाचार' और 'अशिष्ट व्यवहार' से सम्बन्धित बातें मिली-जुली हैं। इन्हें छाँटकर 'शिष्टाचार' और 'अशिष्ट व्यवहार' के दो कॉलमों में लिखिए :

माता-पिता का आदर करना, शिक्षक की अवज्ञा करना,
कक्षा में शोर मचाना, दीन-दुखियों पर दया करना,
फलदार पेड़ पर पत्थर मारना, किसी का मुँह चिढ़ाना,
रास्ते पर एक किनारे से चलना, किसी की बात पसन्द न आए तो उसे भला-बुरा कहना,
नौकरों या बच्चों को बात-बात पर डाँटना, हठ करना, अतिथि का आदर-सत्कार करना,
मीठे बोल बोलना, बात-बात में गाली देना।

...ा-बोध

आपने प्रस्तुत पाठ में पढ़ा कि **शिष्टाचार** शब्द दो शब्दों के मेल से बना है – **शिष्ट + आचार**। दो अक्षरों के मिलने से उनमें जो विकार उत्पन्न होता है उसे **संधि** कहते हैं और संधिवाले शब्दों को अलग-अलग करने की क्रिया को **संधि-विच्छेद** कहते हैं।

जैसे : बालावस्था = बाल + अवस्था (अ + अ = आ),
परमादर = परम + आदर (अ + आ = आ),
शिक्षालय = शिक्षा + आलय (आ + आ = आ)।

1. उपर्युक्त उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए :

वाक्यांश	=	यथार्थ	=
विद्यालय	=	नियमानुसार	=
शरणागत	=	परमार्थ	=

2. अपनी पाठ्य पुस्तक से संधिवाले दस शब्दों को एकत्र करके उनका संधि-विच करके अपने शिक्षक को दिखाइए।

कुछ और काम

1. **शिष्टाचार** विषय पर कक्षा में एक भाषण दीजिए। (भाषण की तैयारी में अपने शिक्षव से मदद लीजिए।)
2. शिष्टाचार-सम्बन्धी कुछ हदीसें और क़ुरआन मजीद की कुछ आयतें अपने शिक्षक की मदद से एकत्र कीजिए और सुन्दर अक्षरों में लिखकर अपने अध्ययन-कक्ष में लगाइए

अल-बैरूनी

(973 ई॰–1048 ई॰)

विश्व प्रसिद्ध विद्वान और महान वैज्ञानिक अल-बैरूनी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। खगोलशास्त्र, गणित, रसायनशास्त्र, जीवविज्ञान, चिकित्साशास्त्र, भूगोल और दर्शनशास्त्र के क्षेत्रों में उनका बहुत बड़ा योगदान है। उन्होंने गहन अध्ययन और कठोर परिश्रम के बल पर प्रायः इन सभी विषयों को विकास के उच्च शिखर पर पहुँचाने का सफल प्रयास किया। उनके योगदान के रण दुनिया आज भी उन्हें याद करती है।

अल-बैरूनी का जन्म ईरान के ख़्वारिज़्म शहर के निकट 'कास' नामक गाँव में सामान्य परिवार में 4 दिसम्बर, 973 ई॰ में हुआ था। अल-बैरूनी का पूरा नाम हानुल-हक़ अबुल-रैहान मुहम्मद बिन-अहमद अल-बैरूनी' था । ख़्वारिज़्म उस समय -विज्ञान का महत्त्वपूर्ण केन्द्र था। उसकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैली हुई थी। वहाँ क देशों से छात्र ज्ञान प्राप्त करने आते थे।

ख़्वारिज़्म के निवासी बाहर से आनेवाले लोगों को 'अल-बैरूनी' (बाहर का वाला) कहते थे। 'अबू रैहान' भी चूँकि ज्ञान प्राप्त करने के लिए बाहर से वहाँ आए इसलिए उन्हें भी 'अल-बैरूनी' के नाम से पुकारा गया। लेकिन उन्होंने अनेक

वैज्ञानिक विषयों में दक्षता प्राप्त की तथा इतना अधिक अनुसंधान-कार्य किए कि उन
यश दूर-दूर तक फैल गया। अतः इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गय
अब जब भी 'अल-बैरूनी' का नाम आता है, तो उससे 'अबू रैहान' ही का व्यक्ति
अभीष्ट होता है।

अल-बैरूनी को बचपन से ही ज्ञान प्राप्त करने का बहुत शौक़ था। वैज्ञानि
विषयों पर नई-नई किताबें पढ़ने, लिखने, नवीनतम जानकारी हासिल करने और उन
शोध करने में ही उनका अधिकतर समय बीतता था। वे हमेशा वैज्ञानिक तथ्यों की ख
में लगे रहते थे । वे कहा करते थे, "मनुष्य का मान-सम्मान उसके व्यक्तिगत गुणों उ
कार्यों में निहित होता है, उच्च कुल में जन्म लेने से कोई उच्च और बड़ा नहीं हो जाता

अल-बैरूनी को अनेक विद्या-प्रेमी बादशाहों, शासकों और लोगों का संरक्षण त
सहयोग प्राप्त था। वे ख़्वारिज़्म के बादशाह मुहम्मद बिन अहमद के चचेरे भाई मं
इब्ने-अली बिन-इराक़ के शिष्य थे। उनके गुरु मंसूर बहुत बड़े विद्वान थे। मंसूर
गणित और विज्ञान से अत्यन्त गहरा लगाव था। उन्होंने ही पहली बार त्रिकोणमिति
परिकल्पना प्रस्तुत की थी।

गुरु और शिष्य ने एक साथ मिलकर ग़णित और विज्ञान के विविध विषयों
एक दर्जन से अधिक पुस्तकें लिखीं, जिनमें से कई पुस्तकें विश्व के अनेक पुस्तकाल
में आज भी मौजूद हैं।

कालान्तर में ख़्वारिज़्म राजनीतिक उथल-पुथल का शिकार हो गया और उस
महमूद ग़ज़नवी का अधिकार हो गया। महमूद ग़ज़नवी ने भी अल-बैरूनी को भर
सम्मान दिया। वे महमूद के साथ ग़ज़नी चले गए। ग़ज़नी में महमूद ने उनके लिए
वेधशाला बनवा दिया, जहाँ से वे आकाशीय पिण्डों और नक्षत्रों का निरीक्षण किया क
थे।

महमूद ग़ज़नवी के साथ अल-बैरूनी भी भारत आए। उन्होंने यहाँ के विद्वानों से कृत भाषा और भारतीय धर्म, दर्शन, ज्योतिष इत्यादि का ज्ञान प्राप्त किया। इसी तरह रतीय विद्वानों ने भी उनसे बहुत कुछ सीखा। भारतीय विद्वान उनसे इतने प्रभावित : कि उन्होंने उन्हें 'ज्ञान-सागर' की उपाधि से अलंकृत किया। अल-बैरूनी ने यहाँ के ते-रिवाजों और रहन-सहन का गहन अध्ययन किया और ग़ज़नी वापस जाकर अरबी षा में 'किताबुल-हिन्द' नाम की पुस्तक लिखी, जिसमें यहाँ के बारे में विविध रोचक र ज्ञानवर्द्धक जानकारियाँ एकत्रित कर दीं। यह किताब आज भी विश्व की अनेक षाओं में उपलब्ध है। आजकल यह पुस्तक 'अल-बैरूनी का भारत' के नाम से भी ालब्ध है। तत्कालीन भारतीय समाज और धर्म के सम्बन्ध में विविध महत्त्वपूर्ण नकारियाँ इससे मिलती हैं। दूसरे ऐतिहासिक स्रोतों के अभाव में प्रामाणिक जानकारी । मुख्य स्रोत 'किताबुल-हिन्द' को ही माना जाता है।

अल-बैरूनी ने अपनी विश्व प्रसिद्ध पुस्तक 'अल-आसारुल-बाक़िया' में अपनी .4 पुस्तकों का उल्लेख किया है। 'अल-आसारुल-बाक़िया' के बाद भी उन्होंने लगभग क दर्जन पुस्तकें लिखीं। खगोलशास्त्र पर उन्होंने 'अल-किताबुल-मसऊदी' नामक स्तक लिखी, जो आज भी इस विषय पर उत्कृष्ट पुस्तक मानी जाती है।

ज्ञान-विज्ञान के अनेक क्षेत्रों में अल-बैरूनी के कार्य का ऐतिहासिक महत्त्व है। न्होंने सर्वप्रथम यह सिद्ध किया कि पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है। उन्होंने अक्षांश और शान्तर रेखाओं को मालूम करने तथा समुद्र की गहराई को मापने की विधि ज्ञात की ार अनगिनत जड़ी-बूटियों के औषधीय गुणों और विभिन्न भाषाओं में उनके नामों का ल्लेख किया। वैज्ञानिक शोधों के द्वारा खनिज-पदार्थ-सम्बन्धी ज्ञान के क्षेत्र में भी न्होंने अनेक नए अध्याय जोड़े। अल-बैरूनी पहले वैज्ञानिक हैं जिन्होंने कहा कि ान्धुघाटी पहले किसी प्राचीन समुद्र की खाड़ी थी, जो धीरे-धीरे मिट्टी से भर गई।

आधुनिक भूगर्भशास्त्री भी अपने शोधों के आधार पर इस तथ्य को सही ठहराते
संसार के बड़े-बड़े मरुस्थलों के बारे में भी अल-बैरूनी ने कहा है कि वे किसी काल
समुद्रों की खाड़ियाँ थीं।

विश्व प्रसिद्ध पर्यटक और महान वैज्ञानिक अल-बैरूनी अपने जीवन के अन्ति
काल में ख़्वारिज़्म लौट गए थे और वहीं उनकी पार्थिव जीवन-यात्रा सन् 1048 ई॰
समाप्त हो गई। लेकिन उन्होंने ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में जिन यात्राओं का शुभारम्भ कि
वे आज भी जारी हैं। जब तक ज्ञान-विज्ञान की यह यात्रा जारी रहेगी तब त
अल-बैरूनी को उनके योगदान के कारण याद किया जाता रहेगा।

अल-बैरूनी ने अपना सारा जीवन वैज्ञानिक अनुसंधान करने, ज्ञान प्राप्त क
और पुस्तकें लिखने में गुज़ार दिया। ज्ञान प्राप्त करना और उस ज्ञान का सम्बन्धित
में उपयोग करना उनके जीवन का लक्ष्य था। आज भी उनकी पुस्तकें ज्ञान का स्रोत
वे प्रायः कहा करते थे, "अल्लाह ज्ञानी है और अज्ञान उसे पसन्द नहीं।"

शब्दार्थ और टिप्पणी

प्रतिभा	=	बुद्धि-बल, विलक्षण बौद्धिक शक्ति
खगोलशास्त्र	=	आकाशीय पिंडों, नक्षत्रों, तारों इत्यादि का विज्ञान
योगदान	=	देन, हाथ बटाना, सहयोग देना, किसी काम में साथ देना
दक्षता	=	निपुणता, कुशलता, महारत
अभीष्ट	=	इच्छित, आशय के अनुकूल
त्रिकोणमिति	=	गणित का वह विभाग जिसमें त्रिकोण (त्रिजुज) के कोणों, भुजा आदि का मान ज्ञात किया जाता है।

शोध	=	खोज, अनुसंधान, रिसर्च, खोज-बीन
संरक्षण	=	हिफ़ाज़त, देख-रेख
परिकल्पना	=	अवधारणा, संकल्पना, धारणा
वेधशाला	=	वह स्थान जहाँ यंत्रों के द्वारा आकाशीय पिंडों, नक्षत्रों और तारों इत्यादि का निरीक्षण किया जाता है।
अलंकृत	=	सजाया-सँवारा हुआ
रोचक	=	दिलचस्प
उत्कृष्ट	=	श्रेष्ठ, उत्तम
अक्ष	=	धुरी, पृथ्वी के दोनों ध्रुवों को मिलानेवाली कल्पित रेखा जो केन्द्र से होकर गुज़रती है।
पार्थिव	=	पृथ्वी-सम्बन्धी, मिट्टी का बना हुआ

अभ्यास

ेषय-बोध

क) मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. अल-बैरूनी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
2. किन कामों में अल-बैरूनी का बचपन बीता?
3. अल-बैरूनी की शिक्षा-दीक्षा कहाँ हुई?
4. किसके साथ अल-बैरूनी भारत आए?
5. अल-बैरूनी को भारतीय विद्वानों द्वारा दी गई उपाधि का नाम बताइए।

(ख) लिखित

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. बुरहानुल-हक़ अबुल-रैहान मुहम्मद बिन-अहमद अल-बैरूनी नामक व्यक्ति 'अल-बैरूनी' नाम से प्रसिद्ध क्यों हुआ?
2. ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में अल-बैरूनी के किन्हीं दो महत्त्वपूर्ण योगदानों का उल्लेख कीजि
3. भारत के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में 'किताबुल-हिन्द' का क्या महत्त्व है?
4. महमूद ग़ज़नवी ने अल-बैरूनी को किस प्रकार सम्मानित किया?
5. सिंधुघाटी के बारे में अल-बैरूनी का क्या विचार था? लिखिए।
6. अल-बैरूनी की किन्हीं दो किताबों के नाम लिखिए।

(ग) सही वाक्यों पर सही ☑ का निशान और ग़लत वाक्यों पर ग़लत ☒ क निशान लगाइए :

1. मनुष्य का मान-सम्मान उसके व्यक्तिगत गुणों और कार्यों में निहित होता है। (
2. अल-बैरूनी मंसूर इब्ने-अली बिन-इराक़ के गुरु थे। (
3. मंसूर बिन-अली ने त्रिकोणमिति की परिकल्पना प्रस्तुत की। (
4. 'किताबुल-हिन्द' में ईरान के रीति-रिवाजों और रहन-सहन का वर्णन है। (
5. 'अल-किताबुल-मसऊदी' खगोलशास्त्र की पुस्तक है। (
6. अल-बैरूनी ने भारतीय विद्वानों को 'ज्ञानसागर' की उपाधि दी? (
7. अल्लाह ज्ञानी है और अज्ञान उसे पसन्द नहीं। (

भाषा-बोध

1. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य प्रयोग द्वारा लिंग-निर्णय कीजिए :

   पुस्तक, ज्ञान, विधि, शोध, पर्यटक, यात्रा, दक्षता, संरक्षण।

2. **निम्नलिखित शब्दों को ध्यान से पढ़िए :**

सांसारिक = संसार + इक

मासिक = मास + इक

उपर्युक्त शब्द **'इक'** प्रत्यय के योग से बने हैं।

जो शब्दांश मूल शब्द के अन्त में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें **'प्रत्यय'** कहा जाता है।

शब्दों का पहला अक्षर 'अ', 'आ' हो अथवा 'अ', 'आ' से युक्त हो, जैसा कि उपर्युक्त उदाहरण में आया है, तो उसमें 'इक' प्रत्यय लगने से शब्दों का पहला अक्षर 'आ' में बदल जाता है और अन्तिम वर्ण के साथ 'इक' जुड़ जाता है।

उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्दों में 'इक' प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाकर अपने शिक्षक को दिखाइए :

समाज, दर्शन, व्यवहार, आरम्भ, साहस, शब्द।

कुछ और काम

1. अतीत काल में अल-बैरूनी की भाँति और भी बहुत-से पर्यटक भारत आते रहे हैं। उनमें से किन्हीं दो विश्व-प्रसिद्ध पर्यटकों के नाम अपने शिक्षक से मालूम कीजिए।

पाठ - 4

काँटों में राह बनाते हैं

सच है विपत्ति जब आती है
कायर को ही दहलाती है,
सूरमा नहीं विचलित होते
क्षण एक नहीं धीरज खोते,
विघ्नों को गले लगाते हैं,
काँटों में राह बनाते हैं।

है कौन विघ्न ऐसा जग में
टिक सके आदमी के मग में,
ख़म ठोंक, ठेलता है जब नर
पर्वत के जाते पाँव उखड़,
मानव ज़ब ज़ोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है।

गुण बड़े एक-से-एक प्रखर
हैं छुपे मानवों के भीतर,
मेंहदी में जैसे लाली हो
वर्तिका बीच उजियाली हो,
बत्ती जो नहीं जलाता है,
रौशनी नहीं वह पाता है।

— रामधारी सिंह 'दिनकर'

दार्थ और टिप्पणी

सूरमा	=	बहादुर, वीर	विघ्न	=	बाधा, रुकावट
मग	=	मार्ग, रास्ता	ख़म ठोंकना	=	ताल ठोंकना, ललकारना
प्रखर	=	तीव्र, तेज़	वर्त्तिका	=	दीपक की बत्ती, चिराग़ की लौ

अभ्यास

षय-बोध

) मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. विपत्ति आने पर बहादुर लोग क्या करते हैं?
2. पत्थर पानी कैसे बन जाता है?
3. पर्वत के पाँव कब उखड़ जाते हैं?
4. बत्ती नहीं जलाने से क्या होता है?
5. किसे रौशनी प्राप्त नहीं होती?

ख) लिखित

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. विपत्ति किसका दिल दहलाती है?
2. कैसे लोग काँटों में भी राह बना लेते हैं?
3. वीर पुरुष अपने मार्ग की बाधाओं को कैसे दूर कर लेता है?

4. आदमी के अन्दर किस प्रकार के गुण छिपे होते हैं?

5. कवि 'दिनकर' ने इस कविता के माध्यम से क्या सन्देश दिया है?

(ग) रिक्त स्थानों की पूर्त्ति कीजिए :

1. सच है विपत्ति जब आती है
   .... को ही दहलाती है,
2. ....को गले लगाते हैं।
   काँटों में राह बनाते हैं।।
3. मेंहदी में जैसे लाली हो,
   वर्तिका बीच ....हो,
4. बत्ती जो नहीं जलाता है।
   ....नहीं वह पाता है।।

(घ) स्तम्भ 'क' में दिए गए कथनों के अर्थ स्तम्भ 'ख' में ढूँढकर उचित जोड़े लगाइए :

क	ख
दहल जाना	ताल ठोंकना
धीरज खोना	दुस्साध्य काम होना
गले लगाना	मैदान छोड़ना
ख़म ठोंकना	हिम्मत हारना
पाँव उखड़ना	काँप उठना
पत्थर का पानी बनना	अपना लेना

ाषा-बोध

1. स्तम्भ 'क' में दिए गए शब्दों केसमानार्थक शब्द स्तम्भ 'ख' में दिए गए हैं । इनके उचित जोड़े लगाइए :

क	ख
पाषाण	आदमी
मग	बत्ती
शूल	राह
वर्त्तिका	काँटा
मानव	पत्थर

ूछ और काम

1. इस कविता को याद करके कक्षा में सुनाइए।
2. वीरता-सम्बन्धी तीन और कविताएँ एकत्र करके उन्हें अपनी कॉपी पर लिखिए और अपने भाई-बहनों को सुनाइए।

पाठ-5

इस्लामी त्योहार

त्योहार मानव-जीवन का एक आवश्यक अंग है। यह जीवन में आनन्द उ
उल्लास भर देता है। इससे नीरस जीवन सरस बन जाता है। जीवन में नई प्रेरणा उ
उत्साह का संचार हो जाता है। इसलिए संसार की हर जाति और धर्म के लोग किसी
किसी रूप में त्योहार अवश्य मनाते हैं।

इस्लामी त्योहार की अपनी कुछ विशेषताएँ हैं। वे किसी विजय के उल्लास
महापुरुषों की जयन्ती के रूप में नहीं मनाए जाते हैं। इस अवसर पर ढोल-बाजे उ
गान-नृत्य आदि का भी आयोजन नहीं किया जाता है। इस्लामी त्योहार मानव-प्रेम उ
मानव-समानता को बढ़ावा देने एवं जीवन को सत्य की ओर मोड़नेवाली किसी मह
घटना से प्रेरणा प्राप्त करने के लिए मनाया जाता है।

इस्लाम धर्म ने मानव-जाति को दो महान पर्व दिए हैं। पहला पर्व 'ईदुल-फ़ित्र
और दूसरा 'ईदुल-अज़हा।' साधारणतया पहले पर्व को 'ईद' और दूसरे को 'बक़रीद'
'ईदे-क़ुरबाँ' कहते हैं। दुनिया भर के लोग पूरे हर्षोल्लास के साथ इन त्योहारों को मन
हैं और अपने स्रष्टा के प्रति कृतज्ञता तथा पूर्ण समर्पण-भाव का प्रदर्शन करते
मानव-कल्याण और विश्व-शान्ति के लिए अपने स्रष्टा के मार्ग में अपना सब कु
न्योछावर करने का संकल्प दोहराते हैं।

ईद का त्योहार वास्तव में रमज़ान के रोज़े पूरे कर लेने की ख़ुशी में मनाया ज
है। रमज़ान हिजरी कैलेंडर के नवें महीने का नाम है। अल्लाह तआला ने इस पूरे म

रोज़े रखने का आदेश दिया है। रोज़ा इस्लाम के पाँच आधार स्तम्भों में से एक है। ा का अर्थ है कि एक व्यक्ति प्रातःकाल से सूर्यास्त तक खाने-पीने से रुक जाए और ानी इच्छाओं को वश में कर ले। किसी प्रकार का दुष्कर्म न करे और न मुँह से कोई ाशब्द निकाले। इबादत और दान-पुण्य के द्वारा ईश्वर की प्रसन्नता और निकटता त करने की चेष्टा करे।

ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि आत्मशुद्धि और संयम प्राप्त हो। ईश्वर की ज्ञाकारिता को अपनाया जाए और उसकी अवज्ञा से बचा जाए। स्रष्टा ने अपने बन्दे : जो असीम उपकार किए हैं, मनुष्य रोज़े तथा अन्य इबादतों के द्वारा अपने स्रष्टा का ाभार प्रकट करता है।

रमज़ान में ईशभक्ति के लिए तरावीह का आयोजन और कुरआन की तिलावत शेष रूप से की जाती है। पारस्परिक सद्भाव, भाईचारा और ग़रीबों की सहायता पर ा विशेष ध्यान दिया जाता है। सद्क़ए-फ़ित्र और ज़कात के अतिरिक्त दान, भोजन, पड़े इत्यादि ग़रीबों को दिए जाते हैं। मानव-सेवा और प्रेम रमज़ान की इबादत का एक ख्य अंग है।

रमज़ान का महीना बीतते ही नए महीने शव्वाल की पहली तारीख़ को ईद मनाई ाती है। पहली तारीख़ मालूम करने के लिए चाँद देखना अनिवार्य है। चाँद कभी मज़ान की 29वीं तारीख़ और कभी 30वीं तारीख़ को दिखाई पड़ता है। चन्द्रोदय के ामय बड़ी उत्सुकता से बच्चे, जवान और बूढ़े सभी चाँद देखने के लिए टकटकी लगा ते हैं। चाँद देखते ही हर्ष और उल्लास का पारावार दिल में लहराने लगता है।

ईद के दिन सुबह-सवेरे नहा-धोकर बच्चे नए कपड़े पहनते हैं। सुर्मा और इत्र लगाते हैं। अपने नए कपड़े, जूते और टोपियाँ एक-दूसरे को दिखाते और ख़ुश होते हैं। ार के बड़े लोग भी जल्दी-जल्दी काम निपटाकर नहाते हैं। वे भी नए कपड़े पहनते, सुर्मा

और इत्र लगाते हैं। बड़े और छोटे सभी मिलकर सेवइयाँ, मेवे और मीठी चीज़ें खाते

ईदगाह जाने का समय होने पर छोटे-बड़े सभी ईदगाह के लिए चल पड़ते सड़कों पर उनकी क़तारें लग जाती हैं। वे सब धीरे-धीरे तकबीर कहते हुए आगे ब हैं। ईदगाह पहुँचकर नमाज़ पढ़ते हैं। फिर दूसरे मार्ग से घर लौटकर आते हैं। घ आबादीवाले इलाक़े में ईद की नमाज़ बड़ी मसजिदों में भी पढ़ी जाती है। छोटे-ब अमीर-ग़रीब सब एक ही पंक्ति में कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हो जाते हैं। एक स रुकूअ और सजदे करते हैं। नमाज़ सारे इनसानों को समता और एकता की व्यावहा शिक्षा देती है। नमाज़ के बाद ख़ुत्बा होता है। उसके बाद सब घर लौटते हैं। एक-दू के घर जाकर ईद की मुबारकबाद देते हैं और सेवइयाँ तथा मिठाइयाँ आदि खाते है

ईदुल-अज़हा या बक़रीद का त्योहार ईद के दो महीने नौ दिन बाद ज़िलहिज महीने की दसवीं तारीख़ को मनाया जाता है। यह वास्तव में हज का त्योहार है। ह इस्लाम का पाँचवाँ स्तम्भ है। अल्लाह तआला ने हर मुसलमान पर, जो काबा (मक्का मुबारक मसजिद) तक जाने की सामर्थ्य रखता है, जीवन में एक बार हज करना फ़ ठहरा दिया है। अतः मुसलमान हर साल बड़ी संख्या में हज के लिए मक्का जाते हैं। लोग हज कर चुके हैं या हज करने की सामर्थ्य नहीं रखते, उनके लिए हर वर्ष हज तिथि में दुनिया भर में 'ईदुल-अज़हा' का त्योहार मनाया जाता है। 'ईदुल-अज़हा' में लो ईदगाह या बड़ी मसजिदों में नमाज़ अदा करते हैं और नमाज़ के बाद घर आकर जानव की क़ुरबानी करते हैं। मांस से विभिन्न प्रकार के व्यंजन तैयार किए जाते हैं। मित्रों अ पड़ोसियों को दावत दी जाती है। क़ुरबानी का कुछ मांस रिश्तेदारों, दोस्तों और ग़री में भी वितरित किया जाता है।

यह त्योहार अल्लाह के एक महान नबी हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) की अभूतप क़ुरबानी और ईश-प्रेम की यादगार है। जन-जन में इस भावना को जागृत करने के लि

त्योहार मनाया जाता है। हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) ने अल्लाह तआ़ला के आदेशपालन अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया था।

हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) के जीवन की एक महत्त्वपूर्ण घटना इस प्रकार है :

जवानी में हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) के कोई संतान नहीं हुई। लोगों के ार्गदर्शन के मिशन को जारी रखने के लिए उन्होंने ईश्वर से संतान के लिए विनती की। ढ़ापे में उनके घर एक सुन्दर और भाग्यवान पुत्र पैदा हुआ। उसका नाम उन्होंने समाईल रखा। बड़े प्यार से उसका लालन-पालन किया। जब इसमाईल जवान हुए तो ल्लाह ने हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) की परीक्षा ली। बुढ़ापे में इकलौते नौजवान बेटे ज़रत इसमाईल (अलैहि॰) को अपनी राह में कुरबान करने का आदेश दिया। हज़रत बराहीम (अलैहि॰) ने बेझिझक इस आदेश को स्वीकार किया। बेटे ने भी ईश्वर के आदेश के सामने सहर्ष गर्दन झुका दी। बाप ने बेटे को धरती पर लिटाकर गर्दन पर छुरी रख दी। ईश्वर ने तत्काल अपने फ़िरिश्ते द्वारा हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) को बधाई दी कि तुमने आदेशपालन का हक़ अदा कर दिया। उनको छुरी चलाने से रोक दिया गया और पास ही झाड़ी में उपस्थित एक मेंढे को क़ुरबान करने का आदेश दिया गया।

अल्लाह ने बेटे के बदले एक जानवर की क़ुरबानी स्वीकार कर ली और हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) को अपना मित्र (ख़लील) बना दिया। इसी घटना की याद में जानवरों की क़ुरबानी की जाती है।

क़ुरबानी से हर मुसलमान यह प्रेरणा लेता है कि वह अल्लाह के मार्ग में अपनी जान और अपना माल क़ुरबान करने के लिए हमेशा तत्पर रहेगा।

शब्दार्थ और टिप्पणी

उल्लास	= खुशी, हर्ष, उमंग
नीरस	= रसहीन, फीका
निरुत्साह	= उदास, बिना उत्साह का
सरस	= रसयुक्त, मधुर
दुष्कर्म	= बुरा काम
प्रेरणा	= प्रोत्साहन, काम में लगने की इच्छा जगाने का काम
अपशब्द	= गाली, अप्रिय शब्द, दुर्वचन
संयम	= परहेज़गारी, रोक, नियंत्रण, धीरज
जयन्ती	= जन्म-दिवस
असीम	= जिसकी सीमा न हो, बहुत अधिक, बेहद
आभार	= शुक्रिया, एहसान
तत्पर	= तैयार, आमादा
तरावीह	= रमज़ान माह में रात के समय अतिरिक्त नमाज़ का आयोजन
तिलावत	= क़ुरआन-पाठ
सद्क़ए-फ़ित्र	= रमज़ान माह में ईद की नमाज़ से पहले जान या माल के बदले ग़रीबों दिया जानेवाला अनिवार्य दान
ज़कात	= एक निश्चित सीमा से अधिक धन रखने पर वार्षिक ढाई प्रतिशत अनिवार्य दान; रमज़ान महीने में ज़कात अदा करना बेहतर माना जाता
उत्सुकता	= प्रबल इच्छा, उत्कंठा
पारावार	= समुद्र
समता	= बराबरी, समानता

तकबीर = अल्लाह की बड़ाई बयान करना

व्यंजन = भोजन

अभूतपूर्व = जो पहले न हुआ हो, अनुपम, अनोखा, निराला

न्योछावर = बलिदान, क़ुरबान, उत्सर्ग

सहर्ष = ख़ुशी से, ख़ुशी के साथ

तत्काल = तुरन्त, उसी समय

ख़ुत्बा = धार्मिक अभिभाषण, धर्मोपदेश

अभ्यास

वेषय-बोध

क) मौखिक

निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. ईदुल-फ़ित्र और ईदुल-अज़हा में क्या अन्तर है?
2. ईदुल-फ़ित्र का त्योहार क्यों मनाया जाता है?
3. रमज़ान हिजरी कैलेंडर का कौन-सा महीना है?
4. बच्चे ईद के दिन क्या करते हैं?
5. ईदुल-अज़हा हिजरी कैलेंडर के किस माह की कौन-सी तारीख़ को मनाई जाती है?

(ख) लिखित

निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'त्योहार मानव-जीवन का एक आवश्यक अंग है।' क्यों?

2. इस्लामी त्योहार की क्या विशेषताएँ हैं?

3. रोज़ा किस प्रकार मनुष्य को बुराई से बचने और आत्म-संयम एवं सहानुभूति की शिक्षा दे है?

4. क़ुरबानी की प्रथा का आरम्भ कैसे हुआ?

5. क़ुरबानी से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?

6. 'हज में मानव-समानता और विश्व-बन्धुत्व का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन होता है।' कैस?

भाषा-बोध

1. यदि किसी शब्द के अन्त में 'ई' (ी) हो तो उसके **बहुवचन** रूप में 'ई' के स्थान प 'इ' (ि) हो जाता है। जैसे : दवाई = दवाइयों, दवाइयाँ; मिठाई = मिठाइयों, मिठाइयाँ हाथी=हाथियों आदि।

उपर्युक्त उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए :
सेंवई, नदी, बकरी, लकड़ी, लाठी, साथी, मोती।

कुछ और काम

1. ईदुल-फ़ित्र का चित्रण करते हुए अपने शब्दों में एक लेख लिखें।

2. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ याद करके कक्षा में सुनाइए :

नीर = पानी	नीड़ = घोंसला
सब = सारा, कुल	शव = लाश
साल = वर्ष	शाल = ऊनी चादर, एक प्रकार का पेड़
पास = निकट	पाश = बन्धन
शाम = संध्या	साम = मीठे बोल।

ठ - 6

डॉक्टर होमी जहाँगीर भाभा

भारत के महान परमाणु वैज्ञानिक डॉक्टर होमी जहाँगीर भाभा का जन्म 30 अक्तूबर, 1909 ई॰ में मुम्बई के एक कुलीन और धनी पारसी परिवार में हुआ था। इनके पिता श्री जे॰ एच॰ भाभा मुम्बई के एक जाने-माने बैरिस्टर थे। कहा जाता है कि वे भारत के बड़े-बड़े औद्योगिक घरानों के क़ानूनी सलाहकार थे। घर में बड़े लोगों का आना-जाना लगा रहता था। इसलिए घर के वातावरण का होमी जहाँगीर की योग्यता र उनके चरित्र पर गहरा प्रभाव पड़ा।

होमी जहाँगीर भाभा बचपन ही से पढ़ने-लिखने में बहुत तेज़ थे। कैथेड्रल स्कूल प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने जॉन कैन्याल-हाई स्कूल में नामांकन रवाया। वे अपनी विलक्षण प्रतिभा और कठोर परिश्रम के बल पर हमेशा अच्छे नम्बरों पास होते रहे। इसलिए उनके सहपाठी और शिक्षक सभी उन्हें इज़्ज़त की निगाह से खते थे।

विज्ञान और गणित से उन्हें विशेष लगाव था। इसलिए विज्ञान और गणित विषय

की पुस्तकें पढ़ने में उन्हें बड़ा मज़ा आता था। उन्होंने बचपन में ही अपने समय सदुपयोग करना सीख लिया था। अतः वे अपने समय को किसी-न-किसी उद्देश्य काम में लगाते थे। अपने पिताजी की मदद से उन्होंने अपने घर में एक छोटा पुस्तकालय क़ायम कर लिया था। उन्होंने अपने पुस्तकालय में विज्ञान और गणित सम्बन्धित विषयों की बहुत-सी पुस्तकें जमा कर ली थीं। उनके पुस्तकालय में अ विज्ञान-पत्रिकाएँ भी आती थीं।

होमी जहाँगीर भाभा ने पंद्रह वर्ष की अवस्था में सीनियर सेकेंडरी स्कूल परीक्षा पास कर ली। इसके बाद उन्होंने इंटरमीडिएट की परीक्षा पास की। फिर वि की परीक्षा में बैठे। उसमें कुल छह विषय थे, जिनमें से कोई तीन विषय विद्यार्थियों चुनने पड़ते थे। परन्तु होमी जहाँगीर भाभा ने सभी छह विषयों में परीक्षा दी और विषयों में बहुत अच्छे अंकों से पास हुए। इससे उनकी चर्चा हर ओर होने लगी। उ इस उपलब्धि के कारण उन्हें छात्रवृत्ति दी गई। मुम्बई ही में वे विदेशी अध्यापक गणित तथा भौतिक विज्ञान पढ़ने लगे। उनकी विशेष योग्यता के कारण उन्हें और अनेक छात्रवृत्तियाँ मिलने लगी थीं। सन् 1932 ई॰ में उन्हें दो वर्ष के लिए ब्रिटेन ज गणित का विशेष अध्ययन करने के लिए छात्रवृत्ति मिली। उन्होंने ब्रिटेन, जर्मनी इटली के विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिकों से विज्ञान और गणित की उच्च शिक्षा प्राप्त की। के साथ-साथ विज्ञान से सम्बन्धित नए-नए शोध भी करते रहते थे। उनके अ शोधपत्र प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में छपे और बहुत चर्चित हुए। इनसे हर ओर उनका फैलने लगा। 1930 ई॰ में कैम्ब्रिज यूनीवर्सिटी से बी॰ ए॰ और 1934 ई॰ में वहीं से पी डी॰ की डिग्री प्राप्त की और सन् 1935 से 1939 ई॰ तक वे वहाँ विद्युत और चुम्ब विषयों पर लेक्चर देते रहे। 1937 ई॰ में उन्होंने कॉस्मिक किरणों के सम्बन्ध अभिभाषण दिया। इससे विज्ञान-जगत् में हलचल मच गई। इस सम्बन्ध में और अ शोध के लिए ब्रिटेन की रॉयल सोसाइटी ने उन्हें भारी आर्थिक सहायता दी। उ

यता, प्रतिभा और अनुसंधानों से प्रभावित होकर रॉयल सोसाइटी ने उन्हें अपना स्य बना लिया। इससे उनकी गणना संसार के प्रमुख वैज्ञानिकों में होने लगी।

सन् 1939 ई. में द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू होने के बाद वे स्वदेश लौट आए और लौर (बेंगलुरु) में भारतीय विज्ञान संस्थान में उन्हें प्राध्यापक का पद मिल गया। सन् 42 ई. तक वे वहीं पढ़ाते रहे। 1942 से 1945 ई. तक कॉस्मिक रे रिसर्च यूनिट में फ़ेसर रहे। उन्होंने टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ़ फंडामेंटल रिसर्च, मुम्बई की स्थापना की र कई वर्षों तक उसके डायरेक्टर रहे। 1947 से 1966 तक भारत के परमाणु ऊर्जा योग के अध्यक्ष रहे। इसी तरह परमाणु ऊर्जा से सम्बन्धित देश-विदेश के अनेक तेष्ठित पदों को आजीवन सुशोभित करते रहे। परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में उन्हें सराहनीय गदान के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिनमें एडम्स पुरस्कार 942), हॉपकिंस पुरस्कार (1948) और भारत सरकार की ओर से दिया गया पद्म भ्रण पुरस्कार (1954) प्रमुख हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यह महसूस किया गया कि देश के विकास के लिए तिरिक्त ऊर्जा की आवश्यकता है तथा परमाणु ऊर्जा से देश की ज़रूरतों को पूरा किया । सकता है। डॉ. होमी जहाँगीर भाभा इस समस्या को बहुत गंभीरता से लेते थे। इसी थ्य को ध्यान में रखते हुए उन्होंने बिजली बनाने के लिए देश के विभिन्न भागों में रमाणु ऊर्जा की अनेक भट्ठियाँ क़ायम कीं। उन्होंने अपने देश को परमाणु शक्ति-म्पन्न देश बनाने के लिए इतनी लगन, कठोर परिश्रम और सूझ-बूझ से काम किया कि छ ही दिनों में भारत की गणना परमाणु सम्पन्न देशों में होने लगी।

भारत का यह सपूत वैज्ञानिक प्रगति-पथ पर तीव्र गति से अग्रसर था कि जेनेवा होनेवाले वैज्ञानिकों के विश्व सम्मेलन में भाग लेने जाते समय 24 जनवरी, 1966 को ाल्प्स पर्वत के ऊपर वायुयान दुर्घटना में परलोक सिधार गए।

डॉ. भाभा विश्व शान्ति चाहते थे। वे मानव मात्र की समता में विश्वास रखते थे।

वे परमाणु ऊर्जा का इस्तेमाल देश के आर्थिक विकास और विश्व शान्ति के लिए क
के इच्छुक थे। वे हमारे परमाणु ऊर्जा रूपी विशाल भवन के प्रधान वास्तुशास्त्री के
में सदा याद किए जाते रहेंगे।

शब्दार्थ और टिप्पणी

कुलीन	=	ऊँचे ख़ानदान का, अभिजात
औद्योगिक	=	उद्योग-धंधों से सम्बन्धित, कल-कारख़ानों से सम्बन्धित
विलक्षण	=	अद्भुत, अनोखा, विचित्र
सहपाठी	=	साथ पढ़नेवाला
सदुपयोग	=	बेहतर उपयोग, अच्छी तरह इस्तेमाल किया जाना
कॉस्मिक रे	=	ब्रह्माण्ड-सम्बन्धी किरण
आजीवन	=	पूरी ज़िन्दगी, जीवन भर
सुशोभित	=	अच्छी तरह सजा हुआ, सुन्दर
सराहनीय	=	सराहना करने योग्य, प्रशंसनीय, क़ाबिले-तारीफ़
आर्थिक सहायता	=	माली मदद
योगदान	=	देन, हाथ बटाना, सहयोग देना, किसी काम में साथ देना
सपूत	=	अच्छा पुत्र, नाम पैदा करनेवाला पुत्र
प्रगति-पथ	=	तरक़्क़ी की राह
अग्रसर	=	आगे बढ़ना
परमाणु	=	पदार्थ का सबसे छोटा कण, जौहर
वास्तुशास्त्री	=	इंजीनियर, वास्तुकार, स्थापत्यविद्, निर्माता

अभ्यास

ाषय-बोध

क) मौखिक

निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. होमी जहाँगीर भाभा का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
2. होमी जहाँगीर भाभा की प्रारम्भिक शिक्षा कहाँ हुई?
3. होमी जहाँगीर भाभा के पुस्तकालय में किन विषयों की पुस्तकें थीं?
4. डॉ॰ भाभा को किन विषयों से विशेष लगाव था?
5. डॉ॰ भाभा को किन-किन पुरस्कारों से कब-कब सम्मानित किया गया?
6. महान परमाणु वैज्ञानिक डॉ॰ होमी जहाँगीर भाभा की मृत्यु कैसे और कब हुई?

ख) लिखित

निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. होमी जहाँगीर भाभा के सहपाठी और शिक्षक उन्हें इज़्ज़त की निगाह से क्यों देखते थे?
2. होमी जहाँगीर भाभा अपने समय का सदुपयोग किन कामों में करते थे?
3. किस उपलब्धि के कारण होमी जहाँगीर भाभा को छात्रवृत्ति दी गई?
4. विज्ञान-जगत् में हलचल क्यों मच गई?
5. अपने देश में ऊर्जा की आवश्यकता की पूर्ति के लिए डॉ॰ होमी जहाँगीर भाभा ने क्या किया?
6. भारत की गणना परमाणु सम्पन्न देशों में होती है। इसमें डॉ॰ होमी जहाँगीर भाभा का क्या योगदान है?
7. डॉ॰ होमी जहाँगीर भाभा परमाणु ऊर्जा का इस्तेमाल किस रूप में करना चाहते थे?

भाषा-बोध

1. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए :

(क) होमी जहाँगीर भाभा ने सभी छह विषयों में परीक्षा दी और सबमें अच्छे अंकों से पास हुए

(क) मौसम और ठण्डा हो गया।

उपर्युक्त दोनों वाक्यों में **और** शब्द का विभिन्न अर्थों में प्रयोग हुआ है। पहले वाक्य (क में **और** का प्रयोग **समुच्चयबोधक अव्यय** के रूप में हुआ है और दूसरे वाक्य (ख) **और** का प्रयोग **विशेषण** के रूप में हुआ है। इस प्रकार पहले वाक्य में **और** शब्द **योजव** (Conjunction) का काम कर रहा है और दो सरल वाक्यों को जोड़कर संयुक्त वाक्य बना रहा है, जबकि दूसरे वाक्य में **और** शब्द **विशेषण** की भूमिका निभाकर '**अधिकता** का अर्थ दे रहा है।

उपर्युक्त उदाहरणों के अनुसार और के दोनों अर्थोंवाले तीन-तीन वाक्य लिखकर अपने शिक्षक को दिखाइए।

2. नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्दों से प्रत्यय छाँटकर मूल शब्द लिखिए :

उदाहरण : वैज्ञानिक = विज्ञान + इक

औद्योगिक, आर्थिक, पारिवारिक, धार्मिक, मासिक, लौकिक, नैतिक, दैनिक, ऐतिहासिक।

कुछ और काम

1. अपने स्कूल के पुस्तकालय से विज्ञान-पत्रिका लेकर पढ़िए।

ठ - 7

ओस

देख उषा का राग सुहाग,
उठ चली रजनी भरकर रोष,
चू पड़ी नयनों से कुछ बूँद,
लोग भ्रम से कहते हैं ओस।

शीत-पीड़ित निर्धन की आह,
उसासों का संचित कर कोष,
दूब ने दिल में है रख लिया,
आप हम कहते फिरते ओस।

किसी अज्ञात शक्ति से रात,
लड़ा तरु उससे भरकर रोष,
टपकते हैं अब तक श्रम-बिन्दु,
व्यर्थ ही हम कहते हैं ओस।

ओस तेरे नन्हे दिल में,
इन्द्रधनुष करता हास-विलास,
जगमगा उठते तेरे गात,
अरुण का लखकर करुण प्रकाश।

दौड़ती है बालिका अजान,
तुझे चुन भरने को निज माँग,
मिटाने को मोती की साध,
फिराने को छिन भर निज भाग।

किन्तु कर से छूते ही अरी!
ढुलकती बनकर तू बेपीर,
टूट जाता उसका सुख-स्वप्न,
झलक उठता नयनों में नीर।

अरी, कितना सुन्दर-सुकुमार!
जगत् क्या दे सकता उपमान,
किन्तु क्षण-भंगुर है कितना,
विधाता तेरा 'अतुल' विधान।

लगा हीरे-मोती का ढेर,
मनुज हो जावे न कहीं भ्रान्त,
चमक दो घड़ी नष्ट हो तुरन्त,
उन्हें तू क्या करती है शान्त।,

शान्त हों वे जिनमें हो रूप,
शान्त हों वे जिनमें है शान,
नित्य प्रातः कहती है ओस,
स्वयं अपना करके अवसान।

— रामवृक्ष शर्मा 'अतुल'

ब्दार्थ और टिप्पणी

उषा = भोर, विहान, तड़का, भोर का उजाला या लाली

सुहाग = सौभाग्य, प्यार

रोष = गुस्सा

तरु = पेड़, वृक्ष

संचित = इकट्ठा किया हुआ

दूब = एक मशहूर नर्म घास

श्रम-बिन्दु = पसीना

गात = शरीर, बदन, जिस्म

दूब = एक मशहूर लम्बी और नर्म घास, दूर्वा

करुण = दया या करुणा से भरा हुआ

लखकर = देखकर

बेपीर = बेदर्द, बेरहम, निष्ठुर

मनुज = मनुष्य, आदमी, इनसान

भ्रान्त = भ्रम में पड़ा हुआ, गुमराह

राग = प्रेम, लगाव

शेष = बाक़ी

रजनी = रात

उसास = गहरी और लम्बी साँस, आह, दुख-सूचक साँस

कोष = भंडार, ख़ज़ाना, धनागार

तरु = पेड़, वृक्ष

हास-विलास = अठखेलियाँ, हँसी-खेल

अरुण = लाल, उगता हुआ सूरज, बाल सूर्य

नीर = आँसू, पानी

साध = इच्छा, मनोकामना

कर = हाथ

उपमान = मिसाल, नमूना, जिससे उपमा दी जाए

अवसान = अन्त, समाप्ति

अभ्यास

विषय-बोध

(क) मौखिक

अधोलिखित प्रश्नों केउत्तर दीजिए :

1. रात क्रोधित होकर क्यों उठ भागती है?
2. किसके नयनों से कुछ बूँदें टपक पड़ीं?
3. दूब ने अपने दिल में किसका कोष संचित कर लिया?
4. पेड़ को पसीना क्यों आ गया?
5. ओस के नन्हे दिल में इन्द्रधनुष के हास-विलास करने का क्या तात्पर्य है?

(ख) लिखित

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. ओस के बारे में कवि ने क्या-क्या कल्पनाएँ की हैं? अपने शब्दों में लिखिए।
2. जाड़े की रात में निर्धन लोग अपना समय किस प्रकार बिताते हैं?
3. ओस की चमकीली बूँदों को देखकर बालिका क्या सोचती है?
4. कवि ने ओस को बेपीर क्यों कहा है?
5. कवि ने ओस से धन-दौलत की उपमा क्यों दी है?
6. प्रतिदिन अपना अवसान करके ओस हमें क्या शिक्षा देती है?

(ग) 'ओस' शीर्षक कविता के आधार पर स्तम्भ 'क' और स्तम्भ 'ख' के शब्दों का मेल बिठाकर उचित जोड़े बनाइए :

स्तम्भ क	स्तम्भ ख
1. उषा	कोष
2. नयन	रोष

3. इन्द्रधनुष	करुण प्रकाश
4. अरुण	हास-विलास
5. रजनी	बूँद
6. उसास	राग-सुहाग

ाषा-बोध

(क) भूतकालिक सकर्मक क्रिया के साथ कर्त्ता के 'ने' चिह्न का प्रयोग हो और कर्म का 'को' चिह्न प्रकट न हो तो क्रिया कर्म के लिंग के अनुसार होगी।

जैसे :

रामू ने मिठाई खाई। पुष्पा ने फल खाया।

राजू ने मिठाइयाँ खाईं। सलीम ने आम ख़रीदा।

कर्त्ता के 'ने' चिह्न के साथ यदि कर्म का 'को' चिह्न भी प्रकट हो तो क्रिया सदैव एक वचन पुल्लिंग होगी।

जैसे :

रामू ने मिठाई को खाया। फ़रीदा ने रीता को बुलाया।

माँ ने बेटे को नहलाया। शिक्षक ने छात्र को पढ़ाया।

उपर्युक्त वाक्यों के आधार पर निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :

1. शाहिद ने आम खाई। .... ।
2. रहीम ने करीम को बुलाई। .... ।
3. शीला ने अपने भाई को बुलाई। .... ।
4. तुमने इस काम को कब करा ? .... ।
5. माँ ने कही थी। .... ।

6. नदीम ने रोटी खाया। .... ।

7. सलमा ने भात खाई। .... ।

8. माँ ने मुझे बुलाई। .... ।

कुछ और काम

1. जाड़े में सुबह सूरज निकलने पर ओस की बूँदों का निरीक्षण कीजिए और उनमें इन्द्रधनुष देखने की कोशिश कीजिए।

ठ - 8

अन्तरिक्ष-यात्रा

आरम्भिक काल से ही मानव-मन में चिड़ियों की भाँति आकाश में उड़ने की भेलाषा रही है। आकाश में चाँद, तारे और सूरज को देखकर उन्हें जानने और वहाँ ; पहुँचने की कल्पना मानव सदैव करता रहा है। लेकिन यह काम था बड़ा कठिन। र भी उसने हिम्मत न हारी। लगातार प्रयत्न करता रहा। उसने पहले तो दूरबीनों का विष्कार करके धरती पर बैठे-बैठे आकाश के चमकते पिण्डों का अध्ययन किया। ासे वह उनके विषय में बहुत कुछ जान गया। परन्तु अन्तरिक्ष-यात्रा की उसकी साध मी भी पूरी नहीं हुई थी, इसलिए अनेक देशों के वैज्ञानिक अन्तरिक्ष-यात्रा के लिए शेष प्रकार के यान के निर्माण-कार्य में जुट गए।

'अन्तरिक्ष' आकाश के उस भाग को कहते हैं जहाँ पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल नाप्त हो जाता है और वहाँ हवा अत्यन्त विरल हो जाती है। पृथ्वी से 120 किलोमीटर । ऊँचाई पर 'काला अन्तरिक्ष' आरम्भ होता है। वहाँ आकाश काला दिखाई पड़ता है ार सूर्य की रौशनी चौंधियानेवाली होती है। वहीं से वायुहीन (वायु-शून्य) अन्तरिक्ष का ारम्भ होता है। वायु के अभाव के कारण वहाँ वायु-घर्षण और पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण ल समाप्त हो जाता है। इसलिए कृत्रिम उपग्रह वहाँ अत्यन्त तीव्र गति से पृथ्वी की रेक्रमा करते हैं और चारों ओर से पृथ्वी के विविध चित्र खींचते रहते हैं। पृथ्वी से गभग 128 किलोमीटर की ऊँचाई के बाद पूर्णतः शान्त अन्तरिक्ष आरम्भ होता है। वहाँ ायु इतनी विरल है कि ध्वनि तरंगें भी उसमें संचरित नहीं हो सकतीं। खगोलशास्त्री और

अन्तरिक्ष-विज्ञानी इस बात पर सहमत हैं कि यहीं से वास्तविक अन्तरिक्ष का आ
होता है।

अन्तरिक्ष की ऊँचाई पर पहुँचने के लिए एक विशेष प्रकार के यान का उप
किया जाता है जिसे रॉकेट कहते हैं। यंत्रों से सुसज्जित उपग्रह को रॉकेट द्वारा
अन्तरिक्ष में प्रक्षेपित किया जाता है ।

अन्तरिक्ष में पहुँचनेवाला सबसे पहला सफल कृत्रिम उपग्रह स्पूतनिक-I था।
मानवरहित यान को रूस ने 4 अक्तूबर 1957 ई० में छोड़ा था। यह मात्र 60 सेंटीमे
व्यास और 84 किलोग्राम भार का था। इसका आकार एक गोले जैसा था। इसके उ
एल्युमिनियम का आवरण चढ़ा था। यह 27 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ़्तार से पृथ्वी
चक्कर लगा रहा था और स्वचालित मशीनों द्वारा सूचनाएँ और चित्र भेज रहा था। ध
पर स्थिति नियंत्रण-केन्द्रों से इसे नियंत्रित किया जा रहा था। लगभग एक माह
काम करने के बाद ईंधन ख़त्म होने के कारण इसने काम करना बन्द कर दिया।
ने दोबारा स्पूतनिक-II नामक कृत्रिम उपग्रह अन्तरिक्ष में भेजा। इसमें 'लाइका' ना
एक कुतिया को सवार करके भेजा गया। लाइका तो धरती पर जीवित वापस नहीं आ
किन्तु इस प्रयोग से वैज्ञानिकों को अनेक नई जानकारियाँ मिलीं, जिनके कारण भविष्
मानव को अन्तरिक्ष में भेजना सम्भव हो सका। अन्तरिक्ष में हवा नहीं है। इसी
अन्तरिक्ष-यात्री को अपने साथ सिलिंडरों में पर्याप्त ऑक्सीजन ले जाना पड़ता है। साथ
सांस और रक्तचाप को नियंत्रित रखने के लिए एक विशेष प्रकार का कवच रूपी व
पहनकर जाना पड़ता है क्योंकि वायुरहित अन्तरिक्ष में जीवधारियों का जीना असम्भव

अन्तरिक्ष-यात्रा करनेवाले सबसे पहले मानव थे रूस के यूरी गैगरिन। बाद
संयुक्त राज्य अमेरिका ने अपोलो-XI उपग्रह द्वारा 21 जुलाई 1969 ई० को चन्द्रमा
धरती पर मानव को उतारने में सफलता प्राप्त कर ली। चन्द्रमा पर उतरनेवाले प
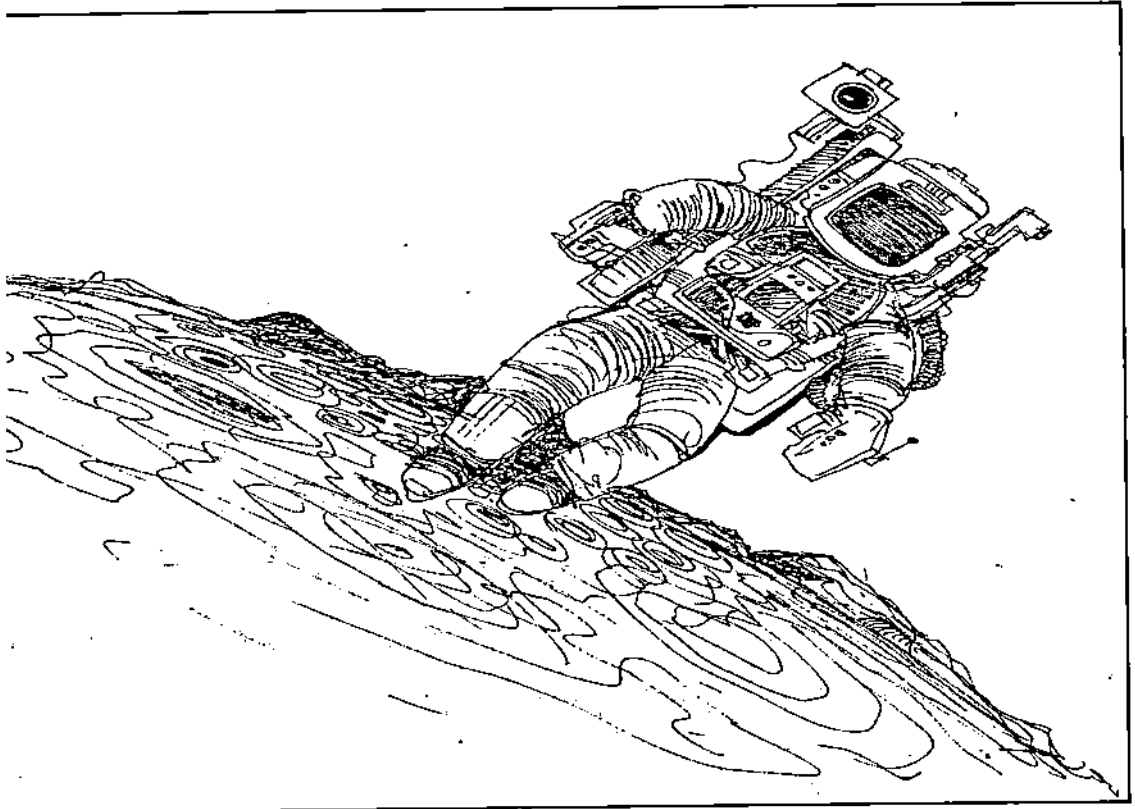
भाग्यशाली मानव थे नील आर्मस्ट्रांग, एडविन एलड्रिन एवं माइकल कोलिंस।

आगे चलकर हमारे देश भारत ने भी राकेश शर्मा को इनसेट उपग्रह द्वारा न्तरिक्ष की सैर कराई। ये अपने उपग्रह में ही बैठकर पृथ्वी की परिक्रमा करके न्तरिक्ष से धरती पर लौट आए। भारत ने 1975 ई॰ में सर्वप्रथम आर्यभट्ट नामक पग्रह को अन्तरिक्ष में भेजकर इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर ली थी।

वर्तमान समय में अनेक देशों के मानव-रहित यान अन्तरिक्ष में चन्द्रमा की भाँति थ्वी की परिक्रमा कर रहे हैं और वहाँ से विभिन्न प्रकार की जानकारियाँ भेज रहे हैं। न उपग्रहों में परिष्कृत यंत्र लगे हुए हैं, जिनसे प्राप्त सूचनाओं के आधार पर मौसम की ानकारी होती है और तूफ़ान, वर्षा इत्यादि की भविष्यवाणी की जाती है। उपग्रहों से ाप्त सूचनाओं की सहायता से धरती के अन्दर छिपी खनिज सम्पदाओं, वनों, पहाड़ों

और समुद्रों में बसनेवाले जीव-जन्तुओं तथा अन्य वस्तुओं का पता लगाया जाता
आजकल उपग्रहों द्वारा दूसरे देशों की जासूसी भी की जाती है। साथ ही रेडि
टेलीफ़ोन, मोबाइल, इंटरनेट, टेलीविज़न इत्यादि के संचालन में उपग्रह अत्यन्त महत्त्व
भूमिका निभा रहे हैं। इस प्रकार मानव-निर्मित कृत्रिम उपग्रहों से मानव-सेवा के बहुत
असम्भव काम भी सम्भव हो गए हैं। परन्तु जहाँ एक ओर कृत्रिम उपग्रहों से इतने ल
हैं, वहीं दूसरी ओर इनके दुरुपयोग से हानियाँ भी हो सकती हैं। युद्धों में भी इन
प्रयोग होने लगा है, जिसे शुभ संकेत नहीं कहा जा सकता। मानव की इस दुष्प्रवृत्ति
समय रहते लगाम नहीं लगाया गया तो यह मानव-जाति के लिए बड़ा विनाशकारी रि
होगा। मात्र भौतिक सफलता और सम्पन्नता ही मानव के लिए वरदान नहीं है। भौति
साधनों के ठीक-ठीक उपयोग के लिए बुद्धि और विचार की शुद्धता और ईशपरायण
ज़रूरी है। इसके बिना मात्र भौतिक विकास मानव के लिए अभिशाप सिद्ध हो सकता

शब्दार्थ और टिप्पणी

विरल = घनत्व की कमी, पतला

गुरुत्वाकर्षण = धरती की आकर्षण शक्ति

कृत्रिम = मानव-निर्मित, बनावटी

परिष्कृत = सँवारा और उत्तम बनाया हुआ

दुष्प्रवृत्ति = बुरी प्रवृत्ति

वरदान = नेमत, प्रसन्न होकर किसी को इच्छित वस्तु देना

अभिशाप = बददुआ, दुख का कारण, शाप

अभ्यास

षय-बोध

) मौखिक

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. आरम्भिक काल से मानव-मन में क्या अभिलाषा रही है?
2. अन्तरिक्ष में यान की गति तीव्र क्यों होती है?
3. चाँद पर उतरनेवाले प्रथम अन्तरिक्ष-यान और व्यक्तियों के नाम बताइए।
4. अन्तरिक्ष-यात्रा में किस यान का उपयोग किया जाता है?
5. अन्तरिक्ष-यात्रा करनेवाले प्रथम भारतीय वैज्ञानिक का क्या नाम है?

ब) लिखित

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. अन्तरिक्ष में सबसे पहले किस देश ने अन्तरिक्ष-यान भेजा? उस अन्तरिक्ष-यान का नाम लिखिए।
2. विभिन्न ऊँचाइयों पर अन्तरिक्ष की स्थिति कैसी है?
3. स्पूतनिक-I ने कब और क्यों काम करना बन्द कर दिया?
4. उपग्रहों से क्या-क्या लाभ और हानियाँ हैं?
5. उपग्रहों से होनेवाली हानियों से कैसे बचा जा सकता है?

ग) निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए और वाक्यों के अन्त में दिए गए कोष्ठकों में सही वाक्यों के सामने 'सही' और ग़लत वाक्यों के सामने 'ग़लत' लिखिए :

1. अन्तरिक्ष में पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल बढ़ जाता है। (   )

2. पृथ्वी से 120 किलोमीटर की दूरी पर 'काला अन्तरिक्ष' आरम्भ होता है। (

3. अमेरिका ने अपोलो-XI उपग्रह द्वारा चन्द्रमा पर मानव को उतारने में सफलता प्राप्त की। (

4. पृथ्वी से 200 किलोमीटर की ऊँचाई के बाद शान्त अन्तरिक्ष आरम्भ होता है। (

5. मनुष्य कृत्रिम उपग्रह का दुरुपयोग नहीं कर सकता। (

भाषा-बोध

कोष्ठकों में दिए गए निर्देशों के अनुसार वाक्य में प्रयुक्त क्रिया का काल बदलिए

उदाहरण : खेल शुरू हो गया। (भविष्यत्काल में बदलिए।)

खेल शुरू होगा। (भविष्यत्काल)

(यहाँ प्रथम वाक्य भूतकाल का है, जिसे कोष्ठक में दिए गए निर्देश के अनुसार भविष्यत्क में बदला गया है।)

1. मैं पढ़ता हूँ। (भविष्यत्काल)
2. वह आकाश में उड़ेगा। (वर्तमानकाल)
3. राकेश ने अन्तरिक्ष की यात्रा की। (भविष्यत्काल)
4. वह अन्तरिक्ष-यात्रा करेगा । (भूतकाल)
5. भारत ने अन्तरिक्ष-यान बनाया। (वर्तमानकाल)
6. अनेक उपग्रह अन्तरिक्ष में चक्कर लगा रहे हैं। (भूतकाल)

कुछ और काम

1. ग्रह और उपग्रह में क्या अन्तर है? शिक्षक से मालूम करके लिखिए।

ाठ - 9

मधुमक्खी

हम सबके सृजनहार और पालनहार अल्लाह ने संसार में विभिन्न प्रकार के ानगिनत छोटे-बड़े जीव-जन्तु पैदा किए हैं। मधुमक्खी उन्हीं में से एक जीव है। धुमक्खियाँ बड़ी परिश्रमी होती हैं। ये अत्यन्त कठोर परिश्रम करके अपने छत्ते का ार्माण करती हैं। फुलवारियों, बाग़-बाग़ीचों आदि के रंग-बिरंगे फूलों और फलों से करन्द चूस-चूसकर लाती हैं और छत्ते में मधु के रूप में एकत्र करती हैं। मधु बहुत ही ुणकारी, लाभदायक और मधुर पदार्थ है। अनेक रोगों में इसका इस्तेमाल दवा के रूप में िकया जाता है। बच्चों को तो इसका रसास्वादन माँ की गोद में ही करा दिया जाता है।

मधुमक्खियों की मुख्यतः चार प्रजातियाँ पाई जाती हैं –

1. सारंग मधुमक्खियाँ,
2. भारतीय मधुमक्खियाँ,
3. विलायती मधुमक्खियाँ और
4. भुनगा मधुमक्खियाँ।

आइए, अब इनके बारे में विस्तार से जानें :

1. सारंग मधुमक्खियाँ : ये मधुमक्खियाँ सबसे बड़े आकार की होती हैं। ये पेड़ों पर या घरों के छज्जों के नीचे बहुत बड़ा छत्ता बनाती हैं और अधिक मात्रा में मधु-संचय करती हैं। इनके एक छत्ते में 25 से 30 किलोग्राम तक मधु होता है। इस प्रजाति की मधुमक्खियों को स्थान-परिवर्तन करना बहुत पसन्द है। इसलिए ये कभी यहाँ तो कभी वहाँ अपने छत्ते बनाती रहती हैं। ये बड़े क्रोधी स्वभाव की होती हैं। इन्हें यदि

कोई छेड़ता है तो ये उसपर आक्रमण कर देती हैं और कई-कई किलोमीटर तक उसक
पीछा करती हैं। कई बार तो ये अपने शत्रुओं को डंक मार-मारकर रोगी बना देती है
जिसे ये डंक मार देती हैं, उसका चेहरा फूलकर कुप्पा हो जाता है।

2. भारतीय मधुमक्खियाँ : इस प्रजाति की मधुमक्खियों को 'खेरा' भी कह
हैं। ये सारंग से छोटे और भुनगा से बड़े आकार की होती हैं। छायादार, ठण्डे और अंध
स्थानों पर ये अपना छत्ता बनाती हैं। इन्हें कृत्रिम छत्ते बनाकर भी पाला जाता है।

3. विलायती मधुमक्खियाँ : ये मधुमक्खियाँ यूरोप में पाई जाती हैं। इनक
अनेक प्रजातियाँ हैं। इन मधुमक्खियों को पालना कठिन है। इसलिए भारत में ये बहु
कम पाली जाती हैं।

4. भुनगा मधुमक्खियाँ : ये मधुमक्खियाँ आकार में बहुत छोटी होती है
इनका मधु सबसे अच्छा माना जाता है। यह बहुत महंगे दामों पर बिकता है। भुन
प्रजाति की मधुमक्खियों को पालना बहुत सरल है, परन्तु ये अल्प मात्रा में मधु-संच
करती हैं। अतः इन्हें पालना आर्थिक दृष्टि से अधिक लाभदायक नहीं है। ये मैदानी क्षे
में रहती हैं और पेड़ों की डालियों, झाड़ियों और घरों के छज्जों में अपना छत्ता बनाती है
शीत प्रदेशों में रहना इन्हें पसन्द है।

मधुमक्खियों का परिवार : मधुमक्खियाँ भी मनुष्य की भाँति एक परिवार
रहती हैं। इनका पूरा परिवार एक छत्ते में ही रहता है। एक छत्ते में तीन हज़ार से चाली
हज़ार तक मधुमक्खियाँ रहती हैं।

वर्गीकरण : प्रत्येक छत्ते में रहनेवाली मधुमक्खियों को तीन वर्गों में बाँटा ज
सकता है —

1. रानी मधुमक्खी, 2. श्रमिक मधुमक्खियाँ और 3. नर मधुमक्खियाँ।

1. रानी मधुमक्खी : प्रत्येक छत्ते में एक रानी मधुमक्खी होती है। रानी मक्खी 'माता मधुमक्खी' भी कहा जाता है। यह दूसरी मधुमक्खियों की अपेक्षा बड़ी होती इसके पंख छोटे और पेट बड़ा होता है। यह पाँच-छह महीने ही जीवित रह पाती है।

रानी मधुमक्खी का मुख्य काम अण्डे देना है। यह एक दिन में एक हज़ार तक ंडे देती है और अण्डों को छत्ते के रिक्त कोष्ठों में रखती जाती है। अण्डे से लारवा, रवा से प्यूपा और प्यूपा से बच्चे बनते हैं। यह प्रक्रिया इक्कीस दिनों में पूरी होती है।

2. श्रमिक मधुमक्खी : छत्ते में सबसे ज़्यादा श्रमिक मधुमक्खियाँ ही होती हैं।
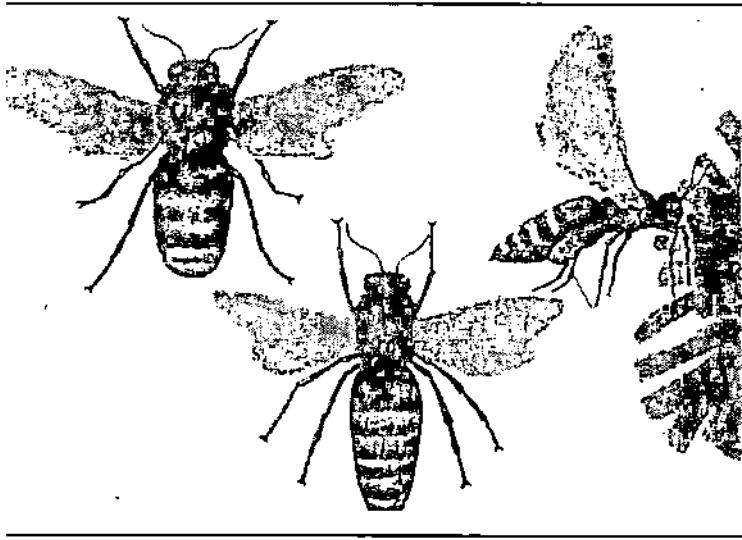
ये रानी मधुमक्खी और नर मधुमक्खियों से छोटी होती हैं और इनका पेट नुकीला, धारीदार तथा डंकयुक्त होता है। श्रमिक मधु-मक्खियाँ भी मादा ही होती हैं। परन्तु ये केवल परिश्रम करती हैं, अंडे नहीं देतीं। इसलिए इन्हें श्रमिक मक्खियाँ कहा जाता है। छत्ते का निर्माण, उसकी मरम्मत और सफ़ाई, शत्रुओं से छत्ते सुरक्षा और बच्चों का पालन-पोषण, रानी मक्खी और नर मधुमक्खियाँ की सेवा ना श्रमिक मधुमक्खियों के प्रमुख कार्य हैं। श्रमिक मधुमक्खियाँ मधु और मोम का ाण करती हैं। ये फूलों और फलों से मकरन्द चूसकर और पराग खाकर मधुसंचय-थैली एकत्र करती जाती हैं। लार मिलने से मकरन्द चीनी में परिवर्तित हो जाता है, जिसे मेक मधुमक्खियाँ छत्तों में बने मधुकोष्ठों में एकत्र करके मोम से मधुकोष्ठों का द्वार

बन्द करती जाती हैं।

अल्लामा इक़बाल ने कहा है –

इस शहद को फूलों से उड़ाती है ये मक्खी
खुद खाती है औरों को खिलाती है ये मक्खी।

श्रमिक मधुमक्खियों का जीवनकाल पाँच-छह सप्ताह से लेकर पाँच-छह मह
तक होता है।

3. नर मधुमक्खी :-प्रत्येक छत्ते में नर मधुमक्खियों की संख्या दो सौ से प
सौ तक होती है। नर मधुमक्खियाँ काम नहीं करती हैं। इसलिए इन्हें 'निख
मक्खियाँ' कहते हैं। श्रमिक मधुमक्खियाँ निखट्टू मधुमक्खियों को छत्ते से भगाती रह
हैं। हाँ, रानी मधुमक्खी किसी नर मधुमक्खी को साथ लेकर बाहर जाती है और वा
आकर अण्डे देती है।

अल्लाह तआला ने मधुमक्खियों में परिश्रमशीलता, लगन, अनुशासन, संगठ
एकता, परोपकार और शिल्पकारिता के जो अद्‌भुत गुण कूट-कूटकर भर दिए हैं, उ
हमारे लिए बड़ी शिक्षा है। मधुमक्खियाँ जिस प्रकार निरन्तर कठोर परिश्रम करके, फू
एवं फलों से मकरन्द और पराग एकत्र करके अमृत समान मधु तैयार करती हैं, उ
प्रकार अल्लाह का सच्चा, शिष्ट और सदाचारी बन्दा भी अच्छाइयों को ग्रहण करता उ
उन्हें पूर्ण मनोयोग से फैलाता और बुराइयों से बचता है। वह अपने समाज को स्वच
सुन्दर और सदाचार से परिपूर्ण बनाने का हर सम्भव प्रयास करता है।

पवित्र क़ुरआन में मधुमक्खी के सम्बन्ध में कहा गया है :

"तुम्हारे रब ने मधुमक्खी के मन में यह बात डाल दी कि पहाड़ों
और पेड़ों में और लोगों के बनाए हुए छत्रों में घर बना। फिर हर

प्रकार के फल-फूलों से ख़ुराक ले और अपने रब के समतल मार्गों पर चलती रह। उसके पेट से विभिन्न रंगों का एक पेय (मधु) निकलता है, जिसमें लोगों के लिए औषधि है। निश्चय ही सोच-विचार करनेवालों के लिए इसमें एक बड़ी निशानी है।" (16 : 68-69)

अन्तिम ईश-दूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने शहद और क़ुरआन-पाठ के महत्त्व पर ꠰ाश डालते हुए कहा है –

"दो स्वास्थ्यवर्द्धक वस्तुओं को अपने लिए अनिवार्य ठहरा लो। वे हैं – शहद और क़ुरआन-पाठ।"

अर्थात् शहद के सेवन से हम शारीरिक स्वास्थ्य प्राप्त कर सकते हैं और ꠰रआन-पाठ से आत्मिक सुख-शान्ति।

꠰ब्दार्थ और टिप्पणी

सृजनहार = बनानेवाला
रसास्वादन कराना = चखाना
शीत-प्रदेश = ठण्डा इलाक़ा
मकरन्द = फूलों का रस
संचय करना = जमा करना
प्रजाति = नस्ल की शाखा, किसी जाति से निकली हुई
अमृत = अमर कर देनेवाली वस्तु आबे-हयात, सुधा,

मधु = शहद
कोष्ठ = छत्ते में बने हुए ख़ाने
परोपकार = दूसरों के हित का काम
कृत्रिम = बनावटी, मानव-निर्मित
सर्वाधिक = सबसे ज़्यादा
श्रमिक = मज़दूर
निखट्टू = निकम्मा
पराग = पुष्परज, फूल के बारीक कण
सदाचारी = सज्जन, अच्छे आचरणवाला

शिल्पकारिता	= कला-कौशल, शिल्प का काम	मनोयोग	= मन लगाना, मन को एका करके किसी एक पदार्थ प लगाना
परिश्रमशीलता	= मेहनत करने की आदत		
परिपूर्ण	= हर तरह से भरा हुआ, भरा हुआ	आत्मिक	= आत्मा-सम्बन्धी, आत्मा क रूहानी, मानसिक
स्वास्थवर्द्धक	= स्वास्थ्य बढ़ानेवाला, स्वास्थ्य प्रदान करनेवाला		

अभ्यास

विषय-बोध

(क) मौखिक

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. सबसे अच्छा मधु किस प्रजाति की मधुमक्खियाँ बनाती हैं?
2. भारतीय मधु मक्खी का दूसरा नाम क्या है?
3. किस प्रजाति की मधुमक्खियों को कृत्रिम छत्ते बनाकर पाला जा सकता है?
4. प्रत्येक छत्ते में रानी मधुमक्खी की संख्या कितनी होती है?
5. मधु को अमृत के समान क्यों कहा गया है?

(ख) लिखित

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. मधुमिक्खयों की मुख्यतः कितनी प्रजातियाँ हैं? उनके नाम लिखिए।
2. मधुमक्खियों के परिवार के बारे में लिखिए।

3. मधुमक्खी के अण्डे से बच्चे बनने तक की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

4. मधुमक्खियों की जीवन-चर्या से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

5. अल्लाह का सच्चा और अच्छा बन्दा कैसा होता है?

) रिक्त स्थानों की पूर्त्ति कीजिए :

1. मधु बहुत ही..........................और गुणकारी पदार्थ है।

2. ....मधुमक्खियों को पालना बहुत सरल है।

3. ....सबसे अधिक मात्रा में मधु तैयार करती हैं।

4. रानी मधुमक्खी को..........................भी कहा जाता है।

5. श्रमिक मधुक्खियाँ ही मधु और..........तैयार करती हैं।

षा-बोध

1. प्रस्तुत पाठ में लाभदायक और छायादार शब्दों का प्रयोग हुआ है। इन शब्दों में क्रमशः दायक और दार प्रत्यय हैं।

निम्नलिखित शब्दों में दायक और दार प्रत्ययों का समुचित प्रयोग करके नए शब्द बनाइए और अपने शिक्षक को दिखाइए :

दुकान, माल, दुख, आराम, ईमान, सुख, आनन्द, नोक, धार, फल।

2. **निम्नलिखित शब्दों को ध्यान से पढ़िए :**

जीव-जन्तु	=	जीव और जन्तु,
सुबह-शाम	=	सुबह और शाम,
पाँच-छह	=	पाँच या छह,
लाभ-हानि	=	लाभ और हानि,
माता-पिता	=	माता और पिता।

दूध-दही = दूध और दही

उपर्युक्त उदाहरण द्वन्द्व समास के हैं। जहाँ समस्तपद के दोनों खण्ड समान स्तर के हों
'अथवा', 'और', 'या' योजक (Conjunction) का लोप हो, वहाँ द्वन्द्व समास होता है

उपर्युक्त उदाहरणों के अनुसार पाँच समस्तपद लिखकर उनका समास-विग्रह की और अपने शिक्षक को दिखाइए।

कुछ और काम

1. मधुमक्खी पालन केन्द्र जाकर मधुमक्खियों के छत्ते का निरीक्षण कीजिए और अपने निरीक्षण के बारे में दस वाक्य लिखिए।

ठ - 10

वृहस्पति के दोहे

वह स्वामी प्रभु, पूज्य है, वही वन्ध अखिलेश।
जिसने युग-युग में दिया, हमें सत्य सन्देश।।

जो समृद्ध करता हमें, जिसका अक्षय कोष।
केवल उससे माँगकर, करो सदा सन्तोष।।

धन, गुण, विद्या, रूप पर, कैसा गर्व गँवार।
यह परमेश्वर की प्रकट, लीला अपरम्पार।।

कैसे फिर होता अहो, मानव का उद्धार।
यदि सन्देश न भेजता, अपना जगदाधार।।

आदि, मध्य, अवसान का, जिसको पूरा ज्ञान।
उसने ही निर्मित किया, सच्चा नित्य विधान।।

वही श्रेष्ठ है जगत् में, जो ईश्वर का भक्त।
सत्कर्मों में ही सदा, रहता है अनुरक्त।।

जन्म, जाति, अधिकार में, सभी मनुष्य समान।
ऊँच-नीच का भेद तो करते हैं नादान।।

जो तुझको अप्रिय लगे, जग को अप्रिय जान।
तुझको जिसकी कामना, वह सबको प्रिय मान।।

पापी यूँ ही फूलते कर-करके अन्याय।
किन्तु बतलाएगा उन्हें, अन्तिम दिन का न्याय।।

— वृहस

शब्दार्थ और टिप्पणी

वन्द्य = उपास्य, वन्दना के योग्य, इबादत के लायक़

लीला = खेल, क्रिया-कलाप, रहस्य से भरा कार्य

अपरम्पार = असीम, अपार

नित्य = हमेशा, शाश्वत

सत्कर्म = अच्छा काम

अन्तिम दिन = आख़िरत, क़ियामत, प्रलय-दिवस

अखिलेश = सबका स्वामी, ईश्वर, अल्ल

अक्षय = जिसका नाश न हो, जिस कमी न हो

आदि = शुरू, आरम्भ

जगदाधार = जगत् का आधार, ख़ुदा

विधान = नियम, क़ानून

अनुरक्त = लीन, मग्न, आसक्त

अभ्यास

षय-बोध

) मौखिक

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कौन पूज्य है?
2. किसका कोष कभी समाप्त नहीं होता?
3. जगत् में सर्वश्रेष्ठ कौन है?
4. पापी के गर्व का खोखलापन कब प्रकट होगा?

ब) लिखित

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. केवल ईश्वर ही से क्यों माँगना चाहिए?
2. गँवार लोग किन चीज़ों पर गर्व करते हैं?
3. 'मानव-जाति का उद्धार नहीं होता, यदि ईश्वर मार्गदर्शन न भेजता।' इस भाव को प्रकट करनेवाला दोहा लिखिए।
4. वृहस्पति के दोहों के आधार पर सच्चे और शाश्वत विधान के रचयिता के गुणों का वर्णन कीजिए।

ग) रिक्त स्थानों की पूर्त्ति कीजिए :

1. ...., जो ईश्वर का भक्त।
   सत्कर्मों में ही सदा, रहता है अनुरक्त।।
2. जन्म, जाति, अधिकार में, ...।
   ऊँच-नीच का भेद तो करते हैं नादान।।

3. पापी यूँ ही फूलते कर-करके अन्याय।

किन्तु बतलाएगा उन्हें, ... ।।

भाषा-बोध

1. निम्नलिखित शब्दों में से आरम्भिक चार शब्द उपसर्ग और अन्तिम चार शब्द प्रत्यय के से बने हैं। उदाहरण के मूल शब्द, उपसर्ग और प्रत्यय को अलग-अलग करके लिखिए :

अक्षय	=	अ + क्षय	अप्रिय	=	
अन्याय	=		असमानता	=	
प्राणहीन	=	प्राण + हीन	दन्तहीन	=	
विवेकहीन	=		कर्महीन	=	

कुछ और काम

1. ईश्वरीय मार्गदर्शन की मूलभूत शिक्षाएँ क्या हैं? अपने शिक्षक से मालूम करके लिखि

ाठ - 11

अंटार्कटिका

धरती के दो-तिहाई भाग पर ासागर फैला हुआ है। बाक़ी एक ाई भाग स्थल है। यह स्थलीय भाग त बड़े-बड़े महादेशों में बँटा हुआ है। में से एक का नाम अंटार्कटिका है। क्षिणी ध्रुव के निकट यह एक बहुत ा स्थलीय प्रदेश है। इसका क्षेत्रफल करोड़ 55 लाख वर्ग किलोमीटर है। संसार का सबसे ज़्यादा ठण्डा प्रदेश यहाँ का तापमान -70° सेंटीग्रेड है। ाँ प्रायः बर्फ़ीले तूफ़ान चलते हैं। ानों का वेग प्रायः 80 से 100 किलोमीटर प्रति घंटा होता है। यहाँ धरती की सतह ाई नहीं देती। यहाँ का लगभग 98 प्रतिशत भाग हमेशा बर्फ़ की चादर से ढका रहता जिसकी मोटाई सामान्यतः 2 से 3 किलोमीटर तक है। कहीं-कहीं तो यह तह 1800 तक आँकी गई है। इस महाद्वीप में बर्फ़ के नीचे दबी एक बड़ी पर्वत-शृंखला का ा लगा है। यह पर्वत-शृंखला कहीं-कहीं पर समुद्रतल से 4875 मीटर तक ऊँची है। ाँ बर्फ़ के रूप में सम्पूर्ण विश्व के अलवणीय निर्मल जल का लगभग 70 प्रतिशत भाग
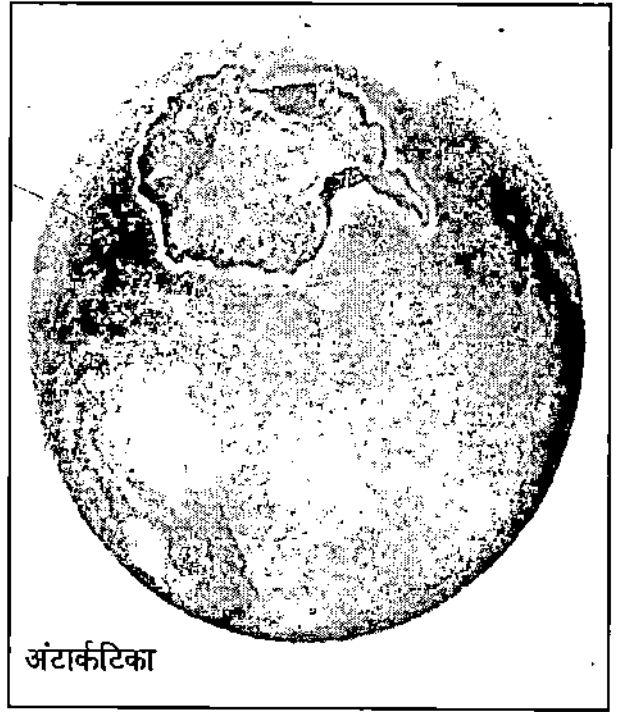
अंटार्कटिका

संचित है। साल में सिर्फ़ दो-तीन महीनों के लिए थोड़े-से भू-भाग से बर्फ़ हटती है
अत्यधिक ठण्ड के कारण यहाँ साँस लेना भी कठिन है। आँधी चलने पर यहाँ पैरों
निशान मिट जाते हैं और ख़ेमों तथा मकानों का अस्तित्व बर्फ़ में खो जाता है। इसलि
यहाँ गंतव्य को तलाशना बहुत कठिन काम है। यहाँ का अधितर भू-भाग एक विश
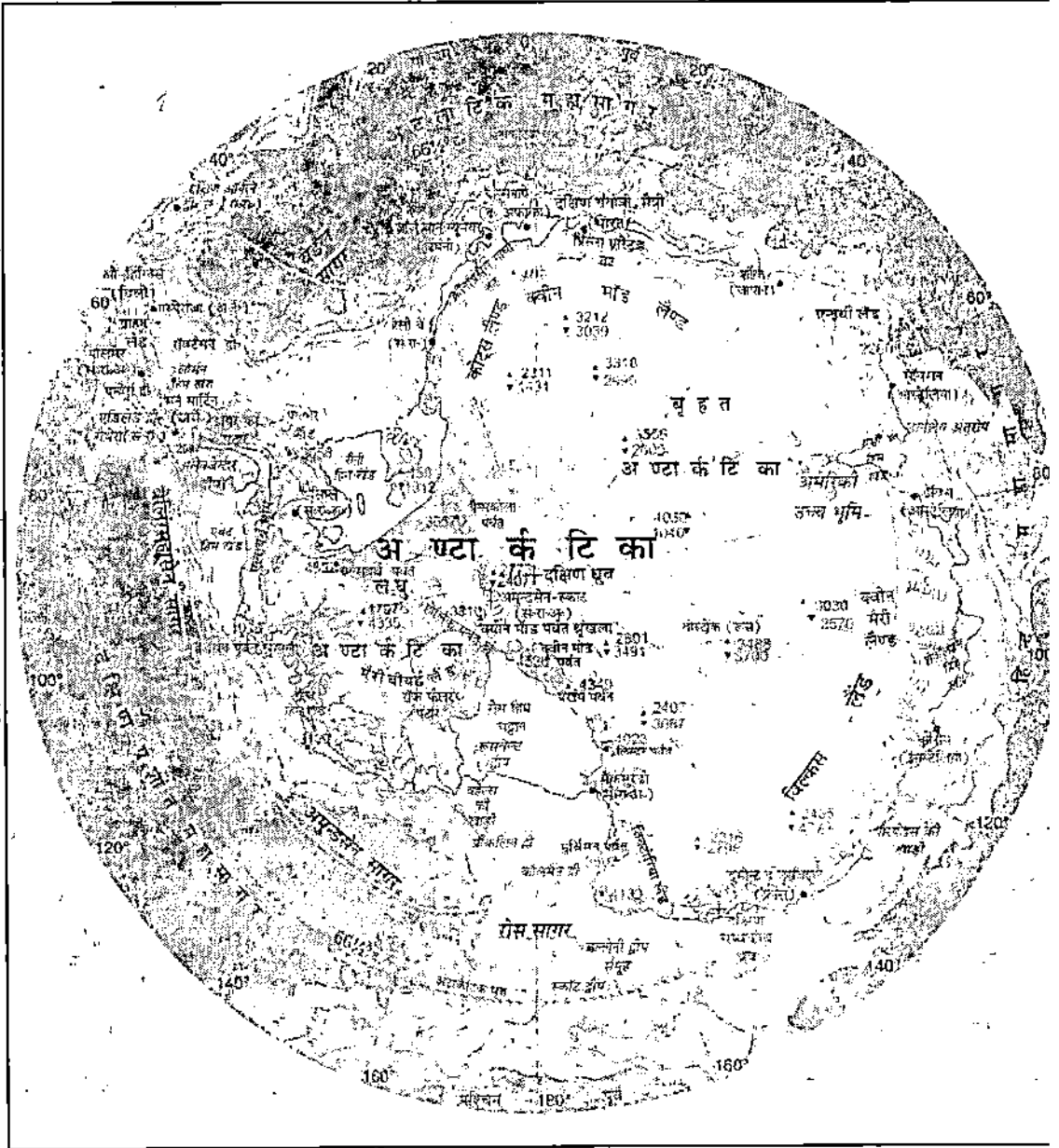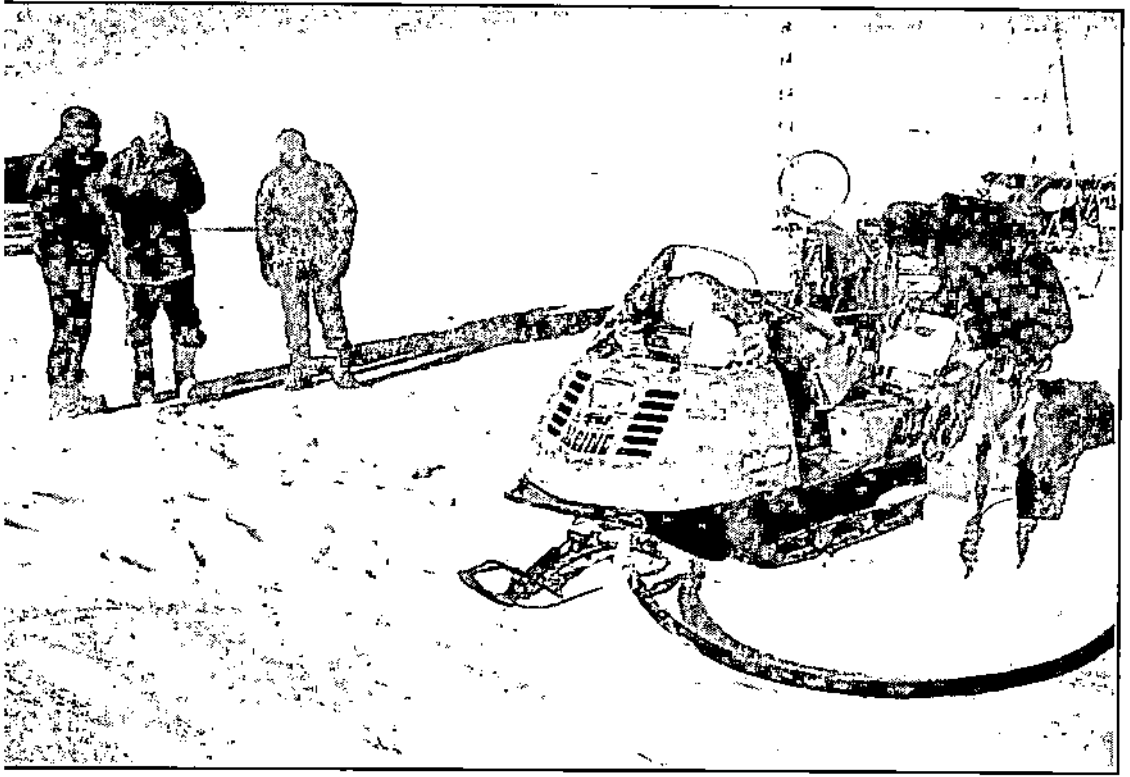
ार है, जिसकी औसत ऊँचाई समुद्र तल से 2000 से 3000 मीटर तक है। इस प्रकार ाँ भूमि ऊँचे-नीचे पठारों और ढलानवाली है। समतल मैदान बहुत कम है।

वैज्ञानिकों का अनुमान है कि करोड़ों वर्ष पूर्व सारे भू-भाग एक साथ जुड़े हुए थे। ोष रूप से आस्ट्रेलिया, दक्षिण अमेरिका, अफ़्रीक़ा, मडागास्कर और भारतीय प्रायद्वीप ार्कटिका से जुड़े हुए थे। अतः उस संयुक्त भू-भाग का नाम 'गोंडवाना लैंड' रखा ा। कालान्तर में यह संयुक्त भू-भाग धरती की गति और आन्तरिक परिवर्तनों के ण सात भागों में बँट गया। ये सातों भू-भाग धीरे-धीरे एक-दूसरे से अलग हो गए र इनके मध्य बड़े-बड़े महासागर उपस्थित हो गए। इन भू-भागों को महादेश और ोय भागों को महासागर कहा गया। अब भी ये भू-भाग अपनी जगह से धीरे-धीरे सक रहे हैं।

अंटार्कटिका के बारे में 1840 ई॰ तक यह धारणा थी कि यह समुद्र की सतह केवल बर्फ़ की एक मोटी तह है। लेकिन अब यह पता चल गया है कि अंटार्कटि वास्तव में बहुत-से द्वीपों का एक समूह है। यह पृथ्वी का अन्तिम दक्षिणी छोर इसलिए इसे 'दक्षिणी ध्रुव' कहते हैं। इसके चारों ओर आर्कटिक महासागर फैला हु है।

यहाँ ठण्ड के कारण कोई भी वस्तु बहुत दिनों तक सड़ती-गलती नहीं। इसलि खाने-पीने की चीज़ें यहाँ जितने दिन चाहें सुरक्षित रख सकते हैं। एक अन्वेषक ने यहाँ तक कहा है कि इस क्षेत्र को भविष्य में खाद्य-सामग्री के सुरक्षा-भण्डार के रूप इस्तेमाल किया जा सकता है। यहाँ अत्यधिक ठण्ड के कारण बीमारी के कीटाणु जीवित नहीं रह पाते। यहाँ पेंगुइन पक्षी, भारी-भरकम ह्वेल मछली, समुद्री शेर इत्य पाए जाते हैं। यहाँ मुख्य रूप से काई ही देखने को मिलती है। कहीं-कहीं घास-फूस उ फूल इत्यादि उग आते हैं।

यह क्षेत्र उत्साही व्यक्तियों को हमेशा से खोज के लिए चुनौती देता रहा है। पृथ्वी के इस अन्तिम दक्षिणी छोर तक पहुँचने का बहुतों ने प्रयास किया। इस सम्बन्ध में पहला प्रयास पाँच साहसी अंग्रेज़ों ने सन् 1774 ई॰ में किया था। लेकिन वे वहाँ पहुँचने में सफल न हो सके। इसके बाद बहुत-से दलों ने यहाँ पहुँचने की कोशिश की। सर्वप्रथम सन् 1911 ई॰ में नार्वे के अभियान दल को

ार्कटिका पहुँचने में सफलता मिली। रोल्ड के नेतृत्व में यह अभियान दल कुत्तों द्वारा
ची जानेवाली स्लेज गाड़ी का प्रयोग करके 14 दिसम्बर 1911 ई॰ को वहाँ पहुँचा और
ा ने यहाँ झंडा फहराया। इस अभियान दल के बाद एक और अभियान दल स्टॉट के
ृत्व में दक्षिणी ध्रुव के लिए रवाना हुआ। यह दल पहले दल की अपेक्षा एक माह देर
पहुँचा और वापसी में खाद्य-सामग्री का अभाव हो गया। दुर्गम मार्ग और बर्फ़ीले तूफ़ान
फँसकर तबाह हो गया। इसके बाद विभिन्न देशों के वैज्ञानिकों में इस क्षेत्र में पहुँचने
ा होड़ लग गई। तभी से यहाँ अभियान दल के आने का क्रम जारी है।

अंटार्कटिका में सर्वप्रथम 'मोमिटडो स्टेशन' नामक नगर सन् 1956 ई॰ में बसाया
या, जिसकी कुल जनसंख्या 2000 थी। यहाँ विभिन्न देशों के वैज्ञानिक बस्तियाँ बसाने
ा प्रयास करते रहे हैं। उनमें से कुछ को इसमें सफलता भी मिली है। यहाँ की
रिस्थितियाँ आवास के अनुकूल नहीं हैं। इसलिए आवास के लिए ऐसी अनुकूल जगह
ी तलाश करनी पड़ती है, जहाँ तूफ़ानी हवाओं से बचा जा सके और प्रयोगशाला को
रक्षित रखकर वैज्ञानिक अनुसंधान किया जा सके। केवल फ़रवरी और मार्च में यहाँ
ातावरण थोड़ा शान्त होता है। तूफ़ान कम उठते हैं। समुद्र जहाज़रानी के योग्य हो
ाता है। अतएव वैज्ञानिक इन्हीं महीनों में अंटार्कटिका की यात्रा करते हैं।

भारतीय अभियान दल भी यहाँ आते रहे हैं। भारत का पहला अभियान दल सैयद
ज़हूर क़ासिम के नेतृत्व में समुद्र-विकास-विभाग, भारत सरकार की ओर से भेजा गया।
ह दल 6 दिसम्बर 1981 ई॰ को रवाना हुआ और 9 जनवरी 1982 ई॰ में अंटार्कटिका
हुँच गया। इस दल में अनेक क्षेत्रों के विशेषज्ञ शामिल थे। अभियान दल ने एक
ुपयुक्त स्थल की खोज की और एक यंत्रचालित मानसून केन्द्र की स्थापना की। दल
के सदस्यों ने भूगर्भ विज्ञान, मौसम विज्ञान, सूचना-संचार तथा भू-चुम्बकीय विज्ञान-सम्बन्धी
कई प्रयोग किए। अपने देश भारत से सीधा संपर्क स्थापित करने के लिए ट्रांसमीटर भी

लगाया। अब तो हमारे देश से हर साल एक अभियान दल अंटार्कटिका जाता है, क्यों
वहाँ पर खोज करना वैज्ञानिकों के लिए बहुत रोमांचकारी बन गया है और आशा क
जा रही है कि वहाँ किए जानेवाले प्रयोगों द्वारा पृथ्वी के गर्भ की रचना और इसव
उत्पत्ति और विकास के बारे में अनेक जानकारियाँ निकट भविष्य में प्राप्त होंगी।

वैज्ञानिकों का अनुमान है कि इस महाद्वीप में तेल, कोयला, ताँबा, एंटीमनी, ले
क्रोमियम, टिन, क्वार्ट्ज़, ग्रेफ़ाइट तथा सेडीमेंटरी फ़ॉस्फ़ेट जैसे बहुमूल्य खनिजों
भण्डार पाए जाते हैं। अनेक देशों के वैज्ञानिक इन खनिज पदार्थों को निकालने अं
जीवन-सामग्री के स्रोतों की खोज में जुटे हुए हैं। विज्ञान को 21वीं शताब्दी में अंटार्कटि
पर बहुत-सी उम्मीदें हैं। इसी कारण इसे 'विज्ञान के लिए समर्पित महाद्वीप' भी क
गया है।

अंटार्कटिका वास्तव में अन्वेषणों की एक लम्बी यात्रा की प्रतीक्षा में है। इस
विषय में हमारी खोज अभी आरम्भ स्थिति में है। अतः निरन्तर प्रयास जारी रखने क
आवश्यकता है। वास्तविकता यह है कि जीवन-सामग्री के विपुल भण्डार जल और थ
में छिपे हुए हैं। हमारी उत्तरोत्तर बढ़ती हुई आवश्यकताएँ और विज्ञान की प्रगति य
अपेक्षा करती है कि हम नए संसाधनों की खोज में निरन्तर लगे रहें। इसी के साथ य
भी आवश्यक है कि उपलब्ध संसाधनों का दुरुपयोग न होने दें। उनका अनावश्य
दोहन और शक्ति-साधनों की सम्पन्नता की होड़ से दुनिया को बचाया जाए। यह हमा
नैतिक ज़िम्मेदारी है। ऐसा करके ही हम दुनिया में शान्तिपूर्वक जी सकते हैं अं
प्राकृतिक सम्पदा से लाभान्वित हो सकते हैं।

ब्दार्थ और टिप्पणी

महादेश	=	महाद्वीप, पृथ्वी के पाँच बड़े-बड़े स्थलों में से प्रत्येक, समुद्र द्वारा आपस में कटे हुए बड़े-बड़े भू-भाग
कालान्तर	=	समय बीतने पर, बाद का समय
आन्तरिक	=	भीतरी, अन्दर का
परिवर्तन	=	बदलाव
अस्तित्व	=	वुजूद, हस्ती, विद्यमान होना
अन्वेषण	=	खोज, आविष्कार, शोध
चुनौती	=	ललकार, चैलेंज
उत्तरोत्तर	=	लगातार, क्रमशः, एक से बढ़कर एक
सम्पदा	=	सम्पत्ति, वैभव, धन-दौलत
अभियान	=	मुहिम, किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति के लिए दल-बल के साथ चल पड़ना
नेतृत्व	=	अगुवाई, मार्गदर्शन, रहनुमाई
जीवन-सामग्री	=	जीविका के साधन, जीवन-साधन
विपुल	=	बहुत अधिक, अत्यधिक, प्रचुर

अभ्यास

ाषय-बोध

क) मौखिक

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. अंटार्कटिका कहाँ स्थित है?

2. अंटार्कटिका में कितना तापमान रहता है?

3. संसार का भू-स्थलीय भाग कितने हिस्सों में बँटा है? उनके नाम बताएँ।

4. अंटार्कटिका के चारों ओर कौन-सा महासागर फैला है?

5. भारत का पहला अभियान-दल कब और किसके नेतृत्व में अंटार्कटिका भेजा गया?

(ख) लिखित

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. अंटार्कटिका का धरातल और मौसम कैसा है?

2. 'गोंडवाना लैंड' किसे कहते हैं?

3. अंटार्कटिका में खाद्य-सामग्री बहुत दिनों तक क्यों नहीं सड़ती?

4. अंटार्कटिका में किस प्रकार के जीव-जन्तु पाए जाते हैं? उनके नाम लिखें।

5. अंटार्कटिका महादेश में अभियान-दल भेजने के क्या उद्‌देश्य हैं?

6. अंटार्कटिका में कौन-कौन-से बहुमूल्य खनिजों के भण्डार पाए जाने की संभावना है?

(ग) रिक्त स्थानों की पूर्त्ति कीजिए :

1. सर्वप्रथम सन् 1911 ई. में.........के अभियान को अंटार्कटिका पहुँचने में सफलता मिर्ल

2. अंटार्कटिका में सर्वप्रथम........नामक नगर बसाया गया।

3. केवल फ़रवरी और मार्च में वहाँ का वातावरण थोड़ा.........रहता है।

4. भारत का पहला अभियान-दल..........की ओर से भेजा गया।

5. अंटार्कटिका वास्तव में.........की एक लम्बी यात्रा की प्रतीक्षा में है।

(घ) सही वाक्य में 'सही' ☑ का और ग़लत वाक्य में 'ग़लत' ☒ का निशान लगाइए :

1. अंटार्कटिका महाद्वीप का क्षेत्रफल 1 करोड़ 55 लाख वर्ग किलोमीटर है। (

2. अंटार्कटिका में तूफ़ानों का वेग 200 किलोमीटर प्रति घंटा होता है। (

3. अंटार्कटिका महाद्वीप का 70 प्रतिशत भाग सालों भर बर्फ़ से ढका रहता है। ( )

4. अंटार्कटिका में सामान्यतः हर जगह 800 फ़ुट मोटी बर्फ़ की तह जमी रहती है। ( )

5. अंटार्कटिका में जीवन-सामग्री के विपुल भण्डार जल और थल में छिपे हुए हैं। ( )

6. अंटार्कटिका को 'विज्ञान के लिए समर्पित महाद्वीप' भी कहा गया है। ( )

षा-बोध

नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए :

वह स्कूल गया।   वह घर नहीं गया।

उपर्युक्त वाक्यों में पहला वाक्य सकारात्मक है और दूसरा वाक्य नकारात्मक। जिस वाक्य से किसी बात या काम के होने या करने का बोध होता है, उसे सकारात्मक वाक्य कहते हैं और जिस वाक्य से किसी बात या काम के न होने या न करने का भाव प्रकट होता है, उसे नकारात्मक वाक्य कहते हैं।

उपर्युक्त उदाहरणों के अनुसार सकारात्मक वाक्यों को नकारात्मक वाक्यों में और नकारात्मक वाक्यों को सकारात्मक वाक्यों में बदलिए :

अहमद पढ़ता है।	शाहिदा स्कूल जाएगी।	मैं आज घर नहीं जाऊँगा।
उसने खाना नहीं खाया।	यह चिड़िया छोटी है।	शबाना सोएगी।
नदीम स्कूल नहीं गया।	आम का पेड़ बड़ा नहीं है।	वह हँसता है।

उदाहरणों के अनुसार संज्ञा शब्दों से विशेषण शब्द बनाइए :

समानता = समान	अधिकार = अधिकारी
सरलता = ...	सुख = ...

कठोरता = ...	ज्ञान = ...
सफलता = ...	रोग = ...
प्रसन्नता = ...	लोभ = ...

कुछ और काम

1. मानचित्र में अंटार्कटिका महादेश खोजिए और उसका मानचित्र बनाइए।

2. विश्व के मानचित्र में महादेशों और महासागरों की भौगोलिक स्थिति का अवलोकन कीजि

महादेशों और महासागरों के नाम इस प्रकार हैं :

महादेश : 1. एशिया, 2. यूरोप, 3. उत्तरी अमेरिका, 4. दक्षिणी अमेरिका, 5. अफ़रीक़ा, 6. आस्ट्रेलिया और 7. अंटार्कटिका।

महासागर : 1. अट्लांटिक महासागर, 2. हिन्द महासागर, 3. आर्कटिक महासागर, और 4. प्रशान्त महासागर।

ठ - 12

इस्लाम का आरम्भ

इस्लाम का अर्थ है आज्ञाकारिता और समर्पण। यह एक पूर्ण जीवन-व्यवस्था है, ालिए यह जीवन के हर क्षेत्र को अपने अन्दर समाहित किए हुए है। यह जीवन-व्यवस्था ानव-जाति के लिए ईश्वर की ओर से भेजी गई है। इस्लाम को स्वीकार करने का अर्थ ईश्वर के आदेश और विधान को स्वीकार करके तदनुकूल जीवन व्यतीत करना। ऐसा रनेवाला व्यक्ति 'मुसलिम' कहलाता है।

सृष्टि की प्रत्येक वस्तु ईश-विधान का पालन कर रही है। किसी वस्तु की उत्पत्ति ं साथ ही उसके प्राकृतिक नियम उसके साथ जुड़ जाते हैं। आग, पानी, हवा, धरती, ाकाश इत्यादि सभी वस्तुएँ अपने सृष्टिकर्त्ता के नियमों का पालन कर रही हैं। अतः वे ाब प्राकृतिक रूप से मुसलिम हैं। उनके अन्दर नियमों की अवहेलना करने की क्षमता ौर विचार की स्वतंत्रता नहीं होती। इसलिए वे अपने प्राकृतिक मार्ग से विचलित नहीं ोतीं।

मानव को ईश्वर ने अपनी सृष्टि में सर्वाधिक योग्यता का अधिकारी बनाया है। से विवेक और विचारों की स्वतंत्रता प्रदान करके श्रेष्ठ पद पर आसीन कर दिया है। श्वर इस स्वतंत्रता और उच्च पद की गरिमा की परीक्षा लेना चाहता है कि कौन हमारी आज्ञा का पालन करता है और कौन इसकी अवहेलना करके अपनी प्रकृति से विद्रोह

करता और उत्पात मचाता है। विचार और व्यवहार की स्वतंत्रता के कारण इसके सा
दोनों मार्ग खुले हुए हैं। जो लोग अपनी प्रकृति अर्थात् ईश्वर के नियमों की रक्षा अ
पालन करते हैं, वे ईश्वर के निर्माण और विकास-कार्य में अनुकूल दिशा की ओर अग्र
होते हैं। अतः वे ईश्वर के प्रियजन हैं और ऐसे ही लोग लोक और परलोक दोनों
सफल होते। इसके विपरीत कुछ लोग अपनी प्रकृति और ईश-विधान से विमुख हो
विश्व में उत्पात मचाते हैं और अपनी राह में काँटे बिछाते तथा स्वयं अपना अहित क
हैं। वे ईश्वर के कोपभाजन बनते हैं और ऐसे ही लोग अल्लाह के दरबार में अपमा
और तिरस्कृत होंगे।

इस्लाम की शिक्षा के अनुसार सम्पूर्ण मानव-जाति एक ही आदि पुरुष — हज़
आदम (अलैहिस्सलाम) — की सन्तान और एक परिवार है। रंग, नस्ल, रूप, भाषा, क्षे
इत्यादि के अन्तर के कारण इनसानों के बीच भेदभाव करना अपराध है। वही मनु
श्रेष्ठ है जिसके विचार, गुण और आचरण अच्छे हों और जो व्यक्ति विचार, गुण अ
आचरण में बुराई को अपनाता है, वह बुरा मनुष्य है। अतः मानव-मानव के बी
ऊँच-नीच, भेदभाव के अन्य सभी मानदण्ड ग़लत और ईश्वरीय शिक्षा के विरुद्ध हैं

अज्ञानी लोगों ने जाति, भाषा, रंग, नस्ल, धन-दौलत, देश और क्षेत्र इत्यादि
श्रेष्ठता का मानदण्ड बना रखा है। इसी के आधार पर वे दूसरों के साथ भेदभाव अ
शत्रुता का व्यवहार करते एवं अपने इस अधम कृत्य को उचित ठहराने का हर सम्भ
प्रयास करते हैं।

मानव की उत्पत्ति के साथ ही उसकी प्रकृति के अनुकूल ईश-विधान अथ
इस्लाम का आरम्भ हो गया। मानव-जाति के विशिष्ट गुणों के कारण ही उसके मार्गदर्श
की विशेष व्यवस्था की गई। प्राकृतिक रूप से उसके शारीरिक अंग — आँख, का
नाक, मुँह, हृदय, फेफड़े इत्यादि ईश्वरीय विधान का अनुपालन करते हैं, लेकिन मन अ

छाएँ विविध दिशाओं में कार्य करती हैं। अतः उन दिशाओं में ईश्वरीय मार्ग का ज्ञान
न्त करने की व्यवस्था अनिवार्य हो गई, ताकि उनको ग़लत मार्ग से सुरक्षित रखा जा
के। इस व्यवस्था का नाम 'रिसालत' अर्थात् ईश-दूतत्व है। मानव-जाति में से ही किसी
तम प्रकृति के व्यक्ति के पास ईश्वर अपना फ़िरिश्ता (दिव्य दूत) भेजकर मार्गदर्शन
रता है। मार्गदर्शन पानेवाला वह व्यक्ति ईश-दूत, पैग़म्बर अथवा रसूल कहलाता है।

रसूल उन ईश्वरीय शिक्षाओं को स्वयं अपनाता है और उनका प्रचार-प्रसार करके
नव-समाज को एक ईश-विधान पर संगठित करता है। सद्बुद्धि और अच्छे विचारवाले
ग रसूल का साथ देते हैं। जो लोग कृतघ्न होते हैं, ईश-विधान को झुठलाते और रसूल
ा विरोध करते हैं, उन विरोधियों के समक्ष रसूल अकाट्य प्रमाणों से ईश्वरीय नियमों
ी सत्यता सिद्ध करते हैं। सच्चाई स्पष्ट हो जाने पर बहुत-से विरोधी अपना विरोध
ागकर ईश-मार्ग अपना लेते हैं। हठधर्मी और दुराचारी लोग विरोध तेज़ कर देते हैं और
ापरीत मार्ग पर चलते रहते हैं। जब वे सत्य का विरोध करने और उसे उखाड़ फेंकने
जी-जान से लग जाते हैं तो ईश्वरीय आदेश से उन्हें कुचल दिया जाता है। कभी
श-भक्तों से युद्ध और संघर्ष के द्वारा, तो कभी प्राकृतिक प्रकोपों – भूकम्प, आँधी,
लवृष्टि, रोग इत्यादि – के द्वारा उनका विनाश हो जाता है।

धरती पर पहले मानव हज़रत 'आदम' (अलैहि०) थे। उनकी जीवन-संगिनी
ज़रत 'हव्वा' (अलैहि०) थीं। धरती के किस भाग में उनका पदार्पण हुआ था, निश्चित
रुप से कुछ कहना कठिन है। यह लाखों साल पुरानी घटना है, इसलिए उसके चिह्न
मेट गए। लेकिन उनका परिचय ईश-ग्रंथों में मिलता है। वे शान्त और शुद्ध प्रकृति के
ईश-भक्त थे। ईश्वर ने उन्हें ज्ञान और मार्गदर्शन प्रदान किया। उनके परिवार में वृद्धि
होती रही। उनकी सन्तान बढ़ती गई और धरती के दूसरे भागों में फैलती गई। उनमें
अपने बाप आदम (अलैहि०) की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार भी होता रहा और लोग अपने

प्रभु के मार्ग पर चलते रहे। समय बीतने के साथ लोग अपनी इच्छाओं के वशीभूत हो ईश-मार्ग से विचलित होते गए। जब वे ईश्वरीय आदेशों को पूर्णतः भुलाकर उत्‍ मचाने और अन्याय करने लगे, तब उन्हें सावधान करने और वही पिछला ईश्व विधान फिर से याद दिलाने के लिए अल्लाह तआला के द्वारा रसूल भेजे जाने ल संसार के विभिन्न भागों की प्रायः प्रत्येक जाति में समय-समय पर रसूल आते रहे। वे आबादियों के सजातीय और परिचित व्यक्ति थे, जो उन्हीं की भाषा में ईश्वर का सन्‍ सुनाते और उन्हें बुराई के दुष्परिणाम से डराते थे।

विभिन्न क्षेत्रों और युगों में आनेवाले रसूलों की भाषाएँ अलग-अलग होने बावजूद उनकी शिक्षाएँ एक समान थीं। वे सब एक ही ईश्वर की ओर से भेजी गई थ उनके व्यावहारिक नियमों में युग-विकास और स्थानीय आवश्यकताओं के अनु थोड़ा-बहुत अन्तर था। वे सारे नियम-क़ानून एक जाति-विशेष के लिए और युग आवश्यकताओं के अनुकूल एक सीमा तक सीमित थे।

सभी रसूलों ने अपनी जाति में ईश्वरीय धर्म (इस्लाम) का प्रचार-प्रसार किय दुष्टों का विनाश हुआ और आज्ञाकारी लोगों को ईश्वर ने सफलता प्रदान की। फि समय बीतने पर मनुष्य ने वही पिछली ग़लती दोहराई। वह अपनी इच्छाओं के वशी होकर अपने कमज़ोर भाइयों को सताने लगा और जीवन को कुमार्ग पर डाल दिया। इ प्रकार यह प्रक्रिया उस समय तक दोहराई जाती रही जब तक कि सारा संसार विक करके एक परिवार बनने के निकट न पहुँच गया।

जब सड़कें, पुल, जानवरों की सवारी, जहाज़रानी इत्यादि का विकास हुआ लोग देश-विदेश का पर्यटन और व्यापार के लिए यात्राएँ करने लगे। वे एक-दूसरे भाषा, संस्कृति और विचारों से अवगत होने लगे तो ईश्वरीय सन्देश के लिए भी व्याप क्षेत्र तैयार हो गया। अब मनुष्यों की स्वाभाविक माँग भी उत्पन्न हो गई कि वे बि

न रहकर एक मानव-समुदाय के रूप में संगठित हो जाएँ। दयालु और कृपालु ईश्वर
ानव के उपकार हेतु उसकी माँग और आवश्यकताओं के अनुकूल सम्पूर्ण मानव-जाति
लिए एक व्यापक जीवन-व्यवस्था के साथ एक रसूल भेजा। उनका नाम हज़रत
म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) है। वे अरब देश में पैदा हुए । अरब भौगोलिक
ष्ट से घनी आबादीवाले क्षेत्रों के मध्य स्थित है। अरब की भाषा उस समय संसार की
ी भाषाओं से उत्कृष्ट और व्यापक शिक्षाओं को अपनाने की क्षमता से परिपूर्ण थी।
के बीच हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) एक ज्योति के समान उदित हुए। आप (सल्ल॰) पर
वरीय वाणी 'पवित्र क़ुरआन' का अवतरण हुआ। पवित्र क़ुरआन पूरी मानव-जाति के
ए ईश्वरीय मार्गदर्शन है और इसमें सम्पूर्ण मानव-जाति के लिए सर्वांगपूर्ण जीवन-व्यवस्था
। इसकी शिक्षाएँ प्रत्येक देश, क्षेत्र और काल के लिए समान रूप से उपयोगी और
वहार-योग्य हैं। इसलिए विद्वानों ने इस्लाम को सर्वरोग निवारक औषधि कहा है।
सकी शिक्षाओं में अत्यन्त व्यापकता, सुगमता तथा व्यावहारिकता पाई जाती है।
स्लामी शिक्षाओं में सम्पूर्ण जगत् की आवश्यकताओं की रिआयत और पूर्ववर्त्ती समस्त
श-ग्रंथों की शिक्षाओं का सार है। यह समस्त ईश्वरीय ग्रंथों का अन्तिम और सर्वांगपूर्ण
स्करण है। अतः यह सम्पूर्ण मानव-जाति का समान धरोहर है। ईश्वर की ओर से इस
रिमार्जित व्यवस्था की सुरक्षा हेतु बड़ी उत्तम और सटीक व्यवस्था की गई, ताकि यह
नन्त काल तक शुद्ध और अक्षुण्ण रह सके और प्रत्येक युग में मानवता का मार्गदर्शन
रती रहे। इन सुरक्षा व्यवस्थाओं और इनकी वैज्ञानिक परख एवं अध्ययन हेतु पर्याप्त
ामग्रियाँ उपलब्ध हैं।

ईश-मार्गदर्शन के व्यापक और सुरक्षित होने के बाद अब नए रसूल के आने की
ावश्यकता नहीं रही। इसलिए ईश्वर ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के अन्तिम रसूल होने
ा एलान कर दिया और 'दीन' (जीवन-व्यवस्था) की परिपूर्णता की घोषणा कर दी।
ादिकाल से हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) तक अनगिनत पैग़म्बर आए। उनकी सही-सही

गिनती ईश्वर को ही मालूम है। उनमें से अधिकांश के नाम अब सुरक्षित नहीं हैं। कुछ महान पैग़म्बरों के नाम हमें पवित्र क़ुरआन में मिलते हैं, जैसे हज़रत नूह, हज़् इबराहीम, हज़रत इसमाईल, हज़रत इसहाक़, हज़रत याक़ूब, हज़रत लूत, हज़रत शु हज़रत यूनुस, हज़रत यूसुफ़, हज़रत दाऊद, हज़रत सुलैमान, हज़रत मूसा, हज़रत यह हज़रत ईसा, हज़रत मुहम्मद इत्यादि (सबपर ईश्वर की अनन्त कृपा और शान्ति ह सारे नबियों पर समान रूप से ईमान लाना अर्थात् उन्हें सच्चा और अपना मार्गद: स्वीकार करना इस्लाम की मौलिक धारणाओं का अनिवार्य अंग है। फिर भी कुछ ल भ्रमवश केवल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को ही इस्लाम का पैग़म्बर मानते हैं और उ को इस्लाम धर्म का संस्थापक समझते हैं, जबकि इस्लाम का आरम्भ तो पहले मा हज़रत आदम (अलैहि॰) से ही हो गया था। हज़रत आदम (अलैहि॰) प्रथम 'मुसलिम'

इस्लाम धर्म पर विश्वास रखनेवालों के लिए ईश्वर ने जो नाम निर्धारित कि वह 'मुसलिम' (आज्ञाकारी) है। मुसलमान को 'मुहम्मदी' या 'मुहम्मडन' कहना सव अनुचित है, क्योंकि मुसलमान केवल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के ही अनुयायी नहीं ब प्रायः समस्त पैग़म्बरों के भी अनुयायी हैं।

इस्लाम मानव-निर्मित धर्म नहीं। यह पैग़म्बरों द्वारा लाया हुआ एक ईश्वरीय है। सारे पैग़म्बर मानव थे और उन्होंने अपनी इच्छा और अपनी बुद्धि से नियम क़ानून नहीं बनाए। उन्होंने स्वयं ईश्वर का आदेश स्वीकार किया और उसे ही लोगों पहुँचाया। स्वयं अपने जीवन को ईश्वरीय नियम के अनुकूल ढालकर लोगों के लिए आदर्श प्रस्तुत किया। इसलिए उनके आचरण एवं व्यवहार को सुन्नत (सुगम कल्याणकारी मार्ग) के रूप में स्वीकार किया जाता है।

इस्लाम की कुछ मौलिक धारणाएँ हैं जिन्हें 'अक़ीदा' (विश्वास, आस्था) क जाता है और कुछ व्यावहारिक तथा अनिवार्य कर्तव्य हैं जिन्हें अरकाने-इस्लाम (इस्

आधार स्तम्भ) कहते हैं। सारे ही रसूलों की शिक्षाओं और ईश-ग्रंथों में समान रूप से दोनों तत्त्व होते हैं। सारे मुसलमानों को उसे स्वीकार करना और उसके अनुरूप हार करना अनिवार्य है। इसके द्वारा एक सार्वभौमिक एकता और समता की स्थापना ा है।

ब्दार्थ और टिप्पणी

समर्पण = सौंपना

तद्नुकूल = उसके अनुसार

सृष्टि = रचना, तख़लीक़ (सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड)

सृष्टिकर्त्ता = रचयिता, ख़ालिक़, ईश्वर

उत्कृष्ट = उन्नत, श्रेष्ठ, उत्तम

आसीन = बैठा हुआ, विराजमान

स्वेच्छा = अपनी इच्छा मानने वाला

परिमार्जित = साफ़ किया हुआ, सुधारा हुआ

उत्पात = उपद्रव, फ़साद, ऊधम

दुष्परिणाम = बुरा नतीजा

समुदाय = गरोह, फ़िरक़ा, समूह

अक्षुण्ण = समूचा, अखण्डित

प्रक्रिया = इस्तेमाल का तरीक़ा,

समाहित = एकत्रित, समाया हुआ

अवहेलना = नज़र अन्दाज़, उपेक्षा, अवज्ञा करना

क्षमता = सलाहियत, शक्ति, सामर्थ्य

उत्पत्ति = पैदाइश, जन्म, जन्म-स्थान, उद्गम

प्रकृति = स्वभाव, क़ुदरत

विवेक = समझ, भले-बुरे को समझने की बौद्धिक क्षमता

गरिमा = गौरव

धरोहर = अमानत, थाती

कृतघ्न = नाशुक्रा, उपकार न

पर्याप्त = काफ़ी

अनुयायी = पीछे चलनेवाला, पैरोकार, अनुगामी

कर्तव्य = करणीय, करने योग्य, काम

विचलित = मार्ग से हटा हुआ, डिगा हुआ

कुमार्ग = बुराई का रास्ता, ग़लत रास्ता, बुरा मार्ग

सार्वभौमिक = सभी जगह मौजूद, सम्पूर्ण पृथ्वी

	विधि, प्रक्रम, अमल		पर फैला हुआ
संस्थापक =	स्थापना करनेवाला	पर्यटन	= इधर-उधर घूमना, देश-दर्शन
कोपभाजन =	कोप का पात्र,		मनोरंजन के लिए देश-विदेश
	गुस्से का शिकार		दर्शनीय स्थलों की यात्रा, दूर

अभ्यास

विषय-बोध

(क) मौखिक

निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. मनुष्य दूसरे जीवों से श्रेष्ठ क्यों है?
2. संसार के प्रत्येक क्षेत्र में अलग-अलग रसूल क्यों भेजे गए?
3. अरब में ही अन्तिम रसूल क्यों भेजे गए?
4. किन्हीं पाँच प्रमुख रसूलों के नाम बताइए।
5. अक़ीदा और अरकाने-इस्लाम में क्या अन्तर है?

(ख) लिखित

निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. इस्लाम का क्या अर्थ है?
2. सृष्टि में व्याप्त प्राकृतिक नियमों की तुलना इस्लाम से क्यों की गई है?
3. मनुष्य को इच्छा और व्यवहार की स्वतंत्रता देकर किस बात की परीक्षा ली जा रही
4. इस्लाम में श्रेष्ठता का क्या मानदण्ड है और अज्ञानी लोगों ने श्रेष्ठता के कैसे-कैसे पै
   बना रखे हैं?

5. इस्लाम का आरम्भ और इसका विकास कब और कैसे हुआ?

6. रसूल कौन होते हैं? उनके आने के बाद उनकी जाति के लोगों की क्या स्थिति होती है?

7. अन्तिम रसूल कौन थे? उन्हें विश्वव्यापी रसूल क्यों बनाया गया?

8. मुसलमान को 'मुहम्मडन' कहना क्यों अनुचित है?

ाषा-बोध

दिए गए उदाहरणों के अनुसार निम्नलिखित का विलोम लिखिए :

आदर	= अनादर	न्याय	= अन्याय	यश	= अपयश
अधिकार	=	परिमार्जित	=	मान	= ....
आहार	=	धर्म	=	शब्द	= ....
अर्थ	=	नीति	=	हरण	= ....
आदि	=	भाव	=	वाद	= ....

छ और काम

1. चार ईश्वरीय ग्रंथों के नाम और उनके विषय में जानकारी अपने शिक्षक की सहायता से प्राप्त कीजिए।

पाठ - 13

क़ुरआन : ईश्वर का वरदान

मानव को क़ुरआन मिला है!
ईश्वर का वरदान मिला है!

चहुँदिश रातें-ही-रातें थीं,
मृत्यु, अंधता की घातें थीं,
आशाओं से दूर बहुत थे,
यानी हम मजबूर बहुत थे,
कृपा हुई धरती पर प्रभु की,
जो ऐसा सम्मान मिला है!
मानव को क़ुरआन मिला है!

ईश-शब्द कितने प्यारे हैं,
हृदय-व्योम के वे तारे हैं,
भाषा मन की, मीत वही हैं,
आशावादी गीत वही हैं।
वह कितनी शुभ घड़ी रही है,
जब हमको यह ज्ञान मिला है!
मानव को क़ुरआन मिला है!

सद्‌भावों से कोष भरेंगे,
सत्य-स्वप्न साकार करेंगे।
उसकी शिक्षाओं को जानें,
सच्चाई को हम पहचानें।
जगत्-सखा की वाणी से ही,
मानव को उत्थान मिला है!
मानव को क़ुरआन मिला है!

जागो, जागो वक़्त अभी है,
उसकी नित्य पुकार यही है,
कब तक भ्रम में ग्रस्त रहोगे?
अपने में ही मस्त रहोगे?
बेख़बरी, अज्ञान-दशा में,
कब किसको भगवान मिला है?
मानव को क़ुरआन मिला है!

— मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ 'विनय'

शब्दार्थ और टिप्पणी

अंधता = अंधापन, अंधकार

उत्थान = प्रगति, ऊँचा उठना

हृदय-व्योम = हृदय रूपी आकाश

चहुँदिश = चारों ओर

घात = दाँव-पेंच, छल, चोट, आक्रमण के लिए छिपकर की जानेवाली प्रतीक्षा

वरदान = नेमत, प्रसन्न होकर किसी को इच्छित वस्तु देना

मीत = मित्र, दोस्त
जगत्-सखा = पूरे संसार का मित्र, सबका मित्र
अज्ञान-दशा = जाहिलियत की हालत, मूर्खता, नादानी
प्रभु = पालनहार, रब

अभ्यास

विषय-बोध

(क) मौखिक

निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. इस कविता में कवि ने ईश्वर का वरदान किसे कहा है?
2. धरती पर प्रभु की क्या कृपा हुई?
3. कवि ने किसे 'हृदय-व्योम के तारे' की संज्ञा दी है?
4. किस दशा में इनसान को भगवान नहीं मिल सकता?

(ख) लिखित

निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. क़ुरआन के अवतरण के आरम्भिक काल में मानव-समाज की कैसी दशा थी? कविता के आधार पर तत्कालीन समाज का वर्णन कीजिए।
2. कवि ने इस कविता में आशावादी गीत किसे कहा है?
3. अपने सपने हम कैसे साकार करेंगे?
4. किस चीज़ से मानव को उत्थान मिला है?
5. 'जागो, जागो वक़्त अभी है' पंक्ति द्वारा कवि क्या सन्देश देना चाहता है?

(ग) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. कृपा हुई धरती पर प्रभु की,
   जो ऐसा ....!

2. उसकी शिक्षाओं को जानें,

....................हम पहचानें।

3. बेख़बरी, अज्ञान-दशा में,

कब किसको.............?

षा-बोध

यह किताब नई है।

क्या यह किताब नई है?

उपर्युक्त वाक्यों में से पहला वाक्य **विधानवाचक** है और दूसरा वाक्य **प्रश्नवाचक**। जिस वाक्य से किसी काम या बात के होने या करने का बोध होता है, उसे विधानवाचक वाक्य कहते हैं और जिस वाक्य में प्रश्न पूछा जाता है, उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहा जाता है।

उपर्युक्त उदाहरण के अनुसार विधानवाचक वाक्यों को प्रश्नवाचक और प्रश्नवाचक क्यों को विधानवाचक वाक्यों में बदलिए :

1. बिल्ली दूध पी गई।
2. क्या सक्सेना साहब आए थे?
3. चिड़िया खेत चुग गई।
4. घोड़ा दौड़ा।
5. क्या पिताजी ने खाना खाया?
6. क्या वह उर्दू भी जानता है?

छ और काम

1. उपर्युक्त कविता मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ 'विनय' के कविता-संग्रह 'क्षितिज के पार' से ली गई है। उस संग्रह में और भी बहुत-सी अच्छी-अच्छी कविताएँ हैं। पुस्तक प्राप्त करके उसे पढ़िए।

पाठ - 14

मौलाना अबुल कलाम 'आज़ाद'
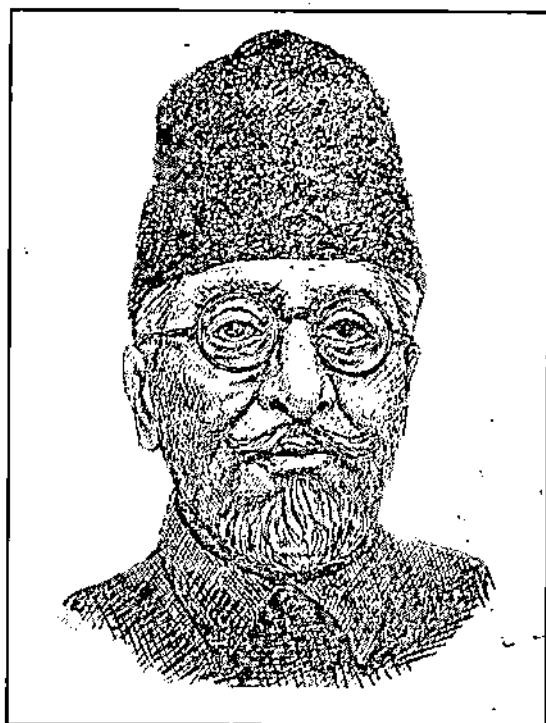
मनुष्य विवेकशील और स्वतंत्रताप्रिय प्र
है। उसकी प्रकृति में स्वतंत्रता रची-ब
है। अतः वह परतंत्रता और ग़ुलामी
पसन्द नहीं करता। किसी बाधा और वि
के कारण यदि वह परतंत्र हो जाता है
शीघ्र ही स्वतंत्रता के लिए हुँकार भ
है। फिर कोई शक्ति उसे स्वतंत्रता
वंचित नहीं रख सकती।

हमारा देश भारत लगभग दो
वर्षों तक अंग्रेज़ों का ग़ुलाम रहा। अंग्रे
सरकार के अत्याचार से भारत की ज
त्राहि-त्राहि पुकार उठी। जब उनकी दशा अत्यन्त दयनीय हो गई तो 'मरता क्या
करता' वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए भारत की जनता ने अंग्रेज़ी सरकार
विरुद्ध स्वतंत्रता आन्दोलन छेड़ दिया। क्रान्तिकारियों ने अंग्रेज़ों के छक्के छुड़ा दि
उनकी नाक में दम आ गया। अन्ततः अंग्रेज़ों ने दुम दबाकर भागने में ही अपना भ
समझा।

जिन महापुरुषों ने भारत के स्वतंत्रता-आन्दोलन का संचालन और पथप्रदर्शन या, उनमें से मौलाना अबुल कलाम 'आज़ाद' का नाम अग्रगण्य है। वे एक कुशल ा, प्रसिद्ध पत्रकार और उच्च कोटि के धार्मिक विद्वान थे।

अबुल कलाम 'आज़ाद' का मूल नाम 'फ़ीरोज़ बख़्त' था। उन्होंने अपना लक़ब हीउद्दीन' रखा। वे भाषण-कला में निपुण थे। अतः उनका नाम 'अबुल कलाम' ाक्पटु) पड़ गया। इसी अन्तिम नाम से उन्हें प्रसिद्धि मिली। आरम्भ में उनको शायरी ा भी शौक़ था। अपनी कविताओं में अपना साहित्यिक नाम 'आज़ाद' लिखते थे। रो-शायरी छोड़ देने के बाद भी 'आज़ाद' उनके नाम का अभिन्न अंग बना रहा।

अबुल कलाम 'आज़ाद' का जन्म सन् 1888 ई॰ (1305 हिजरी) में अरब देश के क्का नगर में हुआ था। उनके पिता सन् 1857 के विद्रोह के समय भारत से मक्का स्थान कर गए थे। दस वर्ष की अवस्था में सन् 1898 ई॰ में वे अपने माता-पिता के साथ ारत आ गए और कलकत्ता में ठहरे। उनके पिता मौलाना ख़ैरुद्दीन एक प्रसिद्ध सूफ़ी ौर प्रतिष्ठित धार्मिक गुरु थे।

अबुल कलाम 'आज़ाद' के पिता ने घर पर ही उनकी शिक्षा-दीक्षा का उत्तम बन्ध किया। उन्हें बचपन से ही पढ़ने-लिखने में विशेष रुचि थी। उनकी स्मरण-शक्ति ी बहुत तेज़ थी। वे जो पढ़ते उसे कंठाग्र कर लेते। उन्हें पुस्तकों की पृष्ठ संख्या और ंक्तियाँ तक याद रहती थीं। उनकी प्रतिभा 'होनहार बिड़वान के होत चीकने पात' ाली कहावत को चरितार्थ कर रही थी।

अबुल कलाम 'आज़ाद' जब चौदह वर्ष के थे तो एक दिन कलकत्ता के राष्ट्रीय ुस्तकालय में पुस्तकें पढ़ने के लिए पहुँचे। उन्होंने प्रवेश के लिए पुस्तकालयाध्यक्ष से अनुमति माँगी। अध्यक्ष महोदय उस छोटे-से बालक की उत्सुकता देखकर चकित रह ाए, परन्तु अयोग्य समझकर प्रवेश की अनुमति नहीं दी। उत्सुक और महत्त्वाकांक्षी

बालक ने बताया कि वह अरबी-फ़ारसी पढ़ना जानता है। जो पुस्तक चाहें पढ़वाकर दे लें। उनका यह तर्क भी स्वीकार नहीं किया गया। उस दिन वह बालक विफल होव वापस लौट आया, परन्तु अपने गहन अध्ययन और कठोर परिश्रम के बल पर व बालक आगे चलकर महान विद्वान और स्वतंत्र भारत का प्रथम शिक्षा-मंत्री बना।

अल्लाह तआला ने उन्हें उत्कृष्ट भाषण करने की अपूर्व क्षमता प्रदान की थी। बचपन में भी अपने पिता की पगड़ी सिर पर रखकर ऊँचे स्थान पर खड़े हो जाते अं भाइयों-बहनों के बीच भाषण देना शुरू कर देते। वे बात करने में बड़े पटु थे। उन बातों में विद्वता भरी होती थी। इस योग्यता के कारण लोग उनसे जल्द ही प्रभावित जाते।

मौलाना 'आज़ाद' ने अल्पावस्था में ही 'अल-हिलाल' और उसके बाद 'अल-बला नामक दो उर्दू साप्ताहिक पत्र निकाले। उस समय प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918 ई॰) कारण विश्व की राजनीति में काफ़ी उथल-पुथल मची हुई थी। भारत भी उसके प्रभ से अछूता नहीं था। अबुल कलाम 'आज़ाद' ने अपने दोनों पत्रों द्वारा देशवासियों जगाया। विशेष रूप से मुसलमानों को उनसे बड़ी प्रेरणा मिली और उनकी ख्याति वि दूनी और रात चौगुनी बढ़ती गई। अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ लिखने के कारण उन्हें अंग्रेज़ों कोपभाजन बनना बड़ा और उन्हें कई बार जेल की हवा भी खानी पड़ी। 1920 ई॰ कांग्रेस के समर्थन से भारत में 'ख़िलाफ़त आन्दोलन' चलाया गया। यह आन्दोलन तु की ख़िलाफ़त (शासन) के समर्थन और भारत में भी अंगरेज़ी राज्य को समाप्त कर स्वतंत्र ख़िलाफ़त की स्थापना करने के लिए चलाया गया था। अंग्रेज़ों की ग़लत नीति के कारण तुर्की की ख़िलाफ़त का पतन हो रहा था, जिसे भारत के स्वतंत्रता-प्रेमी स नहीं कर सकते थे। अबुल कलाम 'आज़ाद' ने अपने लेखों और भाषणों के द्वारा लो को अंग्रेज़ी राज के विरुद्ध प्रेरित और उत्साहित किया। उनके लेख स्वतंत्रता आन्दोल को तीव्रता प्रदान कर रहे थे।

लेकिन ख़िलाफ़त आन्दोलन असफल हो गया। बहुत-से लोग दम साधकर बैठ । मगर अबुल कलाम 'आज़ाद' आज़ादी के मतवाले थे। वे हार माननेवाले नहीं थे। समय स्वतंत्रता आन्दोलन की बागडोर कांग्रेस के हाथ में थी। इसलिए वे उसके साथ ाकर मार्गदर्शन का काम करते रहे। वे कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर भी रहे। तत्कालीन नीतिक नेताओं की संकीर्णता और ग़लत नीति के कारण देश-विभाजन का प्रश्न उठ ा हुआ। वे देश-विभाजन के प्रबल विरोधी थे। उसके दुष्परिणामों से लोगों को ाधान करते रहे। उन्होंने एकता के लिए आधार-भूमि तैयार करने का भरसक प्रयास या। लेकिन स्थिति बिगड़ती चली गई और देश-विभाजन को टाला न जा सका। देश तो आज़ादी मिल गई लेकिन अंग्रेज़ों की 'फूट डालो और राज करो' की नीति के रण देश में साम्प्रदायिकता की आग भड़क उठी।

दूसरे नेता यदि 'आज़ाद' की योजना को सफल होने देते तो भारत-विभाजन को ला जा सकता था। उनके कई निकटतम साथियों ने भी उनके साथ विश्वासघात या। फिर भी वे लगन से कार्य करते रहे। आज़ादी के संघर्ष का विवरण उन्होंने अपनी सेद्ध पुस्तक 'इंडिया विन्स फ्रीडम' में लिखा है।

आज़ाद की गणना भारत के शीर्षस्थ नेताओं में होती थी। गाँधीजी और नेहरूजी गंभीर समस्याओं के निदान हेतु उनसे परामर्श करते थे।

'आज़ाद' राजनेता होने के साथ ही एक बड़े धार्मिक नेता भी थे। धार्मिक विषयों पर नके लेख और अनेक पुस्तकें अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। उन्होंने 'तर्जुमानुल-क़ुरआन' के नाम क़ुरआन की तफ़सीर (टीका) भी लिखी, जो पूरी न हो सकी। उन्होंने उर्दू साहित्य की सेवा की। वे लेखन की एक नई शैली के जनक थे। अहमद नगर जेल से लिखे गए नके पत्रों का संग्रह 'ग़ुबारे-ख़ातिर' उर्दू साहित्य में पत्र-लेखन का उत्कृष्ट नमूना है।

मौलाना अबुल कलाम 'आज़ाद' जनहित के कामों में और पीड़ितों की सेवा में

बहुत रुचि लेते थे। अपने वेतन में से प्रतिमाह ग़रीबों और निस्सहाय लोगों की मदद
लिए एक निश्चित राशि निकालते थे। वे लोगों की सहायता गुप्त रूप से करते थे, त
ग़रीबों का सम्मान आहत न हो।

'आज़ाद' एक निर्भीक और ईमानदार नेता थे। उन्होंने अपने विरोधियों की व
कोई परवाह नहीं की। अपने पद का उन्होंने दुरुपयोग नहीं किया, न ही कभी व
अनुचित लाभ उठाया। अपने देश और देशवासियों की भलाई और उन्नति के f
उन्होंने आजीवन कठोर परिश्रम और अथक प्रयास किया। सन् 1958 ई० में उ
देहान्त हो गया। उनका मक़बरा दिल्ली की जामा मस्जिद के आगे एक बड़े परिसर में

शब्दार्थ और टिप्पणी

त्राहि-त्राहि = रक्षा करो, बचाओ (दुख और संकट की घड़ी में सहायता की पुकार)
दयनीय = दया के योग्य (दुख की स्थिति)
अग्रगण्य = जिसकी गिनती सबसे पहले हो, प्रधान, श्रेष्ठ
निपुण = कुशल, दक्ष
लक़ब = उपाधि
वाक्पटु = बात करने में चतुर
कंठाग्र = कंठस्थ, याद
तर्क = अनुमान, दलील
ख़िलाफ़त = ख़लीफ़ा का पद, इस्लामी शासन-व्यवस्था
संकीर्णता = तंग होने का भाव, संकुचन
विश्वासघात = धोखेबाज़ी, अह्दशिकनी, धोखा, विश्वास तोड़ना
परामर्श = मशविरा, सलाह
विद्यमान = मौजू

अभ्यास

ाय-बोध

) मौखिक

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. मनुष्य परतंत्रता और ग़ुलामी को पसन्द क्यों नहीं करता?
2. अंग्रेज़ों ने भारत से भागने में ही अपना भला क्यों समझा?
3. अबुल कलाम 'आज़ाद' के बचपन का क्या नाम था?
4. मौलाना 'आज़ाद' ने किन दो साप्ताहिक पत्रों द्वारा भारतवासियों को जगाया?
5. मौलाना 'आज़ाद' द्वारा लिखित तीन पुस्तकों के नाम बताइए।
6. आज़ादी के बाद मौलाना 'आज़ाद' ने भारत सरकार के किस विभाग के मंत्रिपद पर कार्य किया?
7. मौलाना 'आज़ाद' की मृत्यु कब और कहाँ हुई?

ा) लिखित

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. अबुल कलाम 'आज़ाद' के माता-पिता भारत से मक्का प्रस्थान कर गए थे। क्यों?
2. मौलाना 'आज़ाद' का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
3. बचपन में मौलाना 'आज़ाद' की स्मरण-शक्ति कैसी थी?
4. बचपन में अबुल कलाम 'आज़ाद' भाषण कैसे देते थे?
5. मौलाना 'आज़ाद' अंग्रेज़ों के कोपभाजन क्यों बने?
6. मौलाना 'आज़ाद' ने 1920 ई॰ में कौन-सा आन्दोलन चलाया और क्यों?
7. मौलाना 'आज़ाद' ग़रीबों, ज़रूरतमन्दों और पीड़ितों की सेवा कैसे करते थे?

(ग) कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पू
कीजिए :

(कंठाग्र, इंडिया विन्स फ्रीडम, तर्जुमानुल-क़ुरआन, 'राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता', मतव
ईमानदार, दिन दूनी रात चौगुनी)

1. अबुल कलाम 'आज़ाद' को................ में प्रवेश की अनुमति नहीं मिली।

2. वे जो अध्ययन करते उसे.............कर लेते।

3. उनकी ख्याति..........बढ़ती गई।

4. अबुल कलाम 'आज़ाद' आज़ादी के..............थे।

5. 'आज़ाद' ने................ के नाम से क़ुरआन की तफ़सीर (टीका) भी लिखी।

6. 'आज़ाद' ने आज़ादी के संघर्ष का विवरण अपनी प्रसिद्ध पुस्तक.............. में लिखा है

7. 'आज़ाद' एक निर्भीक और.........नेता थे।

भाषा-बोध

1. इन मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

त्राहि-त्राहि करना, हुँकार भरना, नाक में दम आना, छक्के छुड़ाना, दुम दबाकर भागना, उथल-पुथल मचना, कोपभाजन बनना, जेल की हवा खाना।

कुछ और काम

1. अपने शिक्षक से ख़िलाफ़त आन्दोलन के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।

ाठ - 15

अंधविश्वास

उमेश बहुत दिनों के बाद अपने गाँव आया। वह दो साल पहले काम की तलाश पटना गया था। उसे काम भी मिल गया और कुछ बौद्धिक व चेतना-प्रवर मित्र भी। ह शहर क्या आया, उसे लगा कि अंधकार से निकलकर प्रकाश में आ गया, या कुएँ निकलकर सागर में पहुँच गया। उसकी आर्थिक स्थिति के साथ ही सोच में भी काफ़ी दलाव आ गया था। वह अपने क्रान्तिकारी विचारों से अपने मित्रों को भी अवगत राना चाहता था। गाँव की याद भी उसे सताती थी। अतः वह घर लौट आया। घर ाने पर उमेश के पुराने साथी और मित्र उससे मिलने आए। शाम को गाँव के चौपाल उनकी महफ़िलें ख़ूब जमने लगीं। देर रात तक नई-पुरानी बातें चलती रहतीं। उमेश ; कई पुराने मित्र उसी की तरह काम की तलाश में बाहर चले गए थे। उमेश का ाभिन्न मित्र ज़यवंश ख़ाँ था। जयवंश ख़ाँ उससे शहरी जीवन की कथा सुनकर बहुत भावित हुआ। उसके हृदय में भी शहर जाने की इच्छाएँ अंगड़ाइयाँ लेने लगीं।

उमेश के मित्रों में से कुछ ने अपनी एक टोली बना ली थी। इस टोली ने गाँव में ो लूट-पाट और चोरी का गन्दा धंधा अपना लिया था। देर रात गए लोगों के छँट जाने र यह टोली तरह-तरह के अवैध काम अंजाम दिया करती थी। कभी तो खेतों में लगी फ़सलों पर हाथ साफ़ किया करती, कभी किसी के फल तोड़ लेती, यानी जब जो मन

में आया कर गुज़रती थी। इस टोली में तो अनेक लड़के थे, लेकिन जयवंश र
आगे-आगे रहता था। जयवंश ख़ाँ बुरे लड़कों की संगति में पड़कर बिगड़ गया था। बु
संगति अच्छे परिवार के बच्चों को भी बिगाड़कर रख देती है।

जयवंश ख़ाँ धनी परिवार का लड़का था। वह जाति से ब्राह्मण था। मुसलि
शासनकाल में उसके पूर्वज राजदरबार में उच्च और निष्ठावान अधिकारी थे। राजदरब
ने उनकी सेवा से प्रसन्न होकर उन्हें 'ख़ान बहादुर' की उपाधि से सम्मानित किया थ
तब से ही 'ख़ान' शब्द उसके परिवार में नाम का अंग बना चला आ रहा है। लेकि
कालान्तर में ख़ान-परिवार की शान-शौकत जाती रही और यह परिवार ग़रीबी व
शिकार हो गया। आम जनता की बदहाली के कारण अब दान-दक्षिणा आदि में भी कं
रस नहीं रह गया था।

अब जयवंश ख़ाँ चुहल करता है। रात के अंधेरे में अपने मित्रों के साथ भूत-प्रे
बनकर लोगों को डराता है, जिसके कारण पूरे गाँव में भूत-प्रेत के चर्चे आम हैं।

जाड़े के दिन थे। शाम को चौपाल में अलाव के पास लोग बैठ जाते तो इध
उधर की बातें चल पड़तीं। एक दिन भूत-प्रेत की बात चल निकली। उमेश ने लोगों व
समझाया, "भूत-प्रेत की बातें मूर्खता और अंधविश्वास की बातें हैं। भूत-प्रेत का कं
अस्तित्व नहीं होता। भय ही भूत होता है। तुम निडर हो जाओ, भूत भाग जाएगा

लोगों ने उसकी एक न मानी। अशोक ने उसकी बात काटते हुए कहा, "तू श
से क्या आया है, अपने को ज्ञानी समझने लगा है।"

इसके बाद उमेश ने गाँववालों को भूत के भय से मुक्त कराने के लिए एक युक्ति
अपनाई।

उसने कहा, "अच्छा भाई, एक हथौड़ा और लोहे की एक मोटी कील मुझे दो।

ाँ जाकर भूत को नीम के पेड़ में ठोंक दूँगा। फिर वह गाँववालों को कभी न ताएगा।"

लोगों ने उमेश को मना किया कि वह यह ख़तरा मोल न ले। उन्होंने उसे डराया ि भूत-प्रेत बड़े शक्तिशाली होते हैं। वे तुम्हें दबोच लेंगे। लेकिन उमेश धुन का पक्का ा। वह गाँव में फैले इस अंधविश्वास को मिटाना चाहता था। उमेश के साहस और तावलेपन को देखकर सबने उत्सुकता से तमाशा देखने की ठानी और सचमुच कील ौर हथौड़ा लाकर उसको थमा दिया।

जाड़े की अंधकारपूर्ण रात्रि में उमेश चादर ओढ़े और हाथ में कील और हथौड़ा ाए भुतहा वृक्ष के नीचे पहुँच गया। उसके हृदय में ज़रा भी भय न था। वह मन ही मन र्व और आनन्द से प्रफुल्लित हो रहा था कि आज वह गाँववालों को अंधविश्वास के भय मुक्ति दिलाकर रहेगा। यह ख़बर क्षण भर में आग की तरह पूरे गाँव में फैल गई। ोग चौपाल में जमा होने लगे। अंधेरे में पेड़ को देखना सम्भव नहीं था, लेकिन सबके ान पेड़ की ओर लगे हुए थे। उन्हें विश्वास था कि पेड़ के पास भूत से उमेश की कुश्ती ़रूर होगी। कुश्ती में कौन जीतता है, यह जानने के लिए सभी बेचैन हो उठे।

पेड़ के पास पहुँचकर उमेश ने कई बार ज़ोर से आवाज़ लगाई। लेकिन वहाँ भूत ा कुछ अता-पता नहीं था। वह पेड़ की जड़ पर बैठकर हथौड़े से कील ठोंकने लगा। ील ठोंकने की खट-खट, खट-खट की आवाज़ सन्नाटे को चीरती हुई गाँववालों के ानों तक पहुँच रही थी। अंधविश्वासी लोग खुश हो रहे थे कि आज भूत ठोंक दिया ाया।

"भाइयो! अभी खुशी न मनाओ। छोकरे को लौटकर तो आने दो। अगर वह ाकुशल लौट आया तो हम उसकी जय-जयकार करेंगे", एक बूढ़े ने कहा।

भूत को ठोंकना तो गाँववालों के अंधविश्वास में कील ठोंकने का स्वाँग मात्र था।

उमेश जानता था कि भूत तो कुछ होता नहीं। भय की छाया मात्र है। कील ठोंककर व
गाँवावालों के दिल में विश्वास पैदा करना चाहता था कि अब भूत स्वतंत्र नहीं है। अ
अब उसका आतंक नहीं रहेगा। कील ठोंककर वह उठा और घर की ओर उसने क़
बढ़ाया। सहसा उसे लगा कि पीछे से कोई उसकी चादर पकड़कर खींच रहा
वास्तविकता यह थी कि अंधेरे में उसने चादर के कोने पर ही कील ठोंक दी थी। उस
दिल में सहसा संशय उत्पन्न हो गया और संशय ने भूत का रूप धारण कर लिया। उ
ज़ोरदार झटके से चादर छुड़ानी चाही, लेकिन अपने मन-मस्तिष्क में उत्पन्न काल्पनि
भूत से वह अपनी चादर न छुड़ा सका। वह स्वयं भूत के भय का शिकार हो चुका थ
उसे विश्वास हो गया कि वास्तव में भूत ने ही उसे पकड़ लिया है। वह पसीना-पसी
हो गया, डर के मारे थर-थर काँपने लगा और चादर को वहीं छोड़ सिर पर पैर रख
गिरता-पड़ता वहाँ से भागा। उसे ऐसा लगा कि कोई उसका पीछा कर रहा है। अंधाधु
भागने के कारण उसे रास्ते की सुध न रही। वह खेत की मेंड़ से टकराकर गिर पड़
उसके घुटने छिल गए और चोटें आईं। वह हाँफता-काँपता हुआ जब ग्रामवासियों के प
पहुँचा तो उसे देखकर लोगों का विश्वास और दृढ़ हो गया कि वास्तव में भुतहा वृक्ष
पास कोई बलवान भूत रहता है। उसी ने उमेश को पछाड़कर उसे उसकी धृष्टता
मज़ा चखाया है।

उमेश को देखने के लिए पूरा गाँव उमड़ पड़ा था। वह कुछ अधिक नहीं बता
रहा था कि भुतहा वृक्ष के पास उसके साथ क्या हुआ। अब तो पूरे गाँव पर भूत
आतंक और अधिक छा गया।

अगले दिन दोपहर के समय राजस्थानी बंजारों का एक क़ाफ़िला उधर
निकला। उसके साथ कई ऊँट और दूसरे जानवर भी थे। उस क़ाफ़िले ने उसी पेड़
नीचे पड़ाव डाला। वहाँ बंजारों ने पेड़ की जड़ में कील से अटकी एक चादर पाई तो

ग ली। ऐसा क़ाफ़िला कई वर्षों के बाद उस इलाक़े में आया था। ऊँट को भी बहुत
म ही लोगों ने पहले से देखा था। अतः वे उस विशालकाय जानवर को देखकर
भयभीत हो रहे थे। ग्रामवासियों ने दूर से उन्हें देखकर अपने-अपने घरों में दुबक जाना
श्रेयस्कर समझा। दरवाज़े बन्द करके वे खिड़कियों से झाँकने लगे।

वे लोग आपस में बातें कर रहे थे, "अरे बाप ! उस भूत ने अपने साथियों को
ा-बल के साथ बुला लिया है। हो सकता है कि कुछ ही क्षणों में गाँव पर उनका हमला
जाए। वह देखो, उनके पास उमेश की चादर भी है, जो रात में भूत ने उससे छीन
थी।"

कुछ देर बाद वह क़ाफ़िला वहाँ से आगे निकल गया। अब ग्रामवासियों की जान
जान आई। अब उस पेड़ की ओर दिन में भी कोई अकेला जाने का साहस नहीं करता

युग बदल गया, लेकिन ग्रामवासी बहुत दिनों तक इस घटना को भुला न सके।
सब अंधविश्वास का ही करिश्मा था। जब आदमी सच्चाई को नहीं जानता है तो झूठ
सिर चढ़कर बोलता है। आज के वैज्ञानिक युग में भी समाज का एक बड़ा वर्ग
ह-तरह के अंधविश्वासों में जकड़ा हुआ है। भूत, डायन, ओझा के करिश्मे आज भी
गों के दिलों में घर बनाए हुए हैं।

अंधविश्वास का अर्थ है किसी असत्य बात को बिना सोच-विचार के सत्य मान
ा। इससे वास्तविकता नहीं बदल जाती। अतः मानव के लिए यह बड़ा अहितकर और
ाक होता है। इसके विपरीत किसी सत्य बात को यदि बिना विचारे कुछ लोग सत्य
ा लेते हैं, तो इससे उनका कुछ भी अहित नहीं होता, बल्कि लाभ ही होता है।
लिए इसे अंधविश्वास नहीं कहते। इसे ज्ञानी लोगों का अनुसरण कहा जाता है। फिर
अगर प्रमाणों से परखकर सत्य को सत्य माना जाए तो उसकी बात ही कुछ और

होती है। जैसे, सुन्दर वस्तुओं को सजाकर रखना, गुणवानों के गुणों का बखान कर
फिर तो सोने में सुगंध पैदा हो जाता है। उसमें सौन्दर्य की एक अनुपम ज्योति फूट प
है। वह विश्वास मानसिक संतुष्टि और नई चेतना प्रदान करता है। उसमें क्रियाशील
और ताज़गी आ जाती है, इसलिए कि सत्य शाश्वत और निरपेक्ष होता है। अतः का
जाने बिना सत्य का अनुसरण करनेवालों को अज्ञानी तो कह सकते हैं, लेकिन मूर्ख
अंधविश्वासी नहीं कह सकते।

हम अपने इर्द-गिर्द के माहौल पर दृष्टिपात करें। आज भी अनेक प्रकार
अंधविश्वासों का बोल-बाला है। चाँद या सूर्य ग्रहण लग जाए तो लोग यह मानते हैं
राहू और केतू नामक राक्षस चाँद और सूर्य को निगल गए हैं। इस प्रकार चाँद और
पर एक विपत्ति आई हुई है। जबकि वास्तविकता यह है कि धरती और चाँद
प्रतिच्छाया के कारण ग्रहण दिखाई देता है। उस समय चाँद या सूरज में कोई कमी
खोट उत्पन्न नहीं होता और न ही उन्हें कोई कष्ट होता है।

घर से बाहर निकलते समय यदि कोई छींक दे या टोक दे अर्थात् पूछ ले कि
जा रहे हो? फिर तो रंग में भंग पड़ जाता है। अब मनोरथ की सिद्धि नहीं हो सक
ऐसा मानकर बाहर जानेवाला व्यक्ति घर वापस लौट आता है और अपना बहुमूल्य स
नष्ट करके निर्धारित कार्यक्रम को खटाई में डाल देता है। इसी प्रकार किसी यात्री
आगे से बिल्ली रास्ता पार कर जाए, जिसे रास्ता काटना भी कहते हैं, तो उसे भी
अशुभ माना जाता है। वह उल्टे पाँव वापस चला आता है या उस रास्ते से पहले वि
अन्य व्यक्ति अथवा सवारी के गुज़रने की प्रतीक्षा करके समय गँवाता है। यह अंधविश्
है। इससे कोई काम बनता-बिगड़ता नहीं है। हाँ, मूल्यवान समय अवश्य नष्ट होत
और इसके चक्कर में कुछ रुपये-पैसे भी ख़र्च हो जाते हैं।

किस दिशा की यात्रा किस दिन शुभ और किस दिन अशुभ होती है? किस दि

किस काम का आरम्भ हो या शादी-विवाह कब शुभ और कब अशुभ होता है, इसका वार भी किया जाता है। मृतक की आत्मा की शान्ति और सन्तुष्टि के लिए कि वह ब्रारा लौटकर न आए, विविध समाजों में तरह-तरह के टोने-टोटके किए जाते हैं। जगार में अधिकाधिक लाभ तथा स्वास्थ्य वृद्धि के लिए नक़्शे-तावीज़ और तंत्र-मंत्र के ायोग का ख़ूब प्रचलन है।

हस्तरेखाओं के द्वारा या तोता-मैना के द्वारा बन्द लिफ़ाफ़े से निकाले गए पत्रों से ग्य और भविष्य मालूम करना, ग्रहों और नक्षत्रों का बुरा प्रभाव और उससे बचने के ाए विशेष प्रकार की अंगूठी या तावीज़ पहनना, राशिफल के द्वारा भविष्य मालूम रना, भूत-प्रेत, परी और देव-दैत्य आदि की काल्पनिक शक्ति से भ्रमित तथा भयभीत कर उन शक्तियों को वश में करने हेतु पशु और नर बलि चढ़ाना, विभिन्न प्रकार के गों को दैविक शक्ति की अप्रसन्नता का कारण और प्रकोप मानकर इलाज न कराना ौर तंत्र-मंत्र के पीछे दौड़ना इत्यादि अनेक प्रकार के अंधविश्वास हैं, जिनमें पड़कर लोग गों और धोखेबाज़ों का नर्म चारा बन जाते हैं। योगासन आदि के द्वारा असाध्य रोगों ; इलाज के दावे और प्रशिक्षण-शिविरों के आयोजन इत्यादि ठगी के द्वारा अपने-अपने ग्रापारों को चमकाने के धंधे हैं। चमत्कार दिखाकर बाबा बन जानेवालों ने भी ख़ूब ध धली मचा रखी है। लोग उनके द्वारा फैलाए भ्रमजाल में पड़कर समय, सम्पत्ति और ान-मर्यादा को दाँव पर लगाते रहते हैं। ऐसे ठगों की टोली धार्मिक स्वाँग रचकर ोले-भाले और मूर्ख लोगों को ख़ूब ठगती-लूटती और तरह-तरह के भय दिखाकर उन्हें ापने वश में कर लेती है और उनसे मनचाहा काम और दाम लेती है। यह ठग-मंडली ास्तव में समाज के लिए अत्यन्त हानिकारक और प्रगति में बाधक होती है। इसलिए ुनसे सदैव सावधान रहना चाहिए।

जो स्वयं अपनी रक्षा रहीं करता, उसकी रक्षा कोई नहीं कर सकता।

शब्दार्थ और टिप्पणी

अंधविश्वास = बिना सोचे-समझे ग़लत बात को सही मानना, बिना सोचे-समझे किसी बात को मान लेना

विशालकाय = बड़ी कायावाला, बड़े डील-डौलवाला, बहुत बड़े शरीरवाला

बौद्धिक = बुद्धि से सम्बन्धित

अवगत कराना = जानकारी देना, बताना

उपाधि = लक़ब, ख़िताब, पदवी

युक्ति = उपाय, हिक्मत

भुतहा = भूत-प्रेत से सम्बन्धित

धृष्टता = ढिठाई, गुस्ताख़ी

श्रेयस्कर = शुभदायक, अच्छा फल देनेवाला

ज्योति = रौशनी

मान-मर्यादा = मान-सम्मान, प्रतिष्ठा

भ्रमजाल = धोखा या सन्देह का फन्दा

चेतना-प्रवर = समझदार, विवेकी, चैतन्य

पूर्वज = पुरखा, जो पहले जन्मा हो

भिक्षा-वृत्ति = भीख माँगने का धंधा

प्रफुल्लित = खुश, आनन्दित

वयोवृद्ध = बूढ़ा, अधिक उम्र का

भयभीत = डरा हुआ

घातक = हानिकर, मार डालनेवाला

मनोरथ = ख़्वाहिश, मनोकामना, मनेच्छा

सिद्धि = काम का पूरा होना, सफलता

शाश्वत = नित्य, जो कभी नष्ट न हो

अभ्यास

विषय-बोध

(क) मौखिक

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. उमेश पटना क्यों गया?

2. उमेश पटना से गाँव क्यों लौटना चाहता था?

3. उमेश के साथी शहर क्यों जाना चाहते थे?

4. जयवंश ख़ाँ किस स्वभाव का लड़का था?

5. 'अंधविश्वास समाज की प्रगति में बाधक है।' क्यों?

6. उमेश गाँववालों को जिस अंधविश्वास से निकालना चाहता था, उसी में वह कैसे फँस गय?

ब) लिखित

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. पटना जाने पर उमेश के विचारों में क्या परिवर्तन आया?
2. जयवंश ख़ाँ के परिवार के नाम के साथ 'ख़ान' शब्द का प्रयोग क्यों होता है?
3. उमेश ने अंधविश्वास के निवारण के लिए क्या किया?
4. बंजारों के क़ाफ़िले को देखकर गाँववाले क्यों डर गए?
5. भूत-प्रेत की क्या वास्तविकता है?
6. लोग रोगियों को लेकर तांत्रिकों और तावीज़-गंडेवालों के पास क्यों जाते हैं? क्या इससे रोगी को स्वास्थ्य-लाभ हो जाता है?

भाषा-बोध

नरेश = नर + ईश   महेश = महा + ईश

महेन्द्र = महा + इन्द्र   महोत्सव = महा + उत्सव।

उपर्युक्त शब्दो में 'नर' शब्द का अन्तिम अक्षर 'र' अकारान्त है और 'ईश' शब्द का पहला अक्षर 'ई' है। दोनों (अ + ई) मिलकर 'ए' हो गया। इसी प्रकार 'महेश' शब्द में 'महा' के अन्त में 'आ' है और 'ईश' का पहला अक्षर 'ई' है। दोनों (आ + ई) मिलकर 'ए' हो गया। 'महेन्द्र' शब्द में 'महा' के अन्त में 'आ' है और 'इन्द्र' का पहला अक्षर 'इ' है। दोनों (आ + इ) मिलकर 'ए' हो गया। इसी प्रकार 'महोत्सव' शब्द में 'महा' के अन्त में 'आ' है और 'उत्सव' का पहला अक्षर 'उ' है। दोनों (आ + उ) मिलकर 'ओ' (ो) हो गया।

उपर्युक्त नियमों को ध्यान में रखकर निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए :

यथोचित, परोपकार, नरेन्द्र, महोदय, लम्बोदर, महोल्लास, हर्षोल्लास।

कुछ और काम

1. आपके पास-पड़ोस के लोग भी तरह-तरह के अंधविश्वासों में ग्रस्त होंगे। आप उन अंधविश्वासों का निवारण कैसे करेंगे? लिखकर अपने शिक्षक को दिखाइए।

नीति की बातें

जिन ढूँढ़ा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ।
जो बौरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठ।।

मधुर बचन है औषधि, कटुक बचन है तीर।
स्रवन द्वार ह्वै संचरै, सालै सकल सरीर।।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझ-सा बुरा न कोय।।

निन्दक नियरे राखिये, आँगन कुटी छबाय।
बिनु पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय।।

साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
सार सार को गहि रहे, थोथा देय उड़ाय।।

रात गँवाइ सोय कै, दिवस गँवायो खाय।
हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदलो जाय।।

— कबीर

का बरसा जब कृषी सुखाने।
समय चूकि पुनि का पछिताने।।

बिनु संतोस न काम नसाहिं।
काम अछत सुख सपनेहुँ नाहिं।।

परहित सरिस धरम नहीं भाई।
परपीड़ा सम नहीं अधमाई।।

जहाँ सुमति तहाँ सम्पति नाना।
जहाँ कुमति तहाँ विपति निदाना।।

तुलसी इहि संसार में, भाँति-भाँति के लोग।
सब सों हिल-मिल चालिए, नदी-नाव-संजोग।।

— तुलसीदस

शब्दार्थ और टिप्पणी

पैठ	= पहुँच	बौरा	= पागल
औषधि	= दवा, जड़ी-बूटी	स्रवन	= कान
ह्वै	= होकर	संचरै	= जाता है, पहुँचता है
सकल	= पूरा, समूचा	नियरे	= निकट, पास

कुटी छबाय	=	कुटिया बनाकर	सुभाय	=	स्वभाव
साधू	=	सज्जन, साधु, विवेकी	सूप	=	अनाज से भूसा अलग करने का पात्र
सार	=	निचोड़, मूल तत्त्व (यहाँ आशय है—अनाज)	गहि रहै	=	पकड़ ले, अपने पास रख ले
थोथा	=	निरर्थक वस्तु (यहाँ आशय है—भूसा)	पुनि	=	पुनः, फिर
			नसाहिं	=	नष्ट होता है
काम	=	कामना, वासना	सुमति	=	अच्छे विचार
अछत	=	रहते हुए	कुमति	=	बुरे विचार
नाना	=	विविध, बहुत	सरिस	=	समान
निदाना	=	अन्त में, परिणामतः	सों	=	से
नाव-नदी-संजोग	=	अटूट सम्बन्ध	अधमाई	=	नीचता, अधमता

अभ्यास

ाय-बोध

) मौखिक

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'गहरे पानी पैठ' का क्या अर्थ है?
2. कवि ने किसे पागल कहा है?
3. कबीर के अनुसार 'औषधि' क्या है और 'तीर' क्या?
4. साधु को कैसा होना चाहिए?
5. सम्पत्ति कहाँ और विपत्ति कहाँ आती है?

(ख) लिखित

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कवि को अपने समान बुरा कोई दूसरा क्यों नहीं मिला?

2. निन्दक को अपने निकट क्यों रखना चाहिए?

3. सूप का क्या स्वभाव है?

4. मनुष्य हीरे के समान अपने मूल्यवान जीवन को कैसे नष्ट कर रहा है?

5. इच्छाओं पर कैसे क़ाबू पाया जा सकता है?

6. कवि ने धर्म किसे और अधर्म किसे कहा है?

(ग) नीचे दिए गए भाव से सम्बन्धित पद्य लिखिए :

1. आलोचक पानी और साबुन के बिना भी मानव-स्वभाव को निर्मल बना देता है।

2. जो काम समय पर होता है, वही महत्त्वपूर्ण होता है।

3. दूसरों को कष्ट पहुँचाना सबसे बड़ी नीचता है।

4. लोगों को मिल-जुलकर चलना चाहिए।

भाषा-बोध

1. हिन्दी में संस्कृत के शब्द अपने मूल रूप में और परिवर्तित रूप में बड़ी संख्या में प्र होते हैं। संस्कृत के जो शब्द अपने **मूल रूप** में हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं वे **तत्सम** शब्द कह हैं और जो शब्द **परिवर्तित रूप** में प्रयुक्त होते हैं, वे **तद्भव** कहलाते हैं।

जैसे :

तत्सम : सूर्य, हस्त, चन्द्र, रात्रि

तद्भव : सूरज, हाथ, चाँद, रात

उपर्युक्त उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम के सामने तद्भ

और तद्भव के सामने तत्सम रूप लिखिए :

ग्राम	=....................	हस्ती	=....................
अग्नि	=....................	काम	=....................
मुँह	=....................	दाँत	=....................

छ और काम

1. नीति-सम्बन्धी दस दोहे एकत्र कीजिए और कक्षा में सुनाइए।

पाठ - 17

राजा राममोहन राय

राजा राममोहन राय आधुनिक भारत के निम मानवतावादी और सामाजिक एवं धार्ि सुधार-आन्दोलन के अग्रदूत थे। उनका जन्म मई, 1774 ई॰ में बंगाल के हुगली ज़िले में राधा नामक गाँव के एक सम्पन्न ब्राह्मण परिवा हुआ था। उनके पिता का नाम रमाकान्त और माता का नाम तारिणी देवी था। रमाक राय एक अच्छे खाते-पीते ज़मींदार थे। उ घराना कई पीढ़ियों से मुग़ल बादशाहों के दर में अच्छे पदों पर आसीन रहा था।

राजा राममोहन राय की प्रारम्भिक शिक्षा तत्कालीन परम्परा के अनुसार अ और फ़ारसी में हुई थी। बचपन में ही उन्होंने इन दोनों भाषाओं में इतनी जल्दी द प्राप्त कर ली थी कि उनके पिता ने उन्हें अज़ीमाबाद (पटना) भेजने का निश्चय लिया, क्योंकि उस समय यह शहर इन दोनों भाषाओं की शिक्षा-दीक्षा का बहुत केन्द्र था। बारह वर्ष की अवस्था में ही वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए अज़ीमा चले गए। वहाँ उन्होंने इस्लामी दर्शन, साहित्य और पवित्र क़ुरआन का गहन अध्य किया और कुछ ही दिनों में इन विषयों में इतने पारंगत हो गए कि लोग उन्हें 'मौ

मोहन राय' कहने लगे। इसके बाद बौद्ध धर्म का अध्ययन करने तिब्बत चले गए।
ां से घर लौटते समय काशी में ठहर गए और वहाँ संस्कृत भाषा सीखी और वेद,
ण, स्मृति, उपनिषद् इत्यादि का गहन अध्ययन किया। इस प्रकार स्वाध्याय और
ोर परिश्रम के बल पर वे एक महान विद्वान हो गए। उन्होंने अरबी, फ़ारसी, संस्कृत,
ग्ज़ी, फ्रेंच, लैटिन, ग्रीक तथा हिब्रू सहित एक दर्जन से अधिक भाषाओं का गहरा
न प्राप्त किया।

राजा राममोहन राय ने 1803 ई॰ में अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् फ़ारसी में
हफ़तुल-मुवह्हिदीन' नामक एक पुस्तक लिखी, जिसमें उन्होंने मूर्तिपूजा का खण्डन
या और एकेश्वरवाद की पुष्टि की। इसके अतिरिक्त उन्होंने बंगला, संस्कृत, फ़ारसी
ा अंग्रेज़ी में कई ग्रंथों की रचना की। राजा राममोहन राय भारतीय भाषाओं की
कारिता के आदि पुरुष माने जाते हैं। उन्होंने दो साप्ताहिक पत्रों का संचालन और
पादन किया, जिनके नाम 'संवाद कौमुदी' (प्रकाशन वर्ष : 1819) और 'मिरातुल-अख़बार'
काशन तिथि : 2 अप्रैल, 1822) हैं। ये दोनों पत्र क्रमशः बंगला और फ़ारसी में
काशित होते थे। वे प्रथम भारतीय थे जिन्होंने प्रेस की स्वतंत्रता के लिए आवाज़
ठाई।

राजा राममोहन राय का दृढ़ विश्वास था कि धार्मिक कुरीतियों को दूर करने के
ए यह आवश्यक है कि जनता को उनके मूल धर्मग्रंथों की जानकारी दी जाए। इसके
ए उन्होंने अथक प्रयास करके वेदों तथा उपनिषदों के बंगला अनुवाद प्रकाशित किए।
न्होंने एक सर्वशक्तिमान ईश्वर पर आधारित विश्वधर्म में अपनी आस्था व्यक्त की।
न्होंने मूर्तिपूजा तथा धार्मिक कर्मकांडों की निन्दा की।

राजा राममोहन राय ने धार्मिक सुधार के उद्देश्य से 1815 ई॰ में अपने
िवास-स्थान पर 'आत्मीय सभा' की स्थापना की, जिसकी बैठक सप्ताह में एक बार

हुआ करती थी। फिर 20 अगस्त, 1828 ई. में 'ब्रह्म सभा' की स्थापना की, जिसने
चलकर 1830 ई. में 'ब्रह्म समाज' का रूप धारण कर लिया। 'ब्रह्म समाज' धा
सुधार का पहला संगठन था, जिसने मूर्तिपूजा और निरर्थक प्रथाओं तथा रीति-रि
का खण्डन किया। यह संगठन धार्मिक अंधविश्वासों और कुरीतियों का प्रबल वि
था।

तत्कालीन समाज में स्त्रियों की अत्यन्त बुरी दशा थी। सतीप्रथा का प्रचलन
विधवा-विवाह और नारी-शिक्षा को धार्मिक दृष्टि से उचित नहीं माना जाता था। र
राममोहन राय के बड़े भाई की मृत्यु होने पर तत्कालीन प्रथा के अनुसार उनकी भ
को भी पति की चिता पर बैठकर शव के साथ जल जाना पड़ा। राजा राममोहन
चाहकर भी उन्हें नहीं बचा सके, परन्तु उस दिन उन्होंने शपथ ली कि वे उस समय
चैन से न बैठेंगे, जब तक इस अमानवीय प्रथा का समूल नाश न कर देंगे। इसी
उन्होंने इसपर सबसे अधिक ध्यान दिया और इसके विरुद्ध लगातार संघर्ष करते
उन्हीं के प्रयास के फलस्वरूप लॉर्ड विलियम बेंटिंक ने 1829 ई. में सतीप्रथा को क़
द्वारा समाप्त कर दिया। क़ानूनी रूप से सतीप्रथा की समाप्ति धार्मिक सुधार के क्षे
राजा राममोहन राय की सबसे बड़ी उपलब्धि थी। वे स्त्रियों की दशा में सुधार चाह
और उनकी प्रबल इच्छा थी कि स्त्रियों के लिए अलग शिक्षा की व्यवस्था हो, उन्हें
की सम्पत्ति में उत्तराधिकार मिले और विधवाओं का पुनर्विवाह हो। वे स्त्रियों की दश
सुधार के लिए आजीवन प्रयत्नशील तथा संघर्षशील रहे। उनके सुधार-कार्य के क
कट्टरपंथियों के साथ उनका संघर्ष चलता रहा। मसुलिम स्त्रियों को यह अधिकार
पहले से ही प्राप्त था।

राजा राममोहन राय अंग्रेज़ी शिक्षा के समर्थक थे और विज्ञान पढ़ने-पढ़ाने
बहुत बल देते थे। उन्होंने शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए अथक प्रयास किया। स

ज्ञान का प्रकाश फैलाकर कुरीतियों और अमानवीय प्रथाओं का अन्त करने के लिए होंने एक स्कूल खोला था। इसके अलावा उन्होंने बालविवाह, छुआछूत, जातिभेद, भिद, इत्यादि प्रथाओं का भी खण्डन और घोर विरोध किया। जातिप्रथा का कठोरतापूर्वक लन किया जाता था। अतः उन्होंने दलित वर्ग के सदस्यों तथा अन्य धर्मों के लोगों के थ खान-पान को रिवाज दिया। समुद्र-यात्रा अधार्मिक कार्य माना जाता था। उन्होंने का व्यावहारिक विरोध किया और वे समुद्री जहाज़ के द्वारा इंग्लैंड गए।

तत्कालीन मुग़ल बादशाह अकबर द्वितीय ने राजा राममोहन राय की योग्यताओं र उनके गुणों को पहचाना तथा यथोचित सम्मान दिया। उन्हें 'राजा' की उपाधि दी र उन्हें अपना दूत बनाकर इंग्लैंड भेजा। वे 1831 ई॰ में इंग्लैंड पहुँचे और वहीं 20 तम्बर, 1833 ई॰ में उनका देहान्त हो गया। उनके पार्थिव शरीर को ब्रिस्टल (इंग्लैंड) दफ़नाया गया।

ब्दार्थ और टिप्पणी

तत्कालीन = उस समय का, तब का
परम्परा = रीति-रिवाज, रस्म
पारंगत = माहिर, प्रवीण
स्वाध्याय = किसी विषय का गहन अध्ययन, निजी मुताला
आदि पुरुष = पहला व्यक्ति
विवश = बेबस, लाचार
संमूल = जड़ सहित

अभ्यास

विषय-बोध

(क) मौखिक

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. राजा राममोहन राय का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
2. बालक राममोहन राय की प्रारंभिक शिक्षा किन भाषाओं में हुई?
3. राजा राममोहन राय ने किन साप्ताहिक पत्रों का सम्पादन किया? नाम बताएँ।
4. ब्रह्म समाज की स्थापना कब हुई?
5. राजा राममोहन राय का देहान्त कब हुआ?

(ख) लिखित

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. राजा राममोहन राय के पिता ने उन्हें अज़ीमाबाद (पटना) क्यों भेजा?
2. लोग राजा राममोहन राय को 'मौलवी राममोहन राय' क्यों कहते थे?
3. ब्रह्म समाज किस प्रकार के सुधार पर बल देता है?
4. राजा राममोहन राय ने चैन से न बैठने की शपथ क्यों ली?
5. राजा राममोहन राय ने स्त्रियों की दशा में सुधार के लिए क्या किया?
6. मुग़ल बादशाह ने राममोहन राय को 'राजा' की उपाधि क्यों प्रदान की ?

(ग) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. राजा राममोहन राय भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता के........माने जाते हैं।
2. राजा राममोहन राय के प्रयासों के फलस्वरूप 1829 ई. में..............को क़ानून द्वारा समाप्त कर दिया गया।

3. ....धार्मिक सुधार का पहला संगठन है।

4. राजा राममोहन राय के पार्थिव शरीर को ....में दफ़नाया गया।

षा-बोध

1. इस पाठ में 'कुरीति', 'विवश', 'अथक', और 'आजीवन' शब्द आए हैं। इनमें क्रमशः 'कु', 'वि', 'अ' और 'आ' उपसर्गों का प्रयोग हुआ है। उपसर्ग उस शब्दांश को कहते हैं जो किसी शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ को बदल देता है।

'कु', 'वि', 'अ' और 'आ' उपसर्गों के मेल से दो-दो शब्द बनाइए।

ड़ और काम

1. पुस्तकालय से कुछ बाल-पत्रिकाएँ लेकर पढ़िए।
2. अपने शिक्षक की सहायता से 'बच्चों की दुनिया' के नाम से एक मासिक दीवार पत्रिका निकालिए। इसमें अपने स्कूल की गतिविधि के बारे में महीने भर की ख़बरें, अच्छी-अच्छी बाल कविताएँ, छोटी-छोटी बाल कहानियाँ, चुटकुले, पहेलियाँ इत्यादि रंग-बिरंगे काग़ज़ों पर सुन्दर अक्षरों में लिखकर स्कूल की दीवार पर हर महीने चिपकाइए।

पाठ - 18

ज्ञान का महत्त्व

मानव-जीवन में ज्ञान का बड़ा महत्त्व है। ज्ञान उज्ज्वल प्रकाश है; प्रगति आधार है; सफलता का सोपान है; सर्वोत्तम धन है और सबसे अच्छा मित्र है। इसे न चोर चुरा सकता है और न ही आग जला सकती है।

इस्लाम के चौथे ख़लीफ़ा हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने ज्ञान के महत्त्व इन शब्दों में रौशनी डाली है—

> "ज्ञान धन से उत्तम है, क्योंकि धन की रक्षा तुमको करनी पड़ती है, जबकि ज्ञान तुम्हारी रक्षा करता है।"

पवित्र क़ुरआन में है—

> "जिसे हिकमत (ज्ञान, तत्त्वज्ञान) दी गई, उसे बड़ी दौलत दी गई।" (2 : 269)

सचमुच ज्ञान ही वास्तविक हीरा और मोती है। यह बहुमूल्य रत्न से भी अ मूल्यवान है। यह सबसे बड़ी शक्ति है। इसका उद्देश्य सत्य की खोज है और आत्मा का आहार है। सत्य की खोज और ज्ञानार्जन आत्मा की तृप्ति का साधन है। शरीर के लिए स्वास्थ्य का महत्त्व है, वैसे ही आत्मा के लिए ज्ञान का। ज्ञान के स में अधिकाधिक पैठनेवाला व्यक्ति ही धर्म और कर्म के असली रंग में रंग पाता है। उसे बोलना और करना सिखाता है और उसकी कथनी और करनी को एक रंग में देता है। कपटाचार ज्ञानी व्यक्ति के निकट नहीं फटकता, क्योंकि सत्यज्ञान का

रेत्र-निर्माण है और चरित्रवान एवं सत्कर्मी व्यक्ति को अल्लाह तआला लोक-परलोक
ाों में सफलता प्रदान करता है। किसी ने क्या ख़ूब कहा है—

"ज्ञान वह पंख है जिसके द्वारा हम स्वर्ग की ओर उड़ते हैं।"

ज्ञान की खोज में निकलनेवाला प्रत्येक व्यक्ति अल्लाह के मार्ग में होता है और ल्लाह का मार्ग ही स्वर्ग का मार्ग है।

विश्वनायक हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने कहा है—

> "जो व्यक्ति ज्ञान की खोज में कोई यात्रा करेगा, अल्लाह उसके लिए स्वर्ग का मार्ग सुगम कर देगा और फ़िरिश्ते ज्ञानार्थी (तालिबे-इल्म) की प्रसन्नता के लिए अपनी भुजाएँ बिछाते हैं। आकाश और धरती के रहनेवाले, यहाँ तक कि जल की मछलियाँ भी ज्ञानार्थी के लिए मोक्ष (नजात) की प्रार्थना करती हैं। ज्ञानी नबियों के वारिस (उत्तराधिकारी) हैं। नबी मीरास में न दीनार छोड़ते हैं, न दिरहम। वे तो विरासत में बस ज्ञान छोड़ जाते हैं। अतः जिस किसी ने ज्ञान प्राप्त किया, उसने भलाई का अधिकतर हिस्सा प्राप्त कर लिया।"

ज्ञानार्जन के पश्चात् उसके प्रचार-प्रसार में सतत् प्रयत्नशील रहना ज्ञानीजन का म कर्तव्य है, क्योंकि ज्ञान का दान महादान है। इससे बढ़कर कोई दान नहीं। इस बन्ध में अन्तिम ईश-दूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने कहा है, " क्या तुम जानते हो कि ाशीलता में सबसे बढ़कर कौन है ?"

लोगों ने कहा, "अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानते हैं।"

आप (सल्ल॰) ने कहा—

> "दानशीलता में सबसे बढ़कर अल्लाह है। फिर आदम के बेटों में

सर्वाधिक दानशील मैं हूँ और मेरे बाद दानशीलता में सबसे बढ़कर वह है जिसने ज्ञान प्राप्त किया और उसको फैलाया।"

ज्ञान मनुष्य को महान बनाता है और अज्ञान उसे सफलता के शिखर पर च नहीं देता, बल्कि कई बार तो उसे पतन की अथाह खाई में गिरा देता है। अतः ज्ञा और अज्ञानी दोनों बराबर नहीं हो सकते।

पवित्र क़ुरआन में है–

"कह दो, क्या बराबर हो सकते हैं वे लोग जो ज्ञानी हैं और वे लोग जो ज्ञानी नहीं हैं?" (39 : 9)

तात्पर्य यह कि ज्ञान प्राप्त करना, इसे फैलाना और सुरक्षित रखना प्रत्येक मनु का कर्तव्य है। पवित्र क़ुरआन में कहा गया है–

"अपने रब (पालनहार) के नाम से पढ़, जिसने (सब कुछ) पैदा किया। मनुष्य को जमे हुए ख़ून से पैदा किया। पढ़, और तेरा रब बड़ी शानवाला है, जिसने क़लम के द्वारा (ज्ञान) सिखाया, जिसे वह नहीं जानता था।" (96 : 1-5)

ज्ञान की कोई सीमा नहीं है, जहाँ पहुँचकर मनुष्य तृप्त हो जाए। अतः ज्ञान भूख जगाए रखने के लिए क़ुरआन में यह दुआ सिखाई गई है–

"कहो, ऐ मेरे रब! मुझे और अधिक ज्ञान प्रदान कर।" (20 :11)

अतः हममें से प्रत्येक व्यक्ति की यही अभिलाषा होनी चाहिए–

ज़िन्दगी हो मेरी परवाने की सूरत या रब!
इल्म की शमा से हो मुझको मुहब्बत या रब!!

– मुहम्मद इलियास हु

ब्दार्थ और टिप्पणी

सोपान	= सीढ़ी
सर्वोत्तम	= बेहतरीन, सबसे अच्छा, सर्वश्रेष्ठ
परम	= सबसे बड़ा
ज्ञानार्जन	= ज्ञान प्राप्त करना, इल्म हासिल करना
सत्कर्मी	= अच्छा काम करनेवाला
परवाना	= पतिंगा
शमा	= मोमबत्ती, चिराग़

अभ्यास

षय-बोध

) मौखिक

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. लेखक ने सर्वोत्तम धन किसे कहा है?
2. इस पाठ में आत्मा का आहार किसे कहा गया है?
3. ज्ञान के असली रंग में कौन रंग जाता है?
4. ज्ञानी व्यक्ति के निकट कौन नहीं फटकता है?
5. किसके द्वारा हम स्वर्ग की ओर उड़ सकते हैं?
6. नबियों के वारिस कौन हैं?

(ख) लिखित

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. ज्ञान का क्या महत्त्व है?
2. ज्ञान और धन में से कौन अधिक महत्त्वपूर्ण है और क्यों?
3. स्वर्ग का मार्ग किसे कहा गया है?
4. किसके लिए जल की मछलियाँ भी मोक्ष की प्रार्थना करती रहती हैं?
5. नबियों ने अपने अनुयायियों के लिए विरासत में क्या छोड़ा?
6. अल्लाह तआला ने किसके द्वारा मनुष्य को ज्ञान सिखाया?

(ग) निम्नलिखित वाक्यों का आशय स्पष्ट कीजिए :

1. ज्ञान ही वास्तविक हीरा और मोती है।
2. ज्ञानी और अज्ञानी दोनों बराबर नहीं हो सकते।

(घ) निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए और प्रत्येक शब्द को पाँच-पाँच बार अपनी कॉपी में लिखिए :

प्रगति, सर्वोत्तम, ख़लीफ़ा, हज़रत, क़ुरआन, रत्न, ज्ञानार्जन, तृप्ति, स्वास्थ्य, प्रत्येक, श्रेष्ठता, प्रार्थना, स्वर्ग।

भाषा-बोध

किसी एक मूल शब्द से अनेक शब्द बनते हैं । ऐसे सभी शब्द मिलकर एक शब्द-परिवार बनाते हैं। जैसे, ज्ञान से ज्ञानार्थी, ज्ञानी, ज्ञान-विज्ञान, अज्ञान, मनोविज्ञान, ज्ञानोदय इत्यादि

उपर्युक्त उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्दों से अधिकाधिक नए शब्द बनाइए :

स्पष्ट, राजा, रक्षा, शिक्षा।

छ और काम

1. "ज्ञान धन से उत्तम है, क्योंकि धन की रक्षा तुमको करनी पड़ती है और ज्ञान तुम्हारी रक्षा करता है।" (हज़रत अली रज़ि॰)
उपर्युक्त सूक्ति को सुन्दर अक्षरों में एक काग़ज़ पर लिखकर अपने अध्ययन कक्ष में लगाइए।
2. ऐसी ही पाँच सूक्तियाँ एकत्र कीजिए और अपनी कक्षा में सुनाइए।

पाठ - 19

['गुलीवर की यात्राएँ' अंग्रेज़ी की एक प्रसिद्ध कृति है। इसके लेखक जोनाथन स्विफ़्ट (1667-1745) एक प्रसिद्ध व्यंग्यकार थे। अपनी पुस्तक में उन्होंने चार काल्पनिक यात्राओं का वर्णन किया है, उनका एक पात्र नाविक डॉक्टर सेमुएल गुलीवर है, जिसनेये यात्राएँ कीं। यहाँ गुलीवर की दो यात्राओं का वृत्तान्त प्रस्तुत किया जा रहा है।]

गुलीवर की अद्भुत यात्राएँ

मैं एक जहाज़ पर नौकरी करता था । नौकरी करते हुए मैंने कई लम्बी-ल यात्राएँ कीं।

एक बार दक्षिणी सागर से पूर्वी द्वीप-समूह की ओर जाते हुए हमारा जहाज़ तूफ़ में फँसकर चकनाचूर हो गया। ख़ुशक़िस्मती से मैं तैरकर किनारे आ गया और थक वहीं लेट गया। बाद में पता चला कि यह लिलिपुट द्वीप है।

जब मेरी नींद खुली तो मैंने अपने-आपको पतले-पतले धागों में बँधा पाया। आश्चर्य में पड़ा सोच ही रहा था कि कोई चीज़ मेरे पैरों पर रेंगती-रेंगती मेरी छाती आ खड़ी हुई। यह एक मानव-आकृति थी – बहुत ही छोटी-सी।

कुछ देर बाद उसी प्रकार के कई प्राणी मेरे शरीर पर चढ़ आए। मैं ज़ोर से चि उठा, "कौन हो तुम ?" मेरा चिल्लाना था कि वे लोग लुढ़कते-पुढ़कते और चीख़ते-चिल्ल भागे। इसके बाद मैंने उठने का प्रयत्न किया तो कुछ धागे टूट गए। यह देख उन लो ने सूई जैसे पतले-पतले तीरों की वर्षा शुरू कर दी। मैं समझ गया कि चुपचाप लेटे र में ही भलाई है।

अब उन अद्भुत प्राणियों ने तीर बरसाना बंद कर दिया। उनमें से एक कुछ दूर ग्राई पर खड़े होकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर कुछ कहने लगा। मैंने हाथ हिलाकर उसे झाने का प्रयत्न किया कि मैं उसकी भाषा नहीं समझता। फिर बार-बार अपना हाथ की ओर ले जाकर मैंने इशारा किया कि मैं भूखा हूँ। वह मेरा इशारा समझ गया। फिर क्या था। मेरे मुँह के पास सीढ़ी लगा दी गई और सैकड़ों लोग टोकरियों में ने का सामान ला-लाकर मेरे मुँह में उँड़ेलने लगे। जब पानी पीने का इशारा किया तो ोंने कई पीपे मुँह में उँड़ेल दिए। उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि मेरा पेट है या कुआँ! ड़ी देर में ही मेरी पलकें भारी हो गईं और मैं गहरी नींद में सो गया।

खड़-खड़, खड़-खड़ की आवाज़ से जब मेरी नींद टूटी तो यह देखकर मेरे आश्चर्य

का ठिकाना न रहा कि एक गाड़ी में रखकर मुझे कहीं ले जाया जा रहा है। छोटे-छोटे लोगों की एक विशाल भीड़ हथियार लिए मेरे दाएँ-बाएँ चल रही थी। मैं स गया कि मुझे क़ैद कर लिया गया है।

मेरे वहाँ पहुँचते ही लिलिपुटवासियों की एक विशाल भीड़ मुझे देखने के ि उमड़ पड़ी। मेरे पहाड़ जैसे शरीर को देखकर सब लोग हैरान थे।

लिलिपुट के बादशाह ने मुझे एक पुराने प्रार्थना-भवन में क़ैद कर लिया। सम्भव राजधानी में यही एक ऐसा स्थान था जिसमें मैं झुककर घुस सकता था, शेष मकान खिलौने जैसे थे। जिस तरह वे लोग मेरे विशाल शरीर को देखकर आश्चर्यचकित उसी तरह मैं भी उनकी छोटी-सी दुनिया को देखकर हैरान था। कुछ शरारती ल मुझपर तीर चलाने लगे। एक तीर मेरी बाईं आँख पर लगा। यह देख सिपाहियों ने व्यक्तियों को गिरफ़्तार कर मुझे सौंप दिया। पाँच को तो मैंने अपने कोट की जेब में लिया और एक को उँगलियों में पकड़कर मुँह की ओर ले जाने लगा। वह मारे भय बुरी तरह चीख़ने लगा। मैंने उन सबको ज़मीन पर छोड़ दिया। छुटकारा पाते ही गिरते-पड़ते वहाँ से भागे। इस बात का और लोगों पर अच्छा असर पड़ा। बादशाह जब यह सुना तो उसने भी मेरी प्रशंसा की।

राजदरबार के कुछ व्यक्ति मेरे भोजन-पानी के ख़र्च को देखकर सोचने लगे इससे देश में अकाल पड़ जाएगा। वे विषैले तीरों से मेरी हत्या कर देना चाहते थे। प सौभाग्य से बादशाह उनकी बातों में नहीं आया। उसने मेरे भोजन-पानी का स उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया और छह विद्वानों को मुझे उस देश की भाषा सिर के लिए नियुक्त कर दिया। कुछ दिनों में मैंने उन लोगों की भाषा सीख ली।

मेरे स्वभाव और व्यवहार से वे लोग बहुत ख़ुश थे। अब वे निडर होकर मेरे आते। कभी वे मेरे सिर पर उछलते-कूदते और कभी नाचने लगते। बच्चे तो मेरे ब

आँख-मिचौनी खेलते। इस तरह मैं सबका खिलौना बना हुआ था।

एक दिन मैंने बादशाह से अपनी मुक्ति के लिए प्रार्थना की। उसने मुझे इन शर्तों : मुक्त करना स्वीकार किया कि मैं बादशाह की आज्ञा के बिना कहीं न जाऊँ और सी देश से युद्ध छिड़ जाने पर मैं लिलिपुटवासियों की सहायता करूँ।

कुछ दिन बाद मुझे ज्ञात हुआ कि पड़ोसी देश ब्लेफ़ुस्कू के बादशाह ने एक क्तिशाली जहाज़ी बेड़ा तैयार कर लिया है। वह लिलिपुट पर चढ़ाई करने का अवसर व रहा है। शर्त के अनुसार मैंने उन लोगों की सहायता करने की एक योजना बनाई।

कुछ रस्सियाँ और काँटे लेकर मैं ब्लेफ़ुस्कू की खाड़ी की ओर चल दिया। यह ाड़ी मेरे लिए विशेष गहरी न थी, पर उन लोगों के लिए तो यह महासागर से कम न ी।

मैंने खाड़ी में घुसकर वहाँ खड़े सब जहाज़ों को काँटों में फँसा लिया और उन्हें ींचता-खींचता लिलिपुट की ओर चल दिया। ब्लेफ़ुस्कू के सैनिक मेरे ऊपर तीर बरसाने ो। पर चश्मे और कोट के कारण उनके तीर मेरा कुछ भी न बिगाड़ सके।

ब्लेफ़ुस्कू के जहाज़ों को खींचकर जब मैं लिलिपुट की खाड़ी में ले गया तो वहाँ बादशाह और लोगों ने प्रसन्नता से उछल-उछलकर मेरा स्वागत किया। बादशाह ने झे अपने देश की सबसे बड़ी उपाधि से सम्मानित किया।

एक दिन मैं लिलिपुट खाड़ी के किनारे घूमता-घूमता दूर जा निकला। वहाँ मुझे नी में एक बड़ा तख़्ता तैरता दिखाई दिया। ध्यान से देखने पर ज्ञात हुआ कि वह एक टी हुई नाव थी। उसे देखकर मैं ख़ुशी से झूम उठा। यह नाव नहीं मेरी आशाओं का पक थी।

कुछ दिन बाद मैंने बादशाह से अपने देश जाने की आज्ञा माँगी। उन्होंने मुझे बड़े

प्रेम से विदा किया और बहुत-सी भोजन-सामग्री मेरी नाव पर लदवा दी। सौभाग्य
रास्ते में मुझे एक जहाज़ दिखाई दिया। नाविकों ने मुझे जहाज़ पर चढ़ा लिया। यह दे
मेरी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा कि जहाज़ मेरे ही देश का था।

लिलिपुट से लौटकर दो महीने तक मैं अपने घर पर ही रहा। उसके बाद मुझे कि
जहाज़ पर काम मिल गया। कुछ दिन बाद हमारा जहाज़ हिन्दुस्तान के लिए रव
हुआ। अफ़्रीक़ा महाद्वीप के पश्चिमी किनारे पर चलते-चलते हमारा जहाज़ तूफ़ान
फँसकर रास्ता भूल गया और भटकते-भकटते एक टापू के पास पहुँचा। नाविक
जहाज़ की देखभाल में लग गए और मैं अपने कुछ साथियों के साथ नाव लेकर पानी
तलाश में टापू की ओर चल दिया। मुझे पानी कहीं न मिला। पेड़ की ठण्डी छाया दे
मैं वहीं लेट गया।

कुछ देर बाद जब मैं नाव की ओर लौटा तो क्या देखता हूँ कि मेरे साथी नाव
तेज़ी से जहाज़ की ओर लिए जा रहे हैं। मैं उन्हें आवाज़ देने ही वाला था कि मेरी न
एक विशालकाय आदमी पर पड़ी। आदमी क्या, वह तो पूरा राक्षस था। समुद्र का प
उसके घुटनों तक ही आ रहा था। उसे देख अपनी जान बचाने के लिए मैं एक खेत
जा छिपा। कहने को तो यह जौ का खेत था, पर जौ के पौधे हमारे देश के पेड़ों से व
ऊँचे न थे। पेड़ तो पहाड़ की चोटी की बराबरी करते थे।

जौ के पौधों की आड़ में छिपे-छिपे मैंने देखा कि कुछ आदमी उसी खेत की उ
आ रहे हैं। उन्होंने जौ काटने शुरू किए तो एक की नज़र मुझ पर पड़ी। उसने खिल
की तरह मुझे उठाकर हथेली पर रख लिया। मुझे लगा कि मैं एक ऊँचे पेड़ की टह
पर चिड़िया की तरह बैठा हूँ। परन्तु क्या मैं चिड़िया की तरह आज़ाद था?

उस लंबे-चौड़े किसान ने मुझे उलट-पलट कर देखना शुरू किया तो मैं डर के म
चीख़ने लगा। यह देख उसने मुझे धीरे से ज़मीन पर रख दिया। मेरी जान में जान आ
मैंने चिल्ला-चिल्लाकर उसे अपने बारे में बताना चाहा, पर वह समझे तब न ! उसने अ

ो सावधानी से उठाकर अपनी चौड़ी हथेली पर रख लिया और अपने घर ले आया।

घर लाकर जैसे ही किसान ने अपनी पत्नी को दिखाने के लिए हथेली उसकी ओर ाई तो मुझे देखकर वह स्त्री इस तरह डर गई जैसे कोई साँप-बिच्छू को देखकर डर ता है। यह देख किसान को बड़ा मज़ा आया और वह खिलखिलाकर हँस पड़ा। मुझे ा कि आँधी चल रही है और बादल गरज रहे हैं। मैं आँखें फाड़-फाड़कर चारों ओर ने लगा। वहाँ सभी प्राणी और सभी चीज़ें बड़े-बड़े आकार की थीं। नाँद जैसे प्याले, -बड़े थालों जैसी रोटियाँ, शेर-शेरनी जैसे कुत्ते-बिल्लियाँ, छोटे से छोटा बच्चा भी मुझसे गुना लबां-चौड़ा। इन सबके बीच में मैं अपने आपको मक्खी-मच्छर जैसा अनुभव कर । था। लिलिपुट के लोग मुझे देखकर जितना हैरान हुए होंगे उससे कहीं अधिक हैरानी े इन लोगों को देखकर हुई।

इन लोगों में रहते-रहते मेरा भय मिट गया। इनका केवल आकार ही डरावना था, े आदमी भले थे। मैंने इस देश की भाषा भी सीख ली। इससे मुझे बहुत सुविधा हो ई। कभी-कभी मैं मेज़ पर खड़े होकर किसान और उसके परिवारवालों को तरह-तरह खेल दिखाता। मेरा खेल और तलवार चलाना उन्हें बहुत पसंद आता। इससे उनका च्छा-ख़ासा मनोरंजन हो जाता। यह देखकर किसान के मित्र ने उसे सलाह दी कि वह जधानी में लगनेवाले मेले में टिकट लगाकर लोगों को मेरा खेल दिखाए।

अब किसान ने मुझे एक लकड़ी के डिब्बे में बंद किया और उसे हाथ में लटकाकर ले में ले आया।

राजधानी के लोग मेरा खेल देखने के लिए टूट पड़े। मेरे खेल से अधिक वे मुझे खना चाहते थे। उनके लिए तो मैं जीता-जागता खिलौना था। यहाँ मुझे दिन में स-दस बार खेल दिखाने पड़ते थे। इस तरह काफ़ी पैसा कमाने के बाद उस किसान एक हज़ार सोने के सिक्कों के बदले मुझे उस देश की महारानी को बेच दिया।

महारानी ने मेरे लिए एक पिंजरा बनवाया। पिंजरा क्या, यह तो कमरा
खाना खाते समय महारानी पिंजरे को अपनी मेज़ पर रखकर मुझे भी खाना खिला
उसने मेरे लिए विशेष रूप से छोटे-छोटे बरतन भी तैयार करवाए।

एक बार राजा और रानी अपने नौकर-चाकरों के साथ अपने राज्य का दौरा व
निकले। उन्होंने मुझे भी साथ ले लिया। चलते-चलते हम ऐसे नगर में पहुँचे जो स
के समीप ही था। समुद्र को देखकर मुझे अपने देश की याद आ गई और मैं उदास
गया। यह देखकर नौकर पिंजरा उठाकर समुद्र के किनारे ले गया। पिंजरे को
चट्टान पर रखकर वह समुद्र की रेत पर लेट गया।

समुद्र की ओर ललचाई नज़रों से देखते-देखते पता नहीं मुझे कब नींद आ ग
खड़-खड़ की आवाज़ सुनकर जब मेरी आँख खुली तो भय और आश्चर्य से मेरा
धड़कने लगा। मेरा पिंजरा हवा में उड़ रहा था। मैं अभी सोच में ही पड़ा हुआ था
अचानक पिंजरा इतनी तेज़ी से नीचे गिरा कि मेरी आँखें भय से बंद हो गईं। छप
पिंजरा एक बार तो पानी में काफ़ी नीचे तक चला गया, परन्तु कुछ ही क्षणों में नाव
तरह तैरने लगा।

"खुला समुद्र, लहरों के थपेड़े, तीर की तरह चुभती ठण्डी हवा, खाने-पीने का
ठिकाना नहीं, मेरे दुर्भाग्य का कहाँ अन्त होगा! इससे तो मैं महारानी की क़ैद में ही
था", मैं सोचने लगा।

मैंने अपने आपको भाग्य के सहारे छोड़ दिया। उस असहाय स्थिति में पड़े
मुझे काफ़ी देर हो गई थी कि मुझे लगा जैसे कोई पिंजरे को तेज़ी से एक ओर खींच
है। पिंजरे की खिड़की से हाथ निकालकर मैं ज़ोर-ज़ोर से मदद के लिए चिल्लाने ल
जब जवाब में मैंने अपने देश की भाषा सुनी तो मेरे रोम-रोम खिल उठे।

वे मेरे देश के नाविक थे। उन्होंने जहाज़ पर खड़े-खड़े इस पिंजरे को देखा तो ा फेंककर उसे अपनी ओर खींच लिया। पिंजरे में एक जीवित मनुष्य को देखकर के आश्चर्य की सीमा न रही।

जब मैंने अपनी कहानी सुनाई तो उन्हें इस बात पर बहुत आश्चर्य हुआ कि मैं ने दिनों तक उन विशालकाय लोगों के बीच में रहकर जीवित कैसे बचा!

मैं आज भी जब उन विचित्र लोगों के बारे में सोचता हूँ तो उनके प्रति एक नोखी ममता से भर उठता हूँ।

ब्दार्थ और टिप्पणी

द्वीप-समूह	=	समुद्र में छोटे-छोटे स्थल-समूह
सौभाग्य	=	खुशक़िस्मती
मानव-आकृति	=	इनसानी शक्ल
उत्तरदायित्व	=	ज़िम्मेदारी
मुक्ति	=	आज़ादी, छुटकारा
दीपक	=	चिराग़
विशालकाय	=	बहुत बड़े शरीरवाला
रोम-रोम खिल उठना	=	बहुत ज़्यादा खुश होना
आश्चर्य की सीमा न रहना	=	बहुत हैरान होना
ममता	=	अपनापन, स्नेह

अभ्यास

विषय-बोध

(क) मौखिक

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. गुलीवर कहाँ नौकरी करता था?
2. गुलीवर का जहाज़ चकनाचूर क्यों हो गया?
3. गुलीवर की छाती पर कौन-सी चीज़ आ खड़ी हुई?
4. गुलीवर ने चुपचाप लेटे रहने में ही अपनी भलाई क्यों समझी?
5. लिलिपुट के बादशाह ने गुलीवर को अपने देश की भाषा सिखाने के लिए क्या किया?
6. समुद्र का पानी किस महाद्वीप के विशालकाय आदमी के घुटनों तक ही आ रहा थ?

(ख) लिखित

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. लिलिपुटवासियों ने गुलीवर की भूख-प्यास मिटाने के लिए क्या किया?
2. शरारती व्यक्तियों के साथ गुलीवर ने क्या किया?
3. लिलिपुट के बादशाह ने किन शर्तों पर गुलीवर को मुक्त करने की बात कही?
4. गुलीवर ने लिलिपुट के बादशाह और वहाँ के निवासियों को कैसे खुश कर दिया?
5. अफ़्रीक़ा के दक्षिणी किनारे पर स्थित टापू के मनुष्यों, जीव-जन्तुओं और अन्य वस्तुओं की क्या विशेषताएँ थीं?
6. गुलीवर को महारानी के पिंजरे से मुक्ति कैसे मिली?

ाषा-बोध

उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए :

मिठाई	= मिठाइयों, मिठाइयाँ	नदी	= नदियों, नदियाँ
दवाई	=	तितली	=
चढ़ाई	=	मछली	=
टापू	= टापुओं	प्याऊ	= प्याउओं
आँसू	=	ताऊ	=
भालू	=	खड़ाऊँ	=

उपर्युक्त शब्दों के बहुवचन रूप पर विचार कीजिए। जिन शब्दों के अन्त में 'ई' (ी) या 'ऊ' (ू) है, उनका बहुवचन रूप बनाते समय दीर्घ स्वर (ई, ी, ऊ, ू) को ह्रस्व स्वर (इ, ि, उ, ु) में बदल दिया जाता है। हाँ, जिन शब्दों के एकवचन रूप में ह्रस्व स्वर (इ, ि) होता है, उन शब्दों का बहुवचन रूप बनाते समय ह्रस्व स्वर में कोई परिवर्तन नहीं होता।

जैसे : तिथि = तिथियों, तिथियाँ; नीति = नीतियों, नीतियाँ; अंजलि = अंजलियों, अंजलियाँ। उपर्युक्त इकारान्त (इ) शब्दों बहुवचन रूप में भी ह्रस्व स्वर (ि) का रूप नहीं बदला है। इस नियम को ध्यान में रखें।

छ और काम

1. अपने स्कूल के पुस्तकालय से कुछ विश्व प्रसिद्ध यात्रियों के यात्रा-वृत्तान्त प्राप्त करके पढ़िए।

पाठ - 20

भिक्षुक

वह आता –

दो टूक कलेजे के करता, पछताता
पथ पर आता।
पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी-भर दाने को – भूख मिटाने को,
मुँह फटी-पुरानी झोली का फैलाता –
दो टूक कलेजे के करता, पछताता
पथ पर आता।
साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए,
और दाहिना दया-दृष्टि की ओर बढ़ाए।
भूख से सूख ओंठ जब जाते
दाता – भाग्य-विधाता से क्या पाते? –
घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते।
चाट रहे हैं जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।

– सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

ब्दार्थ और टिप्पणी

भिक्षुक = भिखारी

लकुटिया = छोटी लाठी, छड़ी

दया-दृष्टि = नज़रे-करम, कृपा-दृष्टि

भाग्य-विधाता = क़िस्मत बनानेवाला

पत्तल = पत्ता (जिसपर खाना खाया जाता है)

अभ्यास

षय-बोध

क) मौखिक

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. भिखारी क्यों पछता रहा है?
2. भिखारी अपनी फटी-पुरानी झोली का मुँह क्यों फैलाता है?
3. भिखारी और उसके बच्चे बाएँ और दाएँ हाथों से क्या करते हैं?
4. भिखारी और उसके बच्चे सड़क पर खड़े होकर क्या करते हैं?
5. भिखारी के साथ कुत्ते भी सड़क पर क्यों अड़े हुए हैं?

ख) लिखित

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'दो टूक कलेजे के करता' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
2. लकुटिया टेककर कौन चल रहा है और क्यों?
3. भिखारी के बच्चे आँसुओं के घूँट पीकर क्यों रह जाते हैं?

4. 'भिक्षुक' शीर्षक कविता पढ़कर आपके मन में जो भावनाएँ उत्पन्न होती हैं, उन्हें अप
शब्दों में लिखिए।

(ग) रिक्त स्थानों की पूर्त्ति कीजिए :

1. पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा ....,
2. भूख से सूख ओंठ जब जाते
..........................क्या पाते?

कुछ और काम

1. आपके माता-पिता भिखारियों, असहायों और निर्बल लोगों की सहायता जिस प्रकार क
हैं उसे अपने शब्दों में लिखिए।

2. हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰) द्वारा 'भिक्षा-वृत्ति' रोकने के उपाय की जानकारी अपने शि
से प्राप्त कीजिए।

[संकेत : हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰) ने समाज के सभी असहाय लोगों की देखभाल की ज़िम्मे
को सरकारी ख़ज़ाने की प्राथमिकता में शामिल कर लिया था। ज़रूरतमन्द व्यक्तियों के लिए सरकारी ख़
से वज़ीफ़ा जारी किया था। बच्चा माँ का दूध छोड़कर जैसे ही रोटी खाने लगता था, वैसे ही उसका सरक
कोष से वज़ीफ़ा जारी कर दिया जाता था।

एक बार हज़रत उमर ने देखा कि एक औरत अपने बच्चे को दूध छुड़ाने के लिए ज़बरदस्ती
खिलाने का प्रयास कर रही थी। बच्चा दूध के लिए बिलख रहा था। यह देखकर उनका हृदय द्रवित हो
और उन्होंने बच्चे के जन्म लेते ही वज़ीफ़ा जारी करने का क़ानून बनवा दिया।

हज़रत उमर (रज़ि॰) अपनी प्रजा का हाल जानने के लिए रात्रि-गश्त किया करते थे और ज़रूरत
लोगों तक आवश्यक सामग्री स्वयं अपनी पीठ पर लाद कर पहुँचाया करते थे। इस प्रकार हज़रत उमर
शासनकाल में लोगों की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्त्ति हो रही थी। फिर भी कुछ लोभी क़िस्म के
लोग धन के लोभ में भिक्षावृत्ति अपनाते तो हज़रत उमर उनको कोड़े लगवाते थे।]

ठ - 21

उत्तम खेती

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की दो तिहाई आबादी खेती पर निर्भर
ती है। खेती की पैदावार से ही उनकी जीविका की सारी आवश्यकताएँ पूरी होती हैं।
लिए भारत सरकार ने कृषि के विकास के लिए बहुत-सी योजनाएँ बनाई हैं।

प्राचीनकाल से ही भारत में कृषि को प्रमुखता मिली हुई है। इसका कारण यह है
भारत की मिट्टी काफ़ी उपजाऊ है। यहाँ नदियों का जाल बिछा हुआ है और फ़सल
अनुकूल मौसम पाया जाता है। परन्तु पर्याप्त वर्षा नहीं होती है, इसलिए सिंचाई के
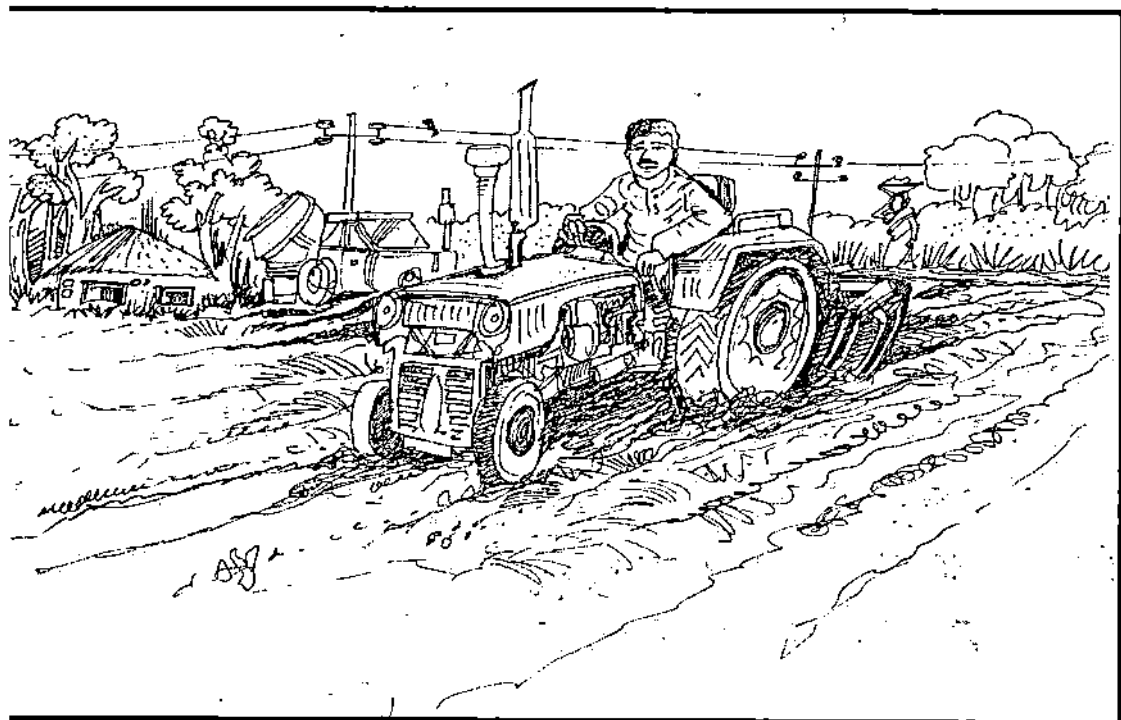
लिए अन्य साधनों का भी उपयोग किया जाता है। हमारे देश में अभी तक वैज्ञानिक से उत्तम एवं आधुनिक कृषि-प्रणाली का पर्याप्त विकास नहीं हो पाया है। आज अधिकतर किसान खेती के लिए परम्परागत साधनों पर ही निर्भर हैं। वे कृषि-कार्य हल, हेंगा, फावड़ा, कुदाल, हँसिया, खुरपी इत्यादि का इस्तेमाल करते हैं। हल लक और लोहे का एक यंत्र होता है जिसका एक सिरा किसान के हाथ में होता है और उस दूसरे सिरे पर बैल, भैंसा, ऊँट आदि को बाँधकर हाँका जाता है। इस प्रकार हल के न का नुकीला भाग ज़मीन को चीरता हुआ आगे बढ़ता है। इससे 5-6 इंच गहराई त मिट्टी उखड़कर हलकी हो जाती है। खेतों की लम्बाई और चौड़ाई दोनों दिशाओं से चलाने के बाद मिट्टी के बड़े ढेलों को बारीक बनाने के लिए लकड़ी के एक भारी अ बड़े हेंगे या चौकी से बैलों को बाँधकर खेतों में घसीटते हैं। इस घर्षण से मिट्टी बारी और चूर्ण हो जाती है। फिर खेतों में खाद और बीज डालते हैं। अनुकूल समय पर ए सेटों, कुओं, नलों या नहरों से सिंचाई की जाती है।

जब खेतों में पौधे बढ़ने लगते हैं तो उनके साथ घास-फूँस भी निकल आती उन अवांछित तत्त्वों को बाहर निकालना आवश्यक होता है, अन्यथा फ़सलें दबकर त हो जाती हैं। अतः उन्हें निकालने के लिए खुरपी, हँसिया, फावड़ा इत्यादि का उपय करके निराई की जाती है। इस प्रकार खेतों की सफ़ाई और मिट्टी की हलकी खुदाई जाती है। फिर खाद और पानी डाला जाता है और फ़सल लहलहाने लगती है। यह दृ किसानों के लिए बड़ा सुखद होता है। जब फ़सल पक जाती है तो हँसिया आदि के ह उसकी कटाई होती है। फिर हाथों, पैरों, डंडों के अतिरिक्त बैलों को कटी फ़सलों के पर दौड़ाकर दँवरी की जाती है। दँवरी करने से पौधों के डंठल चूर हो जाते हैं और बालियों से अलग हो जाते हैं। भूसा मिश्रित दानों को हवा के तेज़ झोंके में ओसाया ज है। भूसा उड़कर अलग हो जाता है और साफ़ दाने अलग हो जाते हैं।

खेती की इस प्रक्रिया में किसानों को पानी आदि के लिए प्रकृति पर निर्भर रहना ऽता है। इस विधि से खेती करने में अत्यन्त कठोर परिश्रम करना पड़ता है और उपज कम होती है। कम वर्षा होने अथवा अनावृष्टि की स्थिति में तो पारंपरिक ढंग से की नेवाली खेती तबाह हो जाती है।

अतः अब किसान कृषि के आधुनिक तरीक़े भी अपनाने लगे हैं। अब उन्नत और कर बीजों और कम्पोस्ट तथा रासायनिक खादों के उपयोग के कारण उपज में काफ़ी द्धि हुई है। पहले एक खेत से साल भर में सिर्फ़ दो फ़सलें – रबी और ख़रीफ़ – पैदा ती थीं। इस प्रकार की खेती से किसानों की आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो पाती थीं। भी-कभी प्रतिकूल मौसम के कारण देश को अकाल का सामना करना पड़ता था। ालिए वैज्ञानिक ढंग से खेती करने की विधि पर काफ़ी बल दिया गया और हरित न्ति का नारा लगाया गया। देश में हरित क्रान्ति आई, जिसके बाद खाद्यान्न के मामले देश आत्मनिर्भर हो गया।

वैज्ञानिक ढंग से की जानेवाली खेती को 'उत्तम खेती' कहा जाता है। इसमें रीरिक श्रम कम लगता है तथा समय की बचत होती है और कृषि-कार्य शीघ्र सम्पन्न जाते हैं। वैज्ञानिक उपकरणों, उन्नत संकर बीजों, रासायनिक खादों और कीटनाशक ाओं के प्रयोग के कारण कृषि उत्पादन में आशातीत वृद्धि हुई है। नए प्रकार के नत संकर बीजों के कारण कम समय में फ़सलें तैयार हो जाती हैं। इसके कारण अब क साल में तीन-चार से भी अधिक फ़सलें उगाई जाने लगी हैं। इस कारण किसानों के वन में खुशहाली आने लगी है।

उत्तम खेती के लिए छह चीज़ें आवश्यक हैं :

1. खेती की मिट्टी की जाँच, 2. रासायनिक एवं कम्पोस्ट खाद,

3. कीटनाशक दवाएँ, 4. वैज्ञानिक उपकरण,

5. उन्नत संकर बीच और 6. सिंचाई का पर्याप्त साधन।

भारत में मुख्य रूप से गेहूँ, चावल, मक्का, ज्वार, बाजरा, दलहन, तेलहन, कपा पटसन, चाय, कॉफ़ी इत्यादि की खेती होती है। इन फ़सलों के लिए उपयुक्त मिट्टी उ वातावरण आवश्यक है। मिट्टी की जाँच करके उसकी उर्वरा शक्ति और विविध फ़स के लिए उसकी उपयुक्तता का पता लगाया जाता है। इसके लिए प्रयोगशालाओं के द्व किसानों को सुविधा उपलब्ध कराई जाती है।

अब ट्रेक्टर से खेतों की जुताई की जाने लगी है। ट्रेक्टर से जुताई करने पर ए फुट गहराई तक मिट्टी की खुदाई हो जाती है। उस नर्म मिट्टी में पौधों का विक अच्छा होता है। इससे कम परिश्रम और कम समय में खेत की अच्छी जुताई हो जाती

उत्तम खेती के लिए खाद का प्रयोग आवश्यक है। घास और जानवरों के गो से तैयार होनेवाला कम्पोस्ट खाद भी उत्तम होता है। लेकिन आजकल विभिन्न प्रकार रासायनिक खादों का उपयोग किया जाता है। खादों से पौधों को आवश्यक पोषक त प्राप्त होते हैं। इसलिए पौधों में अच्छे फल और बालियाँ लगती हैं और उत्पादन में का वृद्धि होती है। परन्तु रासायनिक खादों के प्रयोग से विषैले तत्त्वों का अनाजों में समाव हो जाता है। फलतः उपभोक्ता को कई प्रकार की बीमारियों का सामना करना पड़ता यह दोष कम्पोस्ट खाद में नहीं होता है।

फ़सलों में अनेक प्रकार के कीट लग जाते हैं। कुछ जड़ को ही काट डालते तो कुछ पत्तों को चाट जाते हैं। कुछ कीड़े फूलों और फलों को नष्ट कर देते हैं। कीटों से फ़सलों को बचाने के लिए कीटनाशक दवाओं का प्रयोग किया जाता है। कु दवाएँ पौधों की जड़ों में डाली जाती हैं और कुछ दवाओं को पानी में घोलकर पत्तों, फू और फलों पर स्प्रे मशीनों के द्वारा छिड़काव किया जाता है। इससे पौधे रोग उ कीटाणुओं से मुक्त हो जाते हैं और उपज अधिक होती है। लेकिन विषैली दवाओं

प्रभाव अनाजों और फलों पर होता है जो स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद होता है।

वैज्ञानिक विधि से तैयार किए गए उन्नत संकर बीजों से स्वस्थ पौधे उगते हैं और में अच्छे फल तथा बालियाँ लगती हैं। उनके दाने अत्यन्त पुष्ट और अधिक परिमाण होते हैं। ऐसे बीजों से कम समय में फ़सल तैयार हो जाती है। इस प्रकार संकर बीज ने से उपज बहुत अधिक होती है।

बीज उत्पादक कम्पनियाँ उन्नत बीज तैयार करवाकर अधिकाधिक व्यापारिक भ प्राप्त करने हेतु अपने नाम पर उसका पेटेंट करवा लेती हैं। इससे उत्पादित बीज सम्बन्धित कम्पनी को एकाधिकार प्राप्त हो जाता है। दूसरे लोग या कम्पनियाँ पेटेंट जों का उत्पादन नहीं कर सकतीं। इन बीजों से उपजनेवाले दानों को भी बीज के रूप प्रयोग नहीं किया जा सकता, क्योंकि उन बीजों को यदि दोबारा खेत में बोया जाए पौधों में पर्याप्त दाने नहीं लगते। अतः किसान विवश होता है कि वह उक्त कम्पनी ही बीज ख़रीदे। ऐसी स्थिति में कम्पनीवाले बीजों की क़ीमत इतनी बढ़ा देते हैं कि उन्हें ोदने में किसानों की कमर टूट जाती है। कभी-कभी कुछ धोखेबाज़ लोग मुनाफ़ख़ोरी के भ में नक़ली बीज भी सप्लाई कर देते हैं, जिससे पूरी खेती चौपट हो जाती है। किसान ों मरने लगते हैं और क़र्ज़ के बोझ तले दब जाते हैं। ऐसी स्थिति में किसान विवश कर आत्महत्याएँ करने लगते हैं। प्रशासन यदि सावधानी बरते तो ऐसी स्थिति पर क़ाबू ा जा सकता है।

भारत में सिंचाई के अनेक साधन हैं, जैसे वर्षा, कुआँ, नहर, नलकूप, पम्प सेट ादि। हमारे देश के हर भाग में हर वर्ष पर्याप्त वर्षा नहीं होती है। इसलिए अल्पवृष्टि अनावृष्टि की स्थिति में पम्प सेटों, नलकूपों आदि से सिंचाई की जाती है। कुछ देशों वैज्ञानिक आकाश में रासायनिक पदार्थों का छिड़काव करके कृत्रिम वर्षा कराकर चाई की आवश्यकता की पूर्ति करने के प्रयास में जुटे हैं। इसके अतिरिक्त बड़ी-बड़ी

नदियों पर बाँध बनाकर उनसे नहरें निकाली जाती हैं, जिनके द्वारा खेतों की सिंच आवश्यकतानुसार उचित समय पर हो जाती है। फ़सलें सूखने से बच जाती हैं उ खेती से भरपूर लाभ पहुँचता है।

कभी-कभी अतिवृष्टि के कारण बाढ़ आ जाती है, जिससे खेतों में खड़ी फ़सलें जाती हैं। इससे किसानों को बड़ी हानि होती है। इसलिए सरकार बाढ़ पर नियंत्रण लिए भी प्रयास करती रहती है।

फ़सल तैयार हो जाने के बाद कटाई और निराई का काम करने के लिए कम्बा और थ्रेशर मशीनों का सहारा लेते हैं। इससे कटाई और दँवरी का काम कम समय आसानी से सम्पन्न हो जाता है और फ़सल बरबाद नहीं होती है। किसान अधि पैदावार करके अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करता है और देश को भी सम्पन्न और सम् बनाता है।

उत्तम खेती के लिए काफ़ी धन की ज़रूरत पड़ती है। खादों, बीजों, मशी सिंचाई इत्यादि पर भारी रक़म ख़र्च होती है। इसलिए ग़रीब किसान मुद्रा के अभाव इसका भरपूर लाभ उठाने से वंचित रह जाते हैं।

बड़े किसान अपनी आवश्यकता भर अनाज रखकर शेष को बाज़ार में बेच हैं और छोटे किसान अपनी घरेलू आवश्यकता की पूर्ति के लिए मजबूरन अनाज बे हैं। सरकारी और व्यक्तिगत गोदामों में अनाजों का भण्डारण किया जाता है। चूहों उ कीड़ों आदि से बचाने के लिए वहाँ भी विषैली दवाओं का प्रयोग होता है। उस दुष्प्रभाव स्वास्थ्य पर पड़ता है। इसके अतिरिक्त सड़नेवाली चीज़ों – जैसे आलू, प्य एवं दूसरी सब्ज़ियों को सुरक्षित रखने के लिए इन्हें शीत-गृह (कोल्ड-स्टोरेज) में र जाता है।

वैज्ञानिक विधि से की जानेवाली उन्नत और उत्तम खेती के कारण खाद्यान्न के ामले में हमारा देश आत्मनिर्भर हो गया है। आवश्यकता पड़ने पर कुछ चीज़ों का यात एवं निर्यात किया जाता है।

ब्दार्थ और टिप्पणी

कृषि	= खेती	जीविका	= रोज़ी
योजना	= मनसूबा	अनावृष्टि	= सूखा, वर्षा न होना
अतिवृष्टि	= अत्यधिक वर्षा	घर्षण	= घिसावट, रगड़
चूर्ण	= चूरा, बुकनी, बारीक	अवांछित	= अनचाहा
आशातीत	= आशा से अधिक	यंत्र	= उपकरण, औज़ार
संकर	= मिश्रित, दोगला	विविध	= तरह-तरह के, विभिन्न, मुख़्तलिफ़
दुष्प्रभाव	= बुरा असर	कम्पोस्ट	= गोबर और कचरे का खाद
स्वास्थ्य	= तन्दुरुस्ती	उपयुक्तता	= औचित्य, अनुकूलता
समृद्ध	= विकसित, धनी	एकाधिकार	= इजारादारी, एक ही व्यक्ति या संस्था का अधिकार
सुदृढ़	= ख़ूब मज़बूत		

दँवरी = पकी और कटी हुई फ़सल को बैलों द्वारा रौंदवाकर दाना अलग करने की प्रक्रिया

अभ्यास

ाय-बोध

) मौखिक

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. भारत को कृषि प्रधान देश क्यों कहा जाता है?

2. पारंपरिक रूप से खेती करने के लिए किन-किन यंत्रों का प्रयोग किया जाता ह?

3. सिंचाई के परंपरागत और आधुनिक साधन क्या-क्या हैं?

4. कम्पोस्ट खाद से आप क्या समझते हैं?

5. उत्तम खेती से आप क्या समझते हैं?

6. उत्तम खेती में किन-किन यंत्रों और मशीनों का इस्तेमाल होता है?

(ख) लिखित

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. भारत में उत्तम खेती के लिए क्या-क्या सुविधाएँ उपलब्ध हैं?

2. परंपरागत खेती किसे कहते हैं?

3. उत्तम खेती के क्या-क्या लाभ हैं?

4. रासायनिक खादों और कीटनाशकों के लाभ और हानियों पर प्रकाश डालें।

5. अनाजों का भण्डारण और संरक्षण किस प्रकार किया जा सकता है?

भाषा-बोध

1. **निम्नलिखित शब्दों का वाक्य-प्रयोग द्वारा लिंग-निर्धारण कीजिए :**
   खेती, वर्षा, कुदाल, फ़सल, चाय, विकास, बाढ़, लाभ।

कुछ और काम

1. संकर बीजों का उत्पादन किस प्रकार किया जाता है? शिक्षक से मालूम कीजिए।

2. कक्षा में 'उत्तम खेती' पर एक परिचर्चा का आयोजन कीजिए।

ठ - 22

पत्र

शाहदरा

10-04-07

र पुत्र,

अस्सलामुअलैकुम व रहमतुल्लाह!

तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुम अपनी पढ़ाई लगन कर रहे हो। तुमने गर्म कपड़े, साइकिल और मोबाइल फ़ोन की माँग की है। बेटे! ी तुम्हें न साइकिल की ज़रूरत है और न ही मोबाइल फ़ोन की। गर्म कपड़ों का एक और खाने की कुछ चीज़ें तुम्हारी अम्मी ने तुम्हारे पास भेज दी हैं। आशा है, अब ें कोई असुविधा न होगी।

अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखना छात्र-जीवन का एक महत्त्वपूर्ण गुण है; ेष रूप से उन छात्रों के लिए जो जीवन का कोई महान उद्‌देश्य सामने रखते हैं। ई से सम्बन्धित आवश्यक चीज़ों के अतिरिक्त दूसरी सुविधाओं पर ध्यान देने से देश्य की प्राप्ति में बाधा पहुँचती है। सफलता प्राप्त होने के बाद विकास और ा-सुविधा के आवश्यक साधन खुद-ब-खुद मुहैया होते रहेंगे। इसलिए धैर्य, संयम और ाष का दामन थामना चाहिए। तुम खुद सोचो, अभी तुम्हें आराम की नहीं, बल्कि न भरने की ज़रूरत है। यह उड़ान हवाई जहाज़ में बैठकर नहीं, बल्कि विषयों की री और अंकों की प्राप्ति के द्वारा भरनी है।

बेटे! मानव-जीवन एक वृक्ष के समान है। परिवार, समाज और शिक्षक इसके

माली हैं। छात्र रूपी इस कोमल वृक्ष को वे इसलिए अपने ख़ून और पसीने से सींचत
कि कल यह विशालकाय वृक्ष बनकर समाज को शीतल छाया प्रदान कर सके। अ
सुगन्धित फूलों और सुस्वादु फलों से तृषित आत्माओं को तृप्त कर सके। जो छात्र अ
लक्ष्य पर नज़र टिकाए रहते हैं और उसे प्राप्त करने के लिए पूरी लगन के साथ निर
कठोर परिश्रम करते रहते हैं, उन्हें सफलता अवश्य मिलती है। ऐसे छात्र अपने स
अपने समाज का भी भला करते हैं और वृक्ष की भाँति कल्याणकारी बन जाते हैं। लेवि
जो निरर्थक कामों में अपना समय गँवाते हैं, वे छायादार पेड़ नहीं बलकि ठूँठ वृक्ष बन
अपना सर्वनाश तो करते ही हैं, समाज के साथ विश्वासघात भी करते हैं।

छात्र-जीवन ही मनुष्य के बनने-बिगड़ने का समय है। संतुलित भोजन की भ
संतुलित क्रिया-कलाप न हो तो जीवन का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। आज समाज
मानव-मूल्यों का जो ह्रास व्याप्त है, उसका मूल कारण यही है। अतः तुमको मेरी उ
से यही नसीहत है कि जीवन के सर्वांगीण विकास-पथ से कभी विचलित न हो
अध्यापकों से अनुकूल आचरण का ख़याल रखना। मैं अगले महीने तुमसे मिलने आउ
तो तुम्हारे लिए एक सुन्दर उपहार लेकर आऊँगा।

तुम्हारा शुभचिं

अब्दुर्रहम

पता :

अब्दुल्लाह यूसुफ़,

कक्षा-VI A,

राजकीय माध्यमिक विद्यालय छात्रावास,

कमरा संख्या-35,

राजेन्द्र नगर, पटना (बिहार)

ब्दार्थ और टिप्पणी

सीमित = महदूद, सीमा के अन्दर
अर्जित करना = हासिल करना, कमाई करना
सुस्वादु = अच्छे स्वादवाला, लज़ीज़
तृषित = प्यासा, बेचैन
तृप्त = संतुष्ट, अघाया हुआ
लक्ष्य = उद्देश्य, वह मंज़िल जहाँ पहुँचना हो, गंतव्य
कल्याणकारी = फ़लाह का ज़ामिन, जिससे भला हो।
सर्वनाश = तबाह, सब कुछ नष्ट हो जाना
स्वस्थ = तन्दुरुस्त, सेहतमन्द, नीरोग
ह्रास = गिरावट, पतन
सर्वांगीण = सभी अंगों का, पूर्णतः

अभ्यास

्रय-बोध

) मौखिक

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीज़िए :

1. छात्रों को कैसी उड़ान भरने की चेष्टा करनी चाहिए?
2. अब्दुल्लाह यूसुफ़ की अम्मी ने उसके लिए क्या भेजा?
3. इस पत्र में ठूँठ वृक्ष किसे कहा गया है?
4. वर्तमान समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास क्यों होता जा रहा है?

(ख) लिखित

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. छात्र ने अपने पिता से किन-किन चीज़ों की माँग की थी?
2. छात्र को अपनी आवश्यकता सीमित रखनी चाहिए। क्यों?
3. माता-पिता और शिक्षक छात्ररूपी कोमल वृक्ष को अपने ख़ून और पसीने से क्यों सींचते हैं
4. छात्र-जीवन का क्या महत्त्व है?
5. पिता ने अपने पुत्र को क्या नसीहत की?

भाषा-बोध

1. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय छाँटिए :

प्रसन्नता, सफलता, विशालकाय, विश्वासघात, सर्वनाश, कल्याणकारी, छायादार, सुस्वादु।

कुछ और काम

1. अपने पिता को एक पत्र लिखिए जिसमें अपने जीवन-लक्ष्य का वर्णन कीजिए।
2. पुस्तकालय से एक पत्र-संग्रह निकालकर पढ़िए।

ठ - 23

रहीम के दोहे

बड़े बड़ाई नहिं करै, बड़े न बोलें बोल ।
'रहिमन' हीरा कब कहै, लाख टका है मोल।।

जो 'रहीम' उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग ।
चन्दन विष व्यापत नहिं, लिपटे रहत भुजंग।।

खीरा सिर तें काटिए, मलियत लोन लगाय ।
'रहिमन, कड़ुए मुखन को, चहियत यही सज़ाय।।

तरुवर नहिं फल खात है, सरवर पियहिं न पानि ।
कहि 'रहीम' पर काज हित, सम्पत्ति संचहिं सुजानि।।

यों 'रहीम' सुख होत है, उपकारी के संग ।
बाँटनवारे को लगे, ज्यों मेंहदी को रंग।।

'रहिमन' पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए ना ऊबरै, मोती मानुस चून।।

'रहिमन' देखि बड़ेन को, लघु न दीजै डारि ।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि ।।

'रहिमन' विपदा हू भली, जो थोड़े दिन होय ।
हित अनहित या जगत् में, जानि परत सब कोय ।।

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय ।
'रहिमन' मूलहिं सींचिए, फूलहिं फलहिं अघाय ।।

यह 'रहीम' निज संग लै, जनमत जगत् न कोय ।
बैर, प्रीति, अभ्यास, जस, होत-होत ही होय ।।

शब्दार्थ और टिप्पणी

टका = रुपया
भुजंग = साँप
तरुवर = पेड़
सुजानि = ज्ञानी, बुद्धिमान
बाँटनवारे = पीसनेवाला, बाँटनेवाला
जस = यश, नेकनामी
या जगत् में = इस संसार में
लघु = छोटा
कुसंग = बुरी संगति
चहियत = चाहिए
सरवर = सरोवर, तालाब
काज = काम, कार्य
पानी = जल, चमक, प्रतिष्ठा
मूलहिं = जड़ को ही
जनमत = जन्म लेता है
डारि = त्याग देना, छोड़ देना

विपदा	= दुख, विपत्ति	साधे	= साधना, वश में करना
ऊबरै	= उबरना, फिर से वापस आना, उबर जाए	अघाय	= भरपूर, तृप्त होकर
		निज संग लै	= अपने साथ लेकर

अभ्यास

ाषय-बोध

ь) मौखिक

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. रहीम ने हीरे की क्या पहचान बताई है?
2. रहीम के अनुसार चन्दन की क्या विशेषता है?
3. रहीम के अनुसार बुरे आदमी के साथ कैसा आचरण किया जाना चाहिए और क्यों?
4. उपकारी व्यक्ति के साथ रहने से सुख क्यों मिलता है?
5. 'छोटी-बड़ी प्रत्येक वस्तु महत्त्वपूर्ण होती है।' इस भाववाला दोहा सुनाइए।

ख) लिखित

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. सज्जन सम्पत्ति-संचय क्यों करता है और सज्जन में पेड़ और नदी का कौन-सा गुण पाया जाता है?
2. 'पानी' के बिना मोती, मनुष्य और चूना किस प्रकार महत्त्वहीन हो जाते हैं?
3. विपत्ति का मज़ा भी कुछ समय चखना ज़रूरी है। क्यों?
4. कवि के अनुसार कौन-कौन-सी चीज़ें जन्मजात नहीं होतीं, बल्कि धीरे-धीरे अर्जित होती हैं?
5. कवि रहीम का कौन-सा दोहा आपको सबसे अच्छा लगा और क्यों? दोहा भी लिखिए।

(ग) रिक्त स्थानों की पूर्त्ति कीजिए :

1. जो 'रहीम' उत्तम प्रकृति, ... ।
चन्दन विष व्यापत नहिं, लिपटे रहत भुजंग।।

2. यों 'रहीम' सुख होत है, उपकारी के संग।
................................, ज्यों मेंहदी को रंग।।

3. एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
'रहिमन' मूलहिं सींचिए, ... ।।

कुछ और काम

1. 'एकै साधे सब सधै' कथन के द्वारा कवि रहीम ने एकेश्वरवाद के सिद्धान्त की पुष्टि है। कवि ने इसके लिए जगत् को वृक्ष और ईश्वर को उसका मूल बताकर उसे 'सीं की शिक्षा दी है। यहाँ 'सींचने' का आशय स्पष्ट कीजिए।

2. कवि रहीम ने अपनी बात की पुष्टि प्रायः किसी वस्तु की उपमा के द्वारा या लोकोक्ति प्रयोग करके की है। प्रस्तुत पाठ में प्रयुक्त किन्हीं चार उपमेय वस्तुओं के नाम या लोकोक्तियों को लिखिए।

ाठ-24

हृदय : एक अनोखा पम्प

हमारा शरीर प्रकृति की सबसे शानदार, जटिल और व्यवस्थित संरचना है। इसमें र अंग का अपना कार्य और महत्त्व है। हृदय को एक प्रमुख एवं विशिष्ट अंग माना ाता है। हमारा हृदय संसार का सर्वोत्तम स्वचालित पम्प है। यह अनगिनत मांसपेशियों ारा निर्मित यंत्र है। रक्त-वाहिकाएँ इससे जुड़ी हुई हैं। इन्हीं रक्त-वाहिकाओं द्वारा शुद्ध रक्त हृदय में आता है और शुद्ध रक्त पुनः रक्त-वाहिकाओं में पम्प कर दिया ाता है, जिसके कारण सम्पूर्ण शरीर में निरन्तर रक्त-संचार होता रहता है।

हृदय एक खोखला और संकुचनशील अंग है, जो दोनों फेफड़ों के बीच कुछ बाईं ओर, थोड़ा तिरछापन लिए स्थित होता है। हृदय देखने में ऐसा लगता है जैसे दो पम्प ाथ-साथ जुड़े हों। इसका आकार दोनों मुट्ठियों के बराबर होता है, बाईं मुट्ठी के बराबर सका बायाँ भाग और दाईं मुट्ठी के बराबर इसका दायाँ भाग। इसका लगभग 2/3 भाग बाईं तरफ़ और 1/3 भाग दाईं तरफ़ होता है। प्रत्येक भाग में दो चेम्बर्स होते हैं — पहला अलिन्द (एट्रिम या ओरिकल) कहलाता है और दूसरा निलय (वेंट्रिकल)। दूसरे शब्दों में, हृदय के बीच एक खड़ी और एक तिरछी पतली दीवार या परदा होता है, जिन्हें सेप्टम कहते हैं। सेप्टम के ज़रिए हृदय चार कोष्ठ (चेम्बर्स) में विभाजित होता है। हृदय के बाएँ भाग और दाएँ भाग के बीच एक-एक वॉल्व स्थित होता है। विभिन्न अंगों से अशुद्ध

रक्त शिराओं (वेंस) द्वारा हृदय के दाएँ भाग अर्थात् अलिन्द में आता है। यहाँ से र
शुद्धिकरण के लिए फेफड़ों में जाता है, जहाँ से रक्त शुद्ध होकर हृदय के बाएँ भाग
आता है और यहाँ से निलय द्वारा धमनियों (आर्टरीज़) में पम्प किया जाता है। धमनि
द्वारा शुद्ध रक्त पूरे शरीर को पहुँचाया जाता है। शुद्ध रक्त के ज़रिए ही अंगों
ऑक्सीजन मिलती है, इसलिए रक्त का निर्बाध प्रवाह ज़रूरी है। दोनों ओर निलय 3
अलिन्द के बीच कपाटिका (वाल्व) होती है जो खिड़की के पाट की तरह केवल एक
ओर खुलती है। धमनियों के उद्गम पर बनी इकतरफ़ी कपाटिका के कारण रक्त नि
में वापस नहीं जा सकता। साइकिल या फुटबॉल में हवा भरनेवाले पम्प या ट्यूबवेल
से पानी निकालनेवाले पम्प में भी ऐसी ही कपाटिकाएँ (वाल्व्स) होती हैं।

हृदय मनुष्य के जन्म से पूर्व ही धड़कना शुरू हो जाता है और उसकी अन्ति
साँस तक धड़कता रहता है। इस प्रकार हृदय अपने पम्पिंग सिस्टम द्वारा सारे शरीर
रक्त-संचार करता है। रक्त-संचार के बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। र
धमनियों, केशिकाओं (कैपिलरीज़) और शिराओं में दौड़ता हुआ हृदय में निरन
आता-जाता रहता है। रक्त हमेशा बारीक नलियों में ही बन्द रहकर एक गोल दायरे
निरन्तर एक ही दिशा में घुमता रहता है। यह कहीं भी इन नलियों के जाल से बाहर न
निकलता।

रक्त-चाप हमारे शरीर का अत्यन्त आवश्यक गुण है। रक्त-चाप द्वारा ही ह
हमारे शरीर में रक्त-संचार करता है, जिससे कोशिकाओं को ऑक्सीजन और अ
आवश्यक तत्त्व प्राप्त होते हैं। धमनियों के उद्गम-स्थल पर रक्त-चाप (ब्लड-प्रेशर) ब
अधिक होता है और शिराओं के छोर पर एकदम कम। इसलिए जैसे पानी हमेशा उ
धरातल से नीचे की ओर बहता रहता है, उसी प्रकार रक्त ऊँचे दबाव से कम दबाव
ओर बहता है और हृदय इस लौटे हुए दबावहीन रक्त को लेकर अपने संकुचन
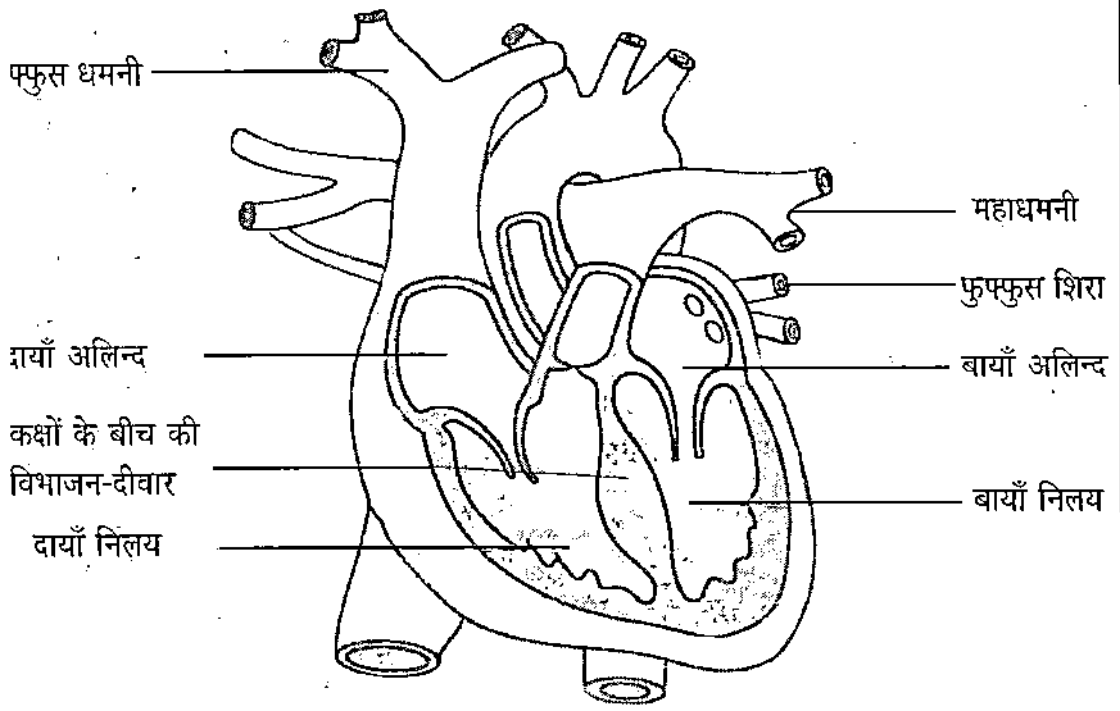
मानव-हृदय का काट-चित्र

व्र दबाव पर मुख्य धमनी में छोड़ देता है ।

एक सामान्य व्यक्ति का रक्त-चाप लगभग 120/80 पारा मि॰ मी॰ और छोटे वों का रक्त-चाप सामान्यतः 90/60 पारा मि॰ मी॰ होता है अर्थात् हृदय जब संकुचन रक्त को धमनी में पम्प करता है तो उस समय रक्त-चाप 120 पारा मि॰ मी॰ तक जाता है और जब हृदय पम्प का काम करना बन्द कर दोबारा भरने के लिए रुकता ो धमनियों में रक्त का दबाव गिरकर 80 पारा मि॰ मी॰ तक आ जाता है। 120 पारा मी॰ को सिस्टोलिक प्रेशर और 80 पारा मि॰ मी॰ को डायस्टोलिक प्रेशर कहा जाता सिस्टोलिक प्रेशर हृदय के पम्प करने की शक्ति को दिखाता है और डायस्टोलिक र धमनियों के लचीलेपन को।

जिस प्राणी का शरीर जितना विशाल होता है, उसका रक्त-चाप उतना ही अधि
होता है। तभी तो चूहों में 70 पारा मि॰ मी॰ , मनुष्य में 120 पारा मि॰ मी॰ और घोड़े
पारा 200 मि॰ मी॰ के लगभग रक्त-चाप होता है। स्वस्थ व्यक्ति का हृदय एक मिनट
आम तौर पर 72 बार धड़कता है अर्थात् एक धड़कन 0.8 सेकंड का समय लेती
इसमें 0.3 सेकंड आकुंचन (सिस्टोल) और 0.5 सेकंड विस्तारण (डायस्टोल) होता
इसका अर्थ यह हुआ कि 0.3 सेकंड काम और उसके दुगुने समय 0.5 सेकंड आरा
इस प्रकार एक दिन में हृदय लगभग 9 घंटे धड़कता है और 15 घंटे आराम करता
पूरे दिन में लगभग एक लाख बार धड़कता है। वैसे हृदय-गति हमारी शारीरिक क्रि
तथा मानसिक अवस्था पर निर्भर करती है। शारीरिक श्रम या व्यायाम करते सम
उत्तेजना, तनाव या डर के समय धड़कन तेज़ हो जाती है। बच्चों में हृदय की धड़
बड़ों की अपेक्षा तेज़ होती है।

अगर एक आदमी 52 साल जीवित रहता है तो इन 52 सालों में उसका ह
लगभग अठारह अरब बार धड़कता है और इस दौरान हृदय द्वारा पम्प किए गए र
की मात्रा लगभग बीस करोड़ लीटर होती है।

सामान्यतः एक वयस्क व्यक्ति का हृदय लगभग पाँच इंच लम्बा, साढ़े तीन
चौड़ा और ढाई इंच मोटा होता है। पुरुषों में इसका भार सामान्यतः 300 ग्राम और स्त्रि
में 250 ग्राम होता है ।

हृदय के दाएँ अलिन्द में नन्हीं-सी बिन्दी के बराबर एक तन्तु होता है जि
'साइनो-एट्रियल नोड' कहते हैं। इस तन्तु में औसतन प्रति मिनट 72 बार विद्युत सं
उत्पन्न होते हैं, जिनके फलस्वरूप हृदय 72 बार धड़कता है। हृदय एक मिनट में कित
बार धड़केगा यह इस तन्तु में उत्पन्न विद्युत संकेतों पर निर्भर करता है। इसलिए 'सा
-एट्रियल नोड' को 'पेस-मेकर' भी कहते हैं। पेस-मेकर में गड़बड़ी पैदा होने पर हृदय

ो और लय गड़बड़ा जाती है, जिससे मरीज़ की जान ख़तरे में पड़ जाती है। आवश्यक
ो पर डॉक्टर आजकल बैट्री से चलनेवाले 'कार्डियाक पेस-मेकर' नामक उपकरण
ा देते हैं, जिससे उत्पन्न विद्युत संकेत हृदय को चालू रखते हैं।

कई बार बढ़ती आयु के साथ तथा दूसरे कारणों, जैसे सिगरेट तथा शराब पीने,
ाकू खाने, मोटापा, बहुत अधिक नमक खाने, मानसिक तनाव, शारीरिक परिश्रम का
ाव, मधुमेह इत्यादि से धमनियों में कोलेस्ट्रोल और निकोटिन का जमाव अधिक होने
ता है। इसके कारण रक्त-प्रवाह कम हो जाता है। फलतः रक्त-चाप बढ़ने लगता है।
त-चाप के बढ़ने से धमनियों का लचीलापन कम हो जाता है और धमनियाँ सिकुड़ने
ती हैं। इसी बढ़े हुए रक्त-चाप को उच्च रक्त-चाप या हाइपरटेंशन कहते हैं, जो
जकल एक आम बीमारी हो गई है। ईश्वर ने हमारी धमनियों को एक विशेष दबाव
न करने के लिए बनाया है। अगर उनमें दबाव निरन्तर बहुत ऊँचा रहता है तो
की दीवार पर इसका बहुत बुरा असर पड़ता है और रक्त-वाहिकाओं में एक विशेष
ार के पदार्थ वसा (कोलेस्ट्रोल) का जमाव होने लगता है, जिससे ख़ून की नालियाँ तंग
ो लगती हैं। फलतः पम्पिंग सिस्टम पर बोझ बढ़ जाता है और हृदय कमज़ोर होने
ता है। इस प्रकार आवश्यकता से अधिक उच्च रक्त-चाप या हाइपरटेंशन का मनुष्य
शरीर पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता है। इसके कारण मनुष्य के तीन प्रमुख अंग
तष्क, हृदय और गुर्दे क्षतिग्रस्त होने लगते हैं। इसलिए बढ़ते वज़न पर नियंत्रण करने
लिए नियमित रूप से व्यायाम करना आवश्यक है। साथ ही अल्कोहल (शराब) तथा
पान से दूर रहना बहुत ज़रूरी है।

हृदय की धड़कन एक पम्प की तरह रक्त-प्रवाह चालू रखती है। हृदय सारे शरीर
पोषक तत्त्व और ऑक्सीजन पम्प करता है। इसे अपने कार्य के लिए भी ईंधन
हिए। लेकिन अपने चेम्बर्स (कोष्ठों) में भरे रक्त से हृदय पोषक तत्त्व नहीं ले सकता।

महाधमनी के उद्गम के पास से दो कोरोनरी धमनियाँ निकलती हैं, जो हृदय की स
पर सूक्ष्म शाखाओं में विभाजित होकर हृदय को ऑक्सीजन और पोषक तत्त्व वित
करती हैं। कोरोनरी का अर्थ होता है मुकुट या ताज और ये धमनियाँ हृदय पर मु
की तरह फैली होती हैं। ये धमनियाँ जितना महत्त्वपूर्ण कार्य हृदय और शरीर के ि
करती हैं, उसे देखते हुए कोरोनरी धमनियों को मुकुट का नाम दिया जाना उचित ही
इन धमनियों के अवरुद्ध होने पर ही हृदयाघात (हार्ट अटैक) होता है।

शब्दार्थ और टिप्पणी

संरचना = ढाँचा, बनावट
रक्त-वाहिका = रक्त ले जानेवाली नली
ऊपर आना
आकुंचन = सिकुड़न
मस्तिष्क = दिमाग़, मग़ज़
क्षतिग्रस्त = टूट-फूट का शिकार
अवरुद्ध = बन्द, रुका या रोका हुआ
स्वचालित = अपने आप चलनेव
उद्गम = उत्पत्ति-स्थान, जन्म
सामान्यतः = आम तौर पर
विस्तारण = फैलाव
उच्च रक्त-चाप = हाई ब्लड प्रेशर
पोषक = पालनेवाला, बढ़ानेव

अभ्यास

विषय-बोध

(क) मौखिक

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. अलिन्द और निलय के क्या कार्य हैं?

2. हमारे हृदय का कितना भाग दाईं ओर और कितना भाग बाईं ओर होता है?

3. हमारा हृदय दिन भर में कितने घंटे धड़कता और कितने घंटे आराम करता है?

5. रक्तवाही धमनियाँ तंग क्यों हो जाती हैं?

5. एक स्वस्थ व्यक्ति का हृदय एक मिनट में सामान्यतः कितनी बार धड़कता है?

ब) लिखित

अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. हृदय अशुद्ध रक्त को शुद्धिकरण के लिए कहाँ भेजता है?

2. एक स्वस्थ व्यक्ति और एक बच्चे में आम तौर पर कितना रक्तचाप होता है?

3. 'साइनो-एट्रियल नोड' किसे कहते हैं? इसके क्या कार्य हैं?

4. 'कार्डियाक पेस-मेकर' के क्या कार्य हैं?

5. रक्तचाप बढ़ने के क्या कारण हैं?

6. उच्च रक्त-चाप के कारण हमारे किन अंगों के क्षतिग्रस्त हो जाने की आशंका रहती है?

ग) कोष्ठकों में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. दाएँ अलिन्द में शिराओं द्वारा............रक्त आता है। (शुद्ध, अशुद्ध)

2. 120 पारा मि॰ मी॰ रक्तचाप को.............प्रेशर कहा जाता है। (सिस्टोलिक, डायस्टोलिक)

3. ....प्रेशर धमनियों के लचीलेपन को दिखाता है। (सिस्टोलिक, डायस्टोलिक)

4. रक्तचाप के बिना शरीर में रक्त का ....नहीं हो सकता। (दबाव, संचार)

5. हृदय सारे शरीर में पोषक तत्त्व और ....पम्प करता है। (हाइड्रोजन, ऑक्सीजन)

6. कोरोनरी धमनियों के अवरुद्ध हो जाने पर............होता है। (हृदयाघात, निम्न रक्तचाप)

भाषा-बोध

1. संज्ञा से विशेषण बनाइए :

रस = रसीला	लचक =..............	चमक =..............
ख़र्च =..............	रंग =..............	शर्म =..............
ज़हर =..............	जोश =..............	बर्फ़ =..............

2. उपसर्ग और प्रत्यय छाँटकर लिखिए :

सपरिवार = स + परिवार, प्रतिभाशाली = प्रतिभा + शाली

आजीवन, दृढ़ता, बालपन, विज्ञान, असुविधा, रसहीन, भाग्यशाली, अपमान।

कुछ और काम

1. कुछ दूर दौड़िए और ज्ञात कीजिए कि दौड़ने से आपके हृदय की धड़कन में क्या अन्तर आया।

2. हृदय का चित्र बनाकर अपने शिक्षक को दिखाइए।

शब्दकोश

अ

ता = अंधकार, अंधापन, अज्ञानता

विश्वास = बिना सोचे-समझे ग़लत बात को सही मानना, बिना सोचे-समझे किसी बात को मान लेना

= धुरी, पृथ्वी के दोनों ध्रुवों को मिलाने वाली कल्पित रेखा, जो केन्द्र से होकर गुज़रती है

य = जिसका नाश न हो, जिसमें कमी न हो

ण्ण = समूचा, अखंडित

व्रलेश = सबका स्वामी, ईश्वर, अल्लाह

गण्य = जिसकी गिनती सबसे पहले हो, प्रधान, श्रेष्ठ

सर = आगे बढ़ना

य = भरपूर, तृप्त होकर

त = रहते हुए

ान-दशा = जाहिलियत की हालत, मूर्खता, नादानी

माई = नीचता, अधमता

ीनस्थ = मातहत, आश्रित, जो किसी के अधीन हो

ीरता = बेसब्री, उतावलापन

तम दिन = आख़िरत, क़ियामत, प्रलय-दिवस

यायी = पीछे चलनेवाला, पैरोकार, अनुगामी

ावृष्टि = सूखा, सुखाड़, वर्षा न होना

अतिवृष्टि = अत्यधिक वर्षा

अनुरक्त = लीन, मग्न, आसक्त

अन्वेषण = शोध, खोज, आविष्कार

अपयश = बदनामी, कुख्याति

अपरम्पार = असीम, अपार

अपशब्द = गाली, अप्रिय शब्द, दुर्वचन

अभियान = मुहिम, किसी विशेष उद्‌देश्य की प्राप्ति के लिए दल-बल सहित चल पड़ना

अभिशाप = बद्‌दुआ, दुख का कारण, शाप

अभीष्ट = इच्छित, आशय के अनुकूल

अभूतपूर्व = जो पहले न हुआ हो, अनुपम, अनोखा, निराला

अमृत = आबे-हयात, सुधा, अमर कर देने वाली वस्तु

अरुण = लाल, उगता हुआ सूरज, बाल सूर्य

अर्जित = प्राप्त किया हुआ, कमाया हुआ

अर्जित करना = हासिल करना, कमाई करना

अलंकृत = सजाया-सँवारा हुआ

अवगत कराना = जानकारी देना, बताना

अवरुद्ध = बन्द, रुका या रोका हुआ

अवसान = अंत,- समाप्ति

अवहेलना = नज़र अन्दाज़ , उपेक्षा, अवज्ञा

अवांछित = अनचाहा

असीम = जिसकी सीमा न हो, बहुत अधिक, बेहद

अस्तित्व = वुजूद, विद्यमान होना, हस्ती

आ

आकुंचन = सिकुड़न

आजीवन = पूरी ज़िन्दगी, जीवन भर

आत्मिक = आत्मा-सम्बन्धी, आत्मा का, रूहानी, मानसिक

आदि = वगै़रह

आदि = शुरू, आरंभ, ईश्वर

आदि पुरुष = पहला व्यक्ति, वंश का मूल पुरुष, आदम (अलैहि॰)

आन्तरिक = भीतरी, अन्दर का

आभार = शुक्रिया, एहसान

आभूषण = ज़ेवर, गहना

आर्थिक सहायता = माली मदद

आशातीत = आशा से अधिक आश्चर्य की

सीमा न रहना = बहुत हैरान होना

आसीन = बैठा हुआ, विराजमान

उ, ऊ

उच्च रक्त-चाप = हाई ब्लड प्रेशर

उत्कृष्ट = उन्नत, श्रेष्ठ, उत्तम

उत्तरदायित्व = ज़िम्मेदारी, जवाबदेही

उत्तरोत्तर = लगातार, क्रमशः, एक से बढ़-कर एक

उत्थान = प्रगति, ऊँचा उठना, बढ़ती

उत्पत्ति = पैदाइश, जन्म, जन्म-स्थान उत्पादन

उत्पात = उपद्रव, फ़साद, ऊधम

उत्सुकता = प्रबल इच्छा, उत्कंठा

उद्गम = उत्पत्ति-स्थान, जन्म, ऊपर उ

उपमान = मिसाल, नमूना, जिससे उ दी जाए

उपयुक्तता = औचित्य, अनुकूलता

उपाधि = लक़ब, ख़िताब, पदवी

उपास्य = माबूद, पूज्य, उपासना के य

उल्लास = ख़ुशी, हर्ष, उमंग

उषा = भोर, विहान, तड़का, भोर उजाला या लाली

उसास = गहरी और लम्बी साँस, दुख सूचक साँस

ऊबरै = उबरना, फिर से वापस आना, उबर जाए

ए

एकत्र करना = जमा करना, इकट्ठा कर

एकाधिकार = इजारादारी, एक ही व्यक्ति संस्था का अधिकार

औ

औद्योगिक = उद्योग-धन्धों से सम्बन्धि कल-कारख़ानों से सम्बन्धि

औषधि = दवा, जड़ी-बूटी

क

ग्र	=	कंठस्थ, याद
	=	ग्रहों के चलने का मार्ग
ाेस्ट	=	गोबर और कचरे का खाद
	=	हाथ
ा	=	दया या करुणा से भरा हुआ
शता	=	कठोरता
य	=	करने योग्य, करणीय, काम
ाणकारी	=	फ़लाह का ज़ामिन, जिससे भला हो।
	=	काम, कार्य
	=	कामना, वासना
ान्तर	=	समय बीतने पर, बाद का समय
छबाय	=	कुटिया बनाकर
ते	=	बुरे विचार
र्ग	=	बुराई का रास्ता, ग़लत रास्ता, बुरा मार्ग
न	=	ऊँचे ख़ानदान का, अभिजात
ा	=	बुरी संगति
न	=	नाशुक्रा, उपकार न माननेवाला
त	=	मानव-निर्मित, बनावटी
	=	खेती
ाजन	=	कोप का पात्र, ग़ुस्से का शिकार
	=	भंडार, ख़ज़ाना, धनागार
	=	ख़ाना, छत्ते में बने हुए ख़ाने
ाक रे	=	ब्रह्माण्ड-सम्बन्धी किरण
ास्त	=	टूट-फूट का शिकार
ा	=	सलाहियत, शक्ति, सामर्थ्य, योग्यता

ख

खगोलशास्त्र	=	आकाशीय पिंडों, नक्षत्रों, तारों इत्यादि का विज्ञान
ख़म ठोंकना	=	ताल ठोंकना, ललकारना
ख़िलाफ़त	=	ख़लीफ़ा का पद, इस्लामी शासन-व्यवस्था
ख़ुत्बा	=	धार्मिक अभिभाषण, धर्मोपदेश

ग

गरिमा	=	गौरव
गहि रहै	=	पकड़ ले, अपने पास रख ले
गात	=	शरीर, बदन, जिस्म
गुरुत्वाकर्षण	=	धरती की आकर्षण शक्ति
घर्षण	=	घिसावट, रगड़

घ

घात	=	दाँव-पेंच, छल, चोट, आक्रमण के लिए छिपकर की जानेवाली प्रतीक्षा
घातक	=	हानिकर, मार डालनेवाला

च

चहियत	=	चाहिए
चहुँदिश	=	चारों ओर
चुनौती	=	ललकार, चैलेंज
चूर्ण	=	चूरा, बुकनी, बारीक
चेतना-प्रवर	=	समझदार, विवेकी, चैतन्य

ज

ज़कात = एक निश्चित सीमा से अधिक धन रखने पर वार्षिक ढाई प्रतिशत अनिवार्य दान; रमज़ान महीने में ज़कात अदा करने में ज़्यादा सवाब मिलता है

जगत् = दुनिया, संसार

जगत्-सखा = पूरे संसार का मित्र, सबका मित्र

जगती = दुनिया, संसार

जगदाधार = जगत् का आधार, खुदा

जनमत = जन्म लेता है

जयन्ती = जन्म-दिवस

जस = यश, नेकनामी

जीवन-यापन = ज़िन्दगी गुज़ारना

जीवन-सामग्री = आजीविका के साधन, जीवन-साधन

जीविका = रोज़ी

ज्योति = रौशनी

ज्ञान = इल्म

ज्ञानार्जन = ज्ञान प्राप्त करना, इल्म हासिल करना

ट

टका = रुपया

ड

डारि = त्याग देना, छोड़ देना

त, थ

तकबीर = अल्लाह की बड़ाई बयान करना

तत्काल = तुरन्त, उसी समय

तत्कालीन = उस समय का, तब का

तत्पर = तैयार, आमादा

तदनुकूल = उसके अनुसार

तरावीह = रमज़ान माह में रात के स अतिरिक्त नमाज़ का आयो

तरु = पेड़, वृक्ष

तरुवर = पेड़, वृक्ष

तर्क = अनुमान, दलील

तिलावत = कुरआन-पाठ

तृप्त = संतुष्ट, अघाया हुआ

तृषित = प्यासा, बेचैन

त्राहि-त्राहि = रक्षा करो, बचाओ (दुख संकट की घड़ी में सहाय की पुकार)

त्रिकोणमिति = गणित का वह विभाग जि त्रिकोण (त्रिभुज) के कोण भुजाओं आदि का मान किया जाता है

थोथा = निरर्थक वस्तु

द

दँवरी = पकी और कटी हुई फ़सल बैलों द्वारा रौंदवाकर दाना करने की प्रक्रिया

ता	=	निपुणता, कुशलता, महारत
नीय	=	दया के योग्य (दुख की स्थिति)
ा-दृष्टि	=	नज़रे-करम, कृपा-दृष्टि
ाक	=	चिराग़
ि‍क्ष	=	अकाल
ꣳर्म	=	बुरा काम
ारिणाम	=	बुरा नतीजा
़भाव	=	बुरा असर
़वृत्ति	=	बुरी प्रवृत्ति
	=	एक मशहूर लम्बी और नर्म घास, दूर्वा
प-समूह	=	समुद्र में छोटे-छोटे स्थल-समूह

ध

हर.	=	अमानत, थाती
़ता	=	ढिठाई, गुस्ताख़ी

न

हिं	=	नष्ट होता है
ा	=	विविध, बहुत
-नदी-संजोग	=	अटूट सम्बन्ध
़टू	=	निकम्मा
संग लै	=	अपने साथ लेकर
ा	=	हमेशा, शाश्वत
ना	=	अन्त में, परिणामतः
ग	=	कुशल, दक्ष
े	=	निकट, पास

निरुत्साह	=	उदास, बिना उत्साह का
निर्मित	=	बनाया हुआ
नीर	=	आँसू, पानी
नीरस	=	रसहीन, फीका
नेतृत्व	=	अगुवाई, मार्गदर्शन, रहनुमाई
न्योछावर	=	बलिदान, कुरबान, उत्सर्ग

प

पत्तल	=	पत्ता (जिसपर खाना खाया जाता है)
परम	=	सबसे बड़ा
परम्परा	=	रीति-रिवाज, रस्म
परमाणु	=	पदार्थ का सबसे छोटा कण, जौहर
परलोक सिधारना	=	मर जाना
पराग	=	पुष्परज, फूल के बारीक कण
परवाना	=	पतिंगा
परामर्श	=	मशविरा, सलाह
परिकल्पना	=	अवधारणा, संकल्पना, धारणा
परिपूर्ण	=	हर तरह से भरा हुआ, भरा हुआ
परिमार्जित	=	साफ़ किया हुआ, त्रुटि दूर किया हुआ, सुधारा हुआ
परिवर्तन	=	बदलाव
परिश्रमशीलता	=	परिश्रम करने का स्वभाव, मेहनत करने की आदत
परिष्कृत	=	सँवारा और उत्तम बनाया हुआ
परोपकार	=	दूसरों के हित का काम

पर्यटन = इधर-उधर घूमना, देश-दर्शन और मनोरंजन के लिए देश-विदेश के दर्शनीय स्थलों की यात्रा, दूर
पर्याप्त = काफ़ी
पानी = जल, चमक, प्रतिष्ठा
पारंगत = माहिर, प्रवीण
पारावार = समुद्र
पार्थिव = पृथ्वी-सम्बन्धी, मिट्टी का बना हुआ
पुनि = पुनः, फिर
पूर्वज = पुरखा, जो पहले जन्मा हो
पैठ = पहुँच
पोषक = पालनेवाला, बढ़ानेवाला
प्रक्रिया = इस्तेमाल का तरीक़ा, विधि, प्रक्रम, अमल
प्रकृति = स्वभाव, क़ुदरत
प्रखर = तीव्र, तेज़
प्रगति-पथ = तरक्क़ी की राह
प्रजाति = नस्ल की शाख़ा, किसी जाति से निकली हुई
प्रतिभा = बुद्धि-बल, बौद्धिक शक्ति
प्रतीक्षा = इन्तिज़ार
प्रभु = पालनहार, रब
प्रफुल्लित = ख़ुश, आनन्दित
प्रशस्त = मार्गदर्शन, दिखाया गया, निर्देशित, प्रशंसित
प्रेरणा = प्रोत्साहन, काम में लगने इच्छा जगाने का काम

ब

बाँटनवारे = पीसनेवाला, बाँटनेवाला
बेपीर = बेदर्द, बेरहम, निष्ठुर
बौद्धिक = बुद्धि से सम्बन्धित
बौरा = पागल

भ

भयभीत = डरा हुआ
भाग्य-विधाता = क़िस्मत बनानेवाला
भिक्षा-वृत्ति = भीख माँगने का धन्धा
भिक्षुक = भिखारी
भुजंग = साँप
भुतहा = भूत-प्रेत से सम्बन्धित
भ्रमजाल = धोखा या सन्देह का फ
भ्रान्त = भ्रम में पड़ा हुआ, गुमरा

म

मकरन्द = फूलों का रस
मग = मार्ग, रास्ता
मधु = शहद
मनोयोग = मन लगाना, मन को ए करके किसी एक पदार्थ लगाना
मनोरथ = ख़्वाहिश, मनोकामना, म
मनुज = मनुष्य, आदमी, इनसान
मनोरम = सुन्दर, मनोहर

मता	=	अपनापन, स्नेह
स्तिष्क	=	दिमाग़, मग़ज़
हादेश	=	महाद्वीप, पृथ्वी के पाँच बड़े स्थलों में से प्रत्येक, समुद्र द्वारा आपस में कटे हुए बड़े-बड़े भू-भाग
ान-मर्यादा	=	मान-सम्मान, प्रतिष्ठा
ानव-आकृति	=	इनसानी शक्ल
ीत	=	मित्र, दोस्त
ुक्ति	=	आज़ादी, छुटकारा
ूलहिं	=	जड़ को ही
ृदुभाषी	=	मीठे बोल बोलनेवाला

य

यंत्र	=	उपकरण, औज़ार
यथोचित	=	मुनासिब, ठीक, जैसा उचित हो
यश	=	नेकनामी, ख्याति
या जगत् में	=	इस संसार में
युक्ति	=	उपाय, हिकमत
योगदान	=	देन, हाथ बटाना, सहयोग देना, किसी काम में साथ देना
योजना	=	मनसूबा

र

रक्त-वाहिका	=	रक्त ले जानेवाली नली
रजनी	=	रात
रसास्वादन कराना	=	चखाना
राग	=	प्रेम, लगाव
रोचक	=	दिलचस्प
रोम-रोम खिल उठना	=	बहुत ज़्यादा खुश होना

ल

लक़ब	=	उपाधि
लकुटिया	=	छोटी लाठी, छड़ी
लक्ष्य	=	उद्देश्य, वह मंज़िल जहाँ पहुँचना हो, गंतव्य
लखकर	=	देखकर
लघु	=	छोटा
ललाम	=	सुन्दर
लीला	=	खेल, क्रिया-कलाप, रहस्य भरा काम, विहार

व

वन्द्य	=	उपास्य, वन्दना के योग्य, इबादत के लायक़
वयोवृद्ध	=	बूढ़ा, अधिक उम्र का
वरदान	=	नेमत, प्रसन्न होकर किसी को इच्छित वस्तु देना
वर्तिका	=	दीपक की बत्ती, चिराग़ की लौ
वाक्पटु	=	बात करने में चतुर
वायुयान	=	हवाई जहाज़
वास्तुशास्त्री	=	इंजीनियर, स्थापत्यविद्, निर्माता, वास्तुकार

विकलांग = अपाहिज, अपंग

विघ्न = बाधा, रुकावट

विचलित होना = मार्ग से हट जाना, रास्ता बदलना, डिग जाना

विचित्र = अद्‌भुत, अनोखा

विद्यमान = मौजूद

विधान = नियम, क़ानून

विधि = तरीक़ा

विपदा = दुख, विपत्ति

विपुल = बहुत अधिक, अत्यधिक, प्रचुर

विरल = घनत्व की कमी, पतला

विलक्षण = अद्‌भुत, अनोखा, विचित्र

विवश = बेबस, लाचार

विविध = तरह-तरह के, मुख़्तलिफ़, विभिन्न

विवेक = समझ, भले-बुरे को समझने की बौद्धिक क्षमता

विशालकाय = बड़ी कायावाला, बड़े डील-डौलवाला, बहुत बड़े शरीरवाला

विश्वासघात = धोखाबाज़ी, अहदशिकनी, धोखा, विश्वास तोड़ना

विस्तारण = फैलाव

वेधशाला = वह स्थान जहाँ यंत्रों के द्वारा आकाशीय पिंडों, नक्षत्रों और ग्रहों इत्यादि का निरीक्षण किया जाता है।

व्यंजन = भोजन

श

शमा = मोमबत्ती, चिराग़

शालीनता = नम्रता, सदाचार

शाश्वत = नित्य, जो कभी नष्ट न हो

शिल्पकारिता = कला-कौशल, शिल्प का क

शिष्ट = सज्जन, भला

शीत-प्रदेश = ठण्डा इलाक़ा

शेष = बाक़ी

शोध = खोज, अनुसंधान, रिसर्च

श्रम-बिन्दु = पसीना

श्रमिक = मज़दूर

श्रेयस्कर = शुभदायक, अच्छा फल देनेवा

स

संकर = मिश्रित, दोग़ला

संकल्पना = अवधारणा

संकीर्णता = तंग होने का भाव, संकुचन

संचय करना = जमा करना

संचरै = जाता है, पहुँचता है

संचित = इकट्ठा किया हुआ

संयम = परहेज़गारी, रोक, नियंत्रण, धीरज

संरक्षण = हिफ़ाज़त, देख-रेख

संरचना = ढाँचा, बनावट

संस्थापक = स्थापना करनेवाला

सकल = पूरा, समूचा

सत्कर्म = अच्छा काम

त्कर्मी	=	अच्छा काम करनेवाला
दक़ए-फ़ित्र	=	रमज़ान माह में ईद की नमाज़ से पहले जान या माल के बदले ग़रीबों को दिया जानेवाला दान
दाचारी	=	अच्छे आचरणवाला, सज्जन
दुपयोग	=	बेहतर उपयोग, अच्छी तरह इस्तेमाल किया जाना
दुपाय	=	अच्छा उपाय, सीधा रास्ता
पूत	=	अच्छा पुत्र, नाम पैदा करनेवाला पुत्र
मर्पण	=	सौंपना
म्पदा	=	सम्पत्ति, वैभव, धन-दौलत
माहार	=	इकट्ठा करना
माहित	=	एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ
मुदाय	=	गरोह, फ़िरक़ा, समूह
मूल	=	जड़ सहित
म्मुख	=	सामने
म्मोहक	=	मोहित करनेवाला
मृद्ध	=	विकसित, धनी
रवर	=	सरोवर, तालाब
रस	=	रसयुक्त, मधुर
राहनीय	=	सराहना करने योग्य, प्रशंसनीय, क़ाबिले-तारीफ़
रिस	=	समान
र्वनाश	=	तबाह, सब कुछ नष्ट हो जाना
र्वांगीण	=	सभी अंगों का, पूर्णतः
र्वाधिक	=	सबसे ज़्यादा
सर्वोत्तम	=	बेहतरीन, सबसे अच्छा, सर्वश्रेष्ठ
सहपाठी	=	साथ पढ़नेवाला
सहर्ष	=	ख़ुशी से, ख़ुशी के साथ
साध	=	इच्छा, मनोकामना
साधू	=	सज्जन, साधु, विवेकी
साधे	=	साधना, वश में करना
सामान्यतः	=	आम तौर पर
सार	=	निचोड़, मूल तत्त्व
सार्वभौमिक	=	सभी जगह मौजूद, सम्पूर्ण पृथ्वी पर फैला हुआ
सिद्धि	=	काम का पूरा होना, सफलता
सीमित	=	महदूद, सीमा के अन्दर
सुजानि	=	ज्ञानी, बुद्धिमान
सुदृढ़	=	ख़ूब मज़बूत
सुभाय	=	स्वभाव
सुमति	=	अच्छे विचार
सुशोभित	=	अच्छी तरह सजा हुआ, सुन्दर
सुस्वादु	=	अच्छे स्वादवाला, लज़ीज़
सुहाग	=	सौभाग्य, प्यार
सूप	=	अनाज से भूसा अलग करने का पात्र
सूरमा	=	बहादुर, वीर
सृजनहार	=	बनानेवाला
सृष्टि	=	रचना, तख़लीक़ (सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड)
सृष्टिकर्त्ता	=	रचयिता, ख़ालिक़, ईश्वर
सों	=	से
सोपान	=	सीढ़ी

सौभाग्य	=	खुशक़िस्मती
स्वचालित	=	अपने आप चलनेवाला
स्वस्थ	=	तन्दुरुस्त, सेहतमन्द, नीरोग
स्वामी	=	मालिक
स्वाध्याय	=	व्यक्तिगत रूप से किसी विषय का गहन अध्ययन, निजी मुताला
स्वास्थ्य	=	तन्दुरुस्ती
स्वास्थ्यवर्द्धक	=	स्वास्थ्य बढ़ानेवाला, स्वास्थ्य प्रदान करनेवाला
स्वेच्छा	=	अपनी इच्छा
स्रवन	=	कान

ह

हस्तक्षेप	=	दख़लअन्दाज़ी
हास-विलास	=	अठखेलियाँ, हँसी-खेल
हृदय-व्योम	=	हृदय रूपी आकाश
ह्रास	=	गिरावट, पतन
ह्वै	=	होकर